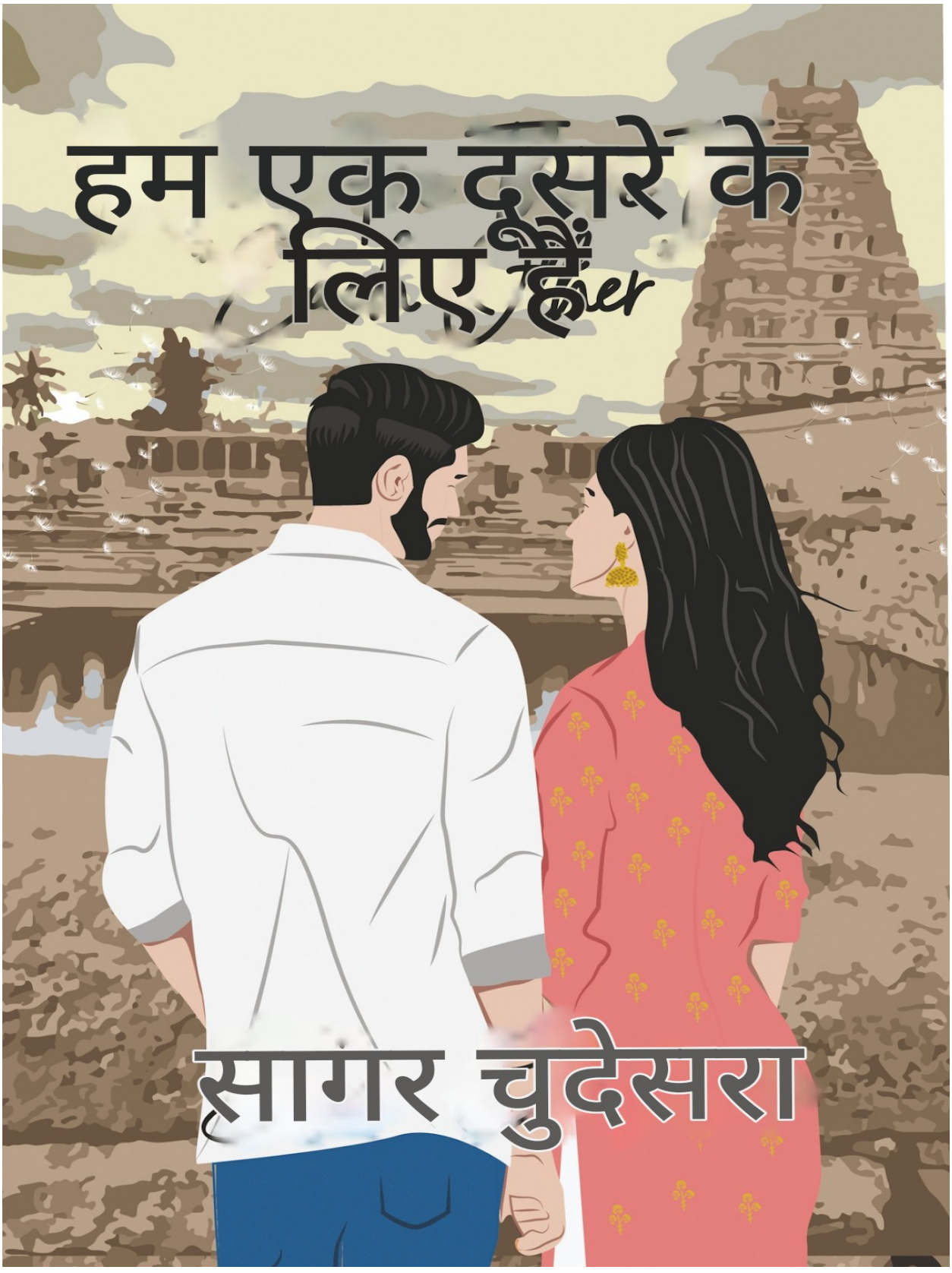
हम एक दूसरे के लिए हैं
सागर चुदेसरा

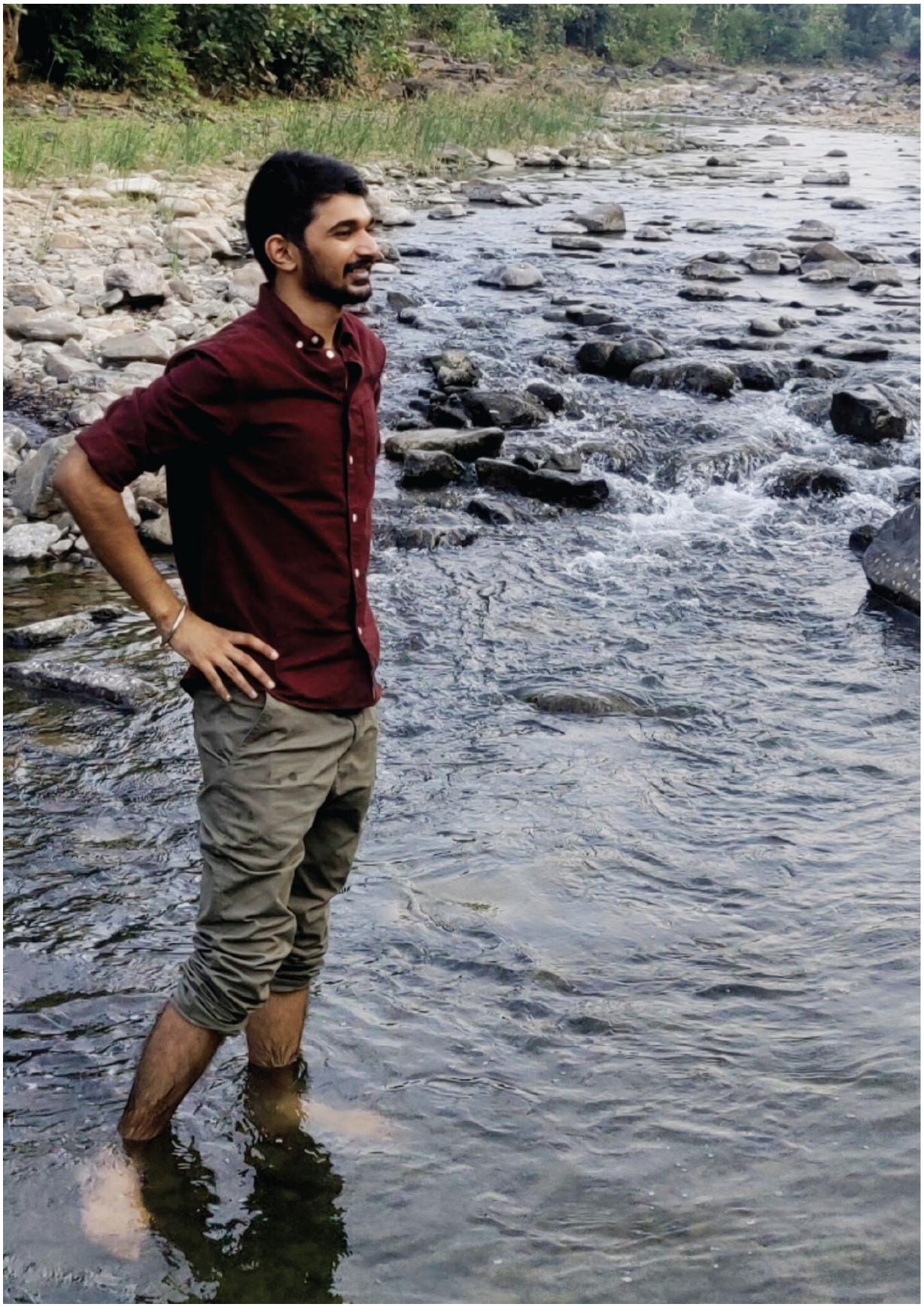

लेखक के बारे में

हे दोस्तों, मेरी पहली किताब, 'वी आर देयर फॉर ईच अदर' में आपका स्वागत है। किताब के पिछले पन्ने पर जो तस्वीर है, वो मैं ही हूँ और मेरा नाम सागर चुडेसरा है। मैं मुंबई से हूँ और मेरी उम्र 24 साल है। मेरा जन्मदिन 30 नवंबर को है (मैं यहाँ इसलिए बता रहा हूँ ताकि आप मुझे जन्मदिन की शुभकामनाएँ दे सकें, हा हा)। अपने बारे में यहाँ लिखना थोड़ा अजीब लग रहा है, लेकिन मैं कोशिश करूँगा। मैं बहुत सारी किताबें खरीदता और पढ़ता हूँ और कुछ लिखने की भी कोशिश करता हूँ। मेरी यह आदत है कि जब भी मैं किसी नए शहर या कस्बे में जाता हूँ, तो वहाँ से एक किताब ज़रूर खरीदता हूँ क्योंकि वो किताब मेरे लिए एक यादगार बन जाती है।

मैं दक्षिण भारतीय फिल्मों का शौकीन हूं और मैंने मलयालम, तमिल, तेलुगु और कन्नड़ की अधिकांश प्रसिद्ध और बेहतरीन फिल्में देखी हैं। मैं आप सभी को दक्षिण भारतीय फिल्में देखने की पुरजोर सलाह देता हूं क्योंकि हमारे देश की सबसे अच्छी फिल्में यहीं बनती हैं।

मैं भारत भर में वडोदरा, उदयपुर, जयपुर, दिल्ली, चंडीगढ़, हिमाचल, ऋषिकेश, हम्पी आदि कई स्थानों की सड़क यात्राएं करता हूं और किसी दिन मैं गुजरात में किसी शांत जगह पर स्थायी रूप से बसने की इच्छा रखता हूं।

अपने खाली समय में, मैं अपनी बिल्डिंग की छत पर जाकर अपने दोस्तों से बातें करता हूँ और वहीं मुझे सुकून मिलता है। इसके अलावा, मैं नियमित रूप से जिम जाता हूँ और आप मुझे ध्यान करते हुए भी पाएंगे।

मेरे बारे में और अधिक जानने के लिए, आप मुझसे इन माध्यमों से जुड़ सकते हैं:

इंस्टाग्राम @sagarkibaatein (मैं सभी को व्यक्तिगत रूप से जवाब देता हूँ)

आप फेसबुक पर मेरे आधिकारिक पुस्तक समूह में भी शामिल हो सकते हैं:

सागर चुडेसरा द्वारा निर्मित समूह का नाम है "हम एक दूसरे के लिए मौजूद हैं"

मैंने टेलीग्राम पर एक चैनल भी बनाया है, t.me/wearethereforeachother

हम आपके लिए मौजूद हैं

"एक दूसरे"

Sagar Chudesara

Copyright © Sagar Chudesara
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी भाग फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक विधियों सहित किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से पुनरुत्पादित, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, सिवाय आलोचनात्मक समीक्षाओं में शामिल संक्षिप्त उद्धरणों और कॉपीराइट कानून द्वारा अनुमत कुछ अन्य गैर-व्यावसायिक उपयोगों के मामलों को छोड़कर। अनुमति अनुरोधों के लिए, नीचे दिए गए पते पर प्रकाशक को "ध्यान दें: अनुमति समन्वयक" लिखकर भेजें।
आईएसबीएन: 978-93-90465-01-9 (पेपरबैक)
पीएसआईएन: 91-2730-1406-0-02
यह एक काल्पनिक रचना है। जब तक अन्यथा उल्लेख न किया जाए, इस पुस्तक में वर्णित सभी नाम, पात्र, व्यवसाय, स्थान, घटनाएँ और प्रसंग या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त किए गए हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति या वास्तविक घटना से समानता केवल संयोगवश है।
इस पुस्तक का निर्माण और प्रबंधन सागर चुडेसरा द्वारा किया गया है।
आप उन्हें sagarchudesar@gmail.com पर लिख सकते हैं |
www.wearethereforeachother.com
मुद्रित, प्रकाशित और जिल्दबंद
Sagar Chudesara.
पहला संस्करण 2020 में मुद्रित किया गया।
Sagar Chudesara
मलाड पूर्व,

Mumbai - 400 097.

यह पुस्तक मेरे माता-पिता को समर्पित है।
जो बिल्कुल भी परिपूर्ण नहीं हैं, लेकिन उन्होंने मुझे एक बेहतर इंसान बनाने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ी।
धन्यवाद मम्मी और पापा...!

पावती

आभार व्यक्त करते हुए और पाठकों के लिए एक संदेश

सोशल मीडिया और सूचनाओं की निरंतर बौछार के इस बढ़ते दौर में, जहाँ लोगों के पास अपने प्रियजनों की आँखों में देखने तक का समय नहीं है, एक किताब पढ़ना बहुत हिम्मत और लगन का काम है। इसलिए सबसे पहले, मेरे पाठक, आपको धन्यवाद। तुम हो तो हम हैं और मैं तुमसे प्यार करता हूँ।

किताब लिखना एक ऐसा सफर रहा है जिसने मुझे एक इंसान के तौर पर पूरी तरह बदल दिया। यह सफर कुछ लोगों और प्रेरणाओं के बिना संभव नहीं था; मैं उन सभी का आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं इनके प्रति आभारी हूँ:

ब्रह्मांड, पेड़-पौधे, ताजी हवा, समुद्र, पहाड़, चाय, ए.आर. रहमान का संगीत और आप

मेरे माता-पिता, जिन्होंने हमेशा मुझे खुद को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता दी और मुझे ज़मीन से जोड़े रखा। जो मुझे कई रोड ट्रिप्स पर ले गए और जब मैंने इतनी सारी किताबें खरीदीं तो उन्होंने कभी मुझे "ना" नहीं कहा।

मैं शायद किसी दिन उनके बारे में एक कहानी जरूर लिखूंगा।

मेरे छोटे भाई शुभ को, जो हमेशा मेरे साथ रहे, मेरी इतनी सारी अच्छी तस्वीरें खींचे और अब मेरे बिजनेस पार्टनर के रूप में भी मेरा साथ दे रहे हैं।

मेरे गुरु, श्री संदीप महेशवरी, जिन्होंने मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर किया।

मेरी दोस्त, मानसी पटेल। मानसी के बिना यह किताब संभव नहीं होती, क्योंकि उन्होंने ही मेरी चार हस्तलिखित डायरियों से इस किताब को टाइप किया है (मेरी खराब लिखावट के लिए क्षमा करें, मानसी)।

मेरी दोस्त शैलि पाडिया, जो हमेशा मेरे साथ रही और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, छत पर हमारे बीच हुए कई संवाद इस पुस्तक के पीछे प्रेरणा बने।

मेरे मित्र, श्री विशाल सधारिया, जिनके साथ मैं अपने गहरे से गहरे डर और असुरक्षाओं को साझा कर सकता हूँ। आप मेरे जीवन में एक बड़े भाई की तरह हैं जो हमेशा मुझे सही राह दिखाते हैं।

मेरी मित्र, डॉ. मीरा नागरिया, जिन्होंने इस पुस्तक के प्रारंभिक शोध के दौरान मेरी बहुत मदद की।
मेरी हैदराबादी दोस्त, प्रथ्युषा साल्वा, जो मेरी शुरुआती रीडर थीं और जिन्होंने मुझे बहुत आत्मविश्वास दिया। दक्षिण भारतीय फिल्मों और किताबों पर हुई हमारी सभी बातचीत को याद करते हुए।
श्री अल्फोंसो पुथर्न, मलयालम फिल्म 'प्रेमम' के लेखक और निर्देशक। इस फिल्म ने मेरी जिंदगी बदल दी और मुझे एक बेहतर लेखक बना दिया। महोदय, मैं आपकी अगली फिल्म का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूँ।
साईं पल्लवी मैम, अगर आप इसे पढ़ रही हैं, तो मैं आपको बताना चाहती हूं कि मैं आपकी सबसे बड़ी प्रशंसक हूं और प्रेमम फिल्म में मलार का किरदार निभाने के लिए आपका धन्यवाद।
Also Super Grateful to my Friends and Well Wishers: Harsh Kubadia, Mehul Thakkar, Nainy Katyal, Darshit Gupta, Aditi Sanghvi, Jaideep Goud, Prachi Jagtap, Mayank Jain, My Cricket Group (Swapnil Bhai, Keyur Bhai, Chetan Uncle, Yash, Kunal, Jayant, Arjun), My Gym Trainers (Austin Sir and Umesh Sir)
मेरे कवर डिज़ाइनर, मुकुंद को इतने शानदार कवर के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। आप उन्हें इंस्टाग्राम पर @__.dot2details.__ पर फॉलो कर सकते हैं।
अगर मैंने किसी का नाम छोड़ दिया हो तो क्षमा करें। एक बार फिर उन सभी को धन्यवाद जिन्होंने मेरे सपने को साकार किया। चलिए भगवान का नाम लेकर शुरू करते हैं कहानी...

Agar Aap Apni Kahani Ke Ram aur Sita Na Ban Paaye to Chalega, Lekin aur ki Kahani ke Hanuman Jarur Banna Kyuki Hanuman ke Bina, Ram aur Sita ki Kahaani bhi Adhuri Rehti.

Jai Bolo Hanuman Ki..!

sjeet

अध्याय 1

15 नवंबर 2018,
मलाड पूर्व,
Mumbai - 097

प्रेम और मित्रता किसी भी कहानी को महान बनाने के लिए आवश्यक तत्व हैं। तो चलिए, सबसे पहले मित्रता से शुरुआत करते हैं।

मलार और सागर।

अगर ये दोनों ठीक 24 साल पहले एक ही इमारत, गणेश भवन हाउसिंग सोसाइटी में पैदा न हुए होते, तो यह कहानी शुरू ही न होती। मलार का जन्म पहले 1994 में इमारत के ए विंग में हुआ था, और दो साल बाद, 1996 में सागर का जन्म इमारत के बी विंग में हुआ था।

अब 24 साल बाद, मलार और सागर दोस्त हैं, और उनके रिश्ते की सबसे अच्छी बात यह है कि वे एक-दूसरे के प्रति सच्चे हैं। उनके बीच कोई विरोधाभास या भ्रम नहीं है। वे दोनों अच्छी तरह जानते हैं कि वे एक-दूसरे के लिए क्या मायने रखते हैं, और जब वे अपनी इमारत की छत पर साथ होते हैं तो कभी एक-दूसरे को बदलने की कोशिश नहीं करते।

इमारत की छत मलार और सागर के लिए नायक की भूमिका निभाती है, और यह हमारी कहानी की भी नायिका है। उस दिन उन्हें वहीं मिलना था। शाम के 6 बज रहे थे।

सागर को मलार का संदेश मिला।

"कितना समय लगेगा? मैं तो ऊपर ही हूँ?" सागर ने संदेश पढ़ा लेकिन जवाब नहीं दिया।

इसके बजाय, वह अपने घर से निकला और अगले 129 सेकंड में छत पर पहुँच गया।

मलार कोने में खड़ी होकर नीचे देख रही थी कि कैसे रिक्शा, बाइक, कार, बस और लोग बस भाग रहे थे।

मैं अब जीवन में और भागना नहीं चाहता।

सागर जाकर उसके बगल में खड़ा हो गया। अगले कुछ मिनटों तक दोनों ने कुछ नहीं बोला। उन्होंने बस अपनी आँखों से ही बात की।

पंद्रह मिनट बीत गए, और उनकी दोस्ती के इतिहास में पहली बार उनके बीच असहजता छा गई। बिना कुछ कहे, वे अपनी छत पर बने पानी के टैंक पर एक-दूसरे के बगल में जाकर बैठ गए। वहाँ से वे केवल डूबते सूरज को देख सकते थे।

मलार जानती थी कि उसे उस दिन बातचीत शुरू करनी होगी। सूरज डूब चुका था; आसमान नारंगी और नीले रंग के मिश्रण में बदल गया था। पक्षी अपने पेड़ों पर लौट रहे थे, और इसी बीच मलार ने पूछा, "उसका जवाब क्या था...?"

सागर को उसके इस सवाल का इंतज़ार था। उसने उसकी तरफ देखा और कहा, "उसने कहा कि उसे मुझसे ऐसी उम्मीद नहीं थी। वह मुझे सिर्फ एक दोस्त मानती थी और हमारे बीच कुछ भी नहीं हो सकता था। उसने मुझसे यह सब खत्म करने का अनुरोध भी किया; नहीं तो वह रूपाली दीदी को सब कुछ बता देगी।"

मलार को ऐसे ही जवाब की उम्मीद थी क्योंकि यह स्पष्ट था। उसने कहा, "मैंने तुमसे कहा था। उसे इस तरह का प्रेम पत्र भेजना अभी बहुत जल्दबाजी थी।"

सागर क्रोधित हो गया और ऊँची आवाज़ में बोला, "देखो मलार, अब कुछ नहीं किया जा सकता, पत्र भेजा जा चुका है और उसने जवाब भी दे दिया है। इसलिए मुझे यह मत बताओ कि अभी देर हो चुकी है या जल्दी।"

मलार ने अब ऊंची आवाज में कहा, "अगर तुम ऐसा सोचते हो तो उसे भूल जाओ और आगे बढ़ो। किसी को प्यार करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। समझे?"

"मलर, तुम्हारे लिए ये सब कहना बहुत आसान है क्योंकि तुम्हारे पास निमित है जिसने पिछले सात सालों से हर दिन तुमसे प्यार किया। लेकिन मेरे साथ मामला अलग है। मैं कॉलेज के दिनों की उस लड़की को ढूंढ रहा था जिससे मुझे प्यार था। उससे आगे बढ़ने और देवकी से प्यार करने में मुझे पांच साल लग गए, लेकिन उसने भी मुझे साफ-साफ ठुकरा दिया।"

"सागर, कॉलेज में तुम्हारी गर्लफ्रेंड के साथ जो हुआ वो तुम्हारे बस में नहीं था। असल में, तुम ये भी तय नहीं कर सकते कि देवकी तुम्हारा प्यार स्वीकार करेगी या नहीं, ऐसी बातें हमारे बस में नहीं होतीं।"

सागर आगे बहस नहीं कर सका क्योंकि मलार की बात शत प्रतिशत सही थी। दोनों फिर चुप हो गए।

मलार को भी कुछ मिनट पहले कही अपनी बात को स्वीकार करना होगा। उसे अपने कहे पर अमल करना होगा, "हम ऐसी चीजों को नियंत्रित नहीं कर सकते।" वह जानती थी कि पिछले एक साल से उसके जीवन में जो कुछ घट रहा था, उसे वह नियंत्रित नहीं कर सकती थी।
उसने गहरी सांस ली और सागर को यह खबर सुनाई। "मैंने पिछले महीने निमित से रिश्ता तोड़ लिया।"
अब तक आकाश पूरी तरह से काला हो चुका था और चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था। लेकिन बादलों के बीच कहीं कोने में, चंद्रमा अपने सबसे सुंदर रूप में सागर और मलार को देखकर मुस्कुरा रहा था।

अध्याय दो

विनाश के बिना सृजन संभव नहीं। पुरानी, दरारों से भरी इमारत को गिराए बिना आप कोई नई बहुमंजिला इमारत नहीं बना सकते। दिल टूटना, स्वास्थ्य समस्याएं, दूर का रिश्ता, मृत्यु, विनाश - ये सब ज़रूरी हैं; वरना हमारी कहानी और इस पूरी दुनिया की कहानी नीरस और एक जैसी हो जाएगी। हम ऐसा नहीं चाहते, है ना? सागर को क्यों ठुकराया गया और उसने वह पत्र क्यों भेजा, यह जानने के लिए हमें उस पल में वापस जाना होगा जहाँ से सागर की कहानी शुरू हुई थी। जूनियर कॉलेज के दूसरे साल के पहले दिन सागर ने प्रिया को पहली बार देखा था। यह उनकी कक्षा के बाहर हुआ था, और बॉलीवुड फिल्मों के सागर पर पड़े प्रभाव के कारण, वह उसे अपने दिमाग और दिल से निकाल ही नहीं पा रहा था।

प्रिया के सामने के दो दांतों के बीच थोड़ा सा गैप था। सागर को यह बहुत प्यारा लगता था। प्रिया के बाल घुंघराले और घने थे, और सागर उनके बालों में उंगलियां फेरना चाहता था। प्रिया कॉलेज की पहली बेंच पर बैठती थी, और सागर आखिरी बेंच पर। अब मैं आपको यह बताकर बोर नहीं करूंगा कि वे दोनों कैसे करीब आए। सागर और प्रिया उसी तरह करीब आए जैसे कॉलेज जाने वाले दो युवा छात्र प्यार में पड़ते हैं। उनके लिए वासना और प्यार में कोई खास फर्क नहीं था। पहली मुलाकात के एक महीने के अंदर ही, पहली बेंच पर बैठने वाली प्रिया आखिरी बेंच पर बैठ गई। उनका दिन कॉलेज की क्लास बंक करने और हर महीने की पहली तारीख को पास के जिलेटो आइसक्रीम पार्लर जाने में बीतता था। क्योंकि हर महीने की पहली तारीख को जिलेटो उस महीने का खास फ्लेवर देता था। उनका दिन कैंटीन में एक-दूसरे के बगल में बैठकर कामुक उपन्यास पढ़ने और सस्ते फ्राइड राइस खाने में बीतता था।

बरसात के दिनों में वे एक-दूसरे का हाथ थामे घूमते थे। सागर ने प्रिया को प्रपोज़ करते हुए कहा, "मैं तुम्हारे साथ किताबें पढ़ते और आइसक्रीम खाते हुए अपनी बाकी ज़िंदगी बिताना चाहता हूँ। क्या तुम मेरी साथी बनोगी?" और इसी बीच उन्होंने अपना पहला चुंबन साझा किया।

उस पल के बाद, उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। सागर और प्रिया ने पहली बार एक धूप वाले दिन रिक्शा में बैठकर एक-दूसरे को प्यार किया। शुरुआत एक चुंबन से हुई और फिर वे एक-दूसरे के हाथों में खो गए। रिक्शा अपनी मंजिल पर पहुँच गया, लेकिन उनका प्यार जारी रहा।

अपने-अपने घर पहुँचकर सागर और प्रिया सीधे वॉशरूम गए, अपनी पैंट उतारी, कान में इयरफ़ोन लगाए और स्काइप पर एक-दूसरे से बात करने लगे। थोड़ी देर बाद, दोनों ने एक-दूसरे की आँखों में देखते हुए हस्तमैथुन किया। सागर पहले स्खलित हुआ और प्रिया भी कुछ देर बाद उसके पीछे स्खलित हो गई।

दोनों एक-दूसरे की चरम सीमा को देखकर मुस्कुराए। उस दिन उन्होंने अपनी मानसिक पवित्रता खो दी।

युवा प्रेम की सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें आप शारीरिक और भावनात्मक रूप से खुद को रोक नहीं सकते।

कैंटीन में बातचीत के दौरान, उन्होंने एक-दूसरे को अपने राज़ बता दिए। सागर ने प्रिया को बताया कि उसे कभी-कभी अपना दुबला-पतला शरीर पसंद नहीं आता था। प्रिया ने बताया कि जब उसकी माँ उसे बिकिनी वैक्स के लिए ले जाती थी, तो उसे असहनीय दर्द होता था, क्योंकि उसकी माँ सोचती थी कि लड़कियों के शरीर पर बाल नहीं उगने चाहिए। सागर पर जीवन में कुछ बड़ा करने का दबाव था क्योंकि उसके माता-पिता बहुत सफल थे, और प्रिया के भाई को घर में ज़्यादा सुविधाएँ मिलती थीं क्योंकि वह लड़का था। सागर के नितंबों पर खिंचाव के निशान थे, और प्रिया को मासिक धर्म के दौरान भंडारगृह में सोना पड़ता था क्योंकि उसके धर्म में, मूर्तियों को छूना या मासिक धर्म के दौरान रसोई में जाना मना था।

प्रिया का 17 वां जन्मदिन था। सागर उसके लिए काले इयरफ़ोन लाया था। दोनों आखिरी बेंच पर बैठे एक-दूसरे की आँखों में देख रहे थे। आखिरी लेक्चर खत्म हुआ। प्रिया ने कहा, "मेरे माता-पिता और भाई शहर से बाहर गए हैं।" सागर ने उसे आँख मारी।

दोनों आखिरी बेंच से उठे और बाहर की ओर चल दिए। जैसे ही वे कक्षा के दरवाजे के पास पहुँचे, प्रिया के हाथ से उसका पहचान पत्र गिर गया। सागर ने उसे उठाया और वापस प्रिया के गले में पहना दिया। पहचान पत्र पहनाते समय उनके शरीर इतने करीब आ गए कि सागर की

छाती और प्रिया के स्तन आपस में छू गए। वे एक-दूसरे के होठों को देखते रहे और उनके बीच की दूरी कम होती जा रही थी।
एक तेज महिला की आवाज ने उनकी तंद्रा भंग कर दी।
"तुम दोनों कॉलेज परिसर में क्या कर रहे हो?" सागर तुरंत स्थिति को समझ गया। डर के मारे वह अपनी जान बचाने के लिए भागा। भागते समय वह प्रिया का हाथ पकड़ना भूल गया। शिक्षिका ने प्रिया को पकड़ लिया और विडंबना यह है कि उन्होंने प्रिया के पहचान पत्र से उसकी जानकारी पढ़ ली।

अध्याय 3

पांच साल बाद (2018)

जीवन में कुछ सवालों के जवाब नहीं होते। जन्मदिन पर लोग केक क्यों काटते हैं, इसका भी कोई जवाब नहीं है। सब लोग ऐसा करते हैं; इसीलिए लोग उनका अनुकरण करते हैं।

इसका कोई जवाब नहीं है कि लोग खाना खाने से पहले तस्वीरें क्यों खींचते हैं और उन्हें स्नैपचैट पर सभी को भेज देते हैं।

साथ ही, इस बात का भी कोई जवाब नहीं है कि सागर ने पांच साल पहले प्रिया के गले में वह पहचान पत्र क्यों डालने की कोशिश की थी।

उस दिन के बाद सागर ने प्रिया को फिर कभी नहीं देखा, और उसकी अनुपस्थिति से उबरने में उसे पांच साल लग गए।

शिक्षक ने प्रिया के माता-पिता को सूचित कर दिया था। अगले दिन, उसका विदाई प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया। सागर उसे ढूंढने उसके भवन में गया, लेकिन चौकीदार ने उसे बताया कि उसका परिवार गुजरात चला गया है। उसका फोन बंद था और उसका फेसबुक अकाउंट निष्क्रिय कर दिया गया था।

जब हम तैरना सीखते हैं, तो हमें डूबने से बचाने के लिए एक सहारा दिया जाता है। प्रिया सागर के लिए वही सहारा थी। वह प्रिया की मदद से जीवन की नदी में तैरना सीख रहा था। लेकिन एक दिन, वह सहारा अचानक गायब हो गया, और सागर डूबने लगा। सागर प्रिया के लिए ही कॉलेज गया था। उसने भी कॉलेज छोड़ दिया और अपने माता-पिता के ब्यूटी पार्लर के व्यवसाय में शामिल हो गया।

असल में, सागर को कॉमर्स में कोई दिलचस्पी नहीं थी और उसे इसके बारे में कुछ भी पता भी नहीं था। उसने कॉमर्स को यूं ही चुन लिया था क्योंकि उसके आसपास के सभी लोग उसे ऐसा करने के लिए कह रहे थे। प्रिया के जाने के बाद, सागर को एहसास हुआ कि कॉलेज छोड़कर पैसे कमाना ही सबसे अच्छा रहेगा। अगर सागर ने कॉलेज नहीं छोड़ा होता, तो यह कहानी कभी लिखी ही नहीं जाती।

पांच साल बीत गए, सागर ने अपने माता-पिता के साथ कड़ी मेहनत की और खूब पैसा कमाया, और आखिरकार उसका दिल भी ठीक हो गया। उसने प्रिया के साथ साझा की गई सभी चैट और तस्वीरें डिलीट कर दीं। उसके लिए यह एक पूर्ण विराम था। लेकिन पिछले पांच सालों में जो सबसे अच्छी बात हुई, वह यह थी कि उसका मलार और हर्ष से फिर से संपर्क हो गया।

मलार और सागर एक ही इमारत में साथ-साथ बड़े हुए और स्टॉप एंड पार्टी, लगोरी, बैडमिंटन, डॉग एंड द बोन जैसे आउटडोर गेम खेलते थे, जिनकी जगह आजकल कैंडी क्रश, पबजी और इंस्टाग्राम ने ले ली है।

जो लोग इस दुनिया से चले गए हैं, उन्होंने कहा है कि जो दोस्त साथ-साथ बड़े होते हैं, पसीना बहाते हैं, हँसते हैं, मुंहासे और जवानी के सारे पल साझा करते हैं, वे कभी अलग नहीं हो सकते। सागर और मलार के साथ भी ऐसा ही था।

स्कूल खत्म होने के बाद संपर्क न होने के बावजूद, छत पर मिलते ही उनके बीच की दूरी कुछ ही मिनटों में दूर हो गई। सागर ने प्रिया के बारे में सब कुछ मलार को बताया। मलार ने उसे इस सदमे से उबरने में मदद की। वे दोनों हर सप्ताहांत छत पर सूर्यास्त देखने और मलार की बनाई चाय पीने के लिए मिलते थे। मलार सागर का सहारा थी और सागर उसका साथी।

दूसरी ओर, सागर का अपने स्कूल के दोस्त हर्ष से भी फिर से संपर्क हो गया।

हर्ष और सागर ने अपनी किशोरावस्था के शुरुआती साल क्रिकेट खेलते हुए बिताए। वे दोनों एक ही स्कूल और एक ही कक्षा में पढ़ते थे और अक्सर आखिरी बेंच पर बैठकर अपने पसंदीदा क्रिकेटर एम.एस. धोनी, अपनी प्रेमिकाओं और उन वेबसाइटों के बारे में बातें करते थे जहाँ से वे मुफ्त फिल्में और एचडी पोर्न क्लिप डाउनलोड कर सकते थे।

हम सभी एक ऐसे दोस्त की तलाश करते हैं जिसके साथ हम खुलकर अपने असली रूप में रह सकें। हर्ष सागर के लिए वही दोस्त था।

दसवीं की बोर्ड परीक्षा पास करने के बाद हर्ष और उसका परिवार मलाड से वसई चले गए, और सागर से उसका संपर्क धीरे-धीरे कम होता चला गया। वे एक-दूसरे को भूले नहीं थे, बल्कि अपने-अपने जीवन में व्यस्त हो गए थे।

पिछले साल 2017 में सागर को हर्ष से व्हाट्सएप पर एक संदेश मिला, जिसमें लिखा था, "कमीने, बाद में अपनी पोर्न डाउनलोड कर लेना और फिर नीचे आना।"
सागर की मुलाकात हर्ष से चार साल बाद हुई। कुछ भी नहीं बदला था। वह मलाड में स्थायी रूप से लौट आया था, क्योंकि उसके परिवार ने अपना एक फ्लैट खरीद लिया था। उस दिन दो घंटे में ही उन्होंने चाय पर अंतहीन बातचीत करते हुए अपनी दोस्ती के चार बीते साल जी लिए। इस तरह उनका फिर से मिलन हुआ।
और इस तरह सागर प्रिया की अनुपस्थिति से उबर गया, लेकिन एक चीज अभी भी बाकी थी।

अध्याय 4

कहावत है, "प्यार आपकी ज़िंदगी में तब लौट आता है जब आपको इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं होती।" सागर भी कुछ ऐसा ही था। वह ज्यादा सोचता नहीं था। अगर उसे कोई पसंद आ जाती, तो वह उससे प्यार कर बैठता था; उसके लिए बीच का कोई रास्ता नहीं था।

जनवरी 2018 की बात है, सागर अपनी एक सहकर्मी रूपाली की सगाई में शामिल होने गए थे। सागर उन्हें दीदी कहकर बुलाते थे क्योंकि वे दोनों एक ही क्षेत्र में काम करते थे।

इसी अवसर पर सागर ने पहली बार देवकी को देखा था।

सागर, रिंग सेरेमनी के लिए तय समय से एक घंटा पहले ही कार्यक्रम स्थल पर पहुँच गया। जब तक मुख्य कार्यक्रम शुरू हुआ, तब तक वह ब्लू लैगून के वेलकम ड्रिंक के चार गिलास गटक चुका था। उसे पेशाब करने की ज़रूरत महसूस हुई। वह जेंट्स टॉयलेट में गया। वहाँ कोई नहीं था, इसलिए सागर ने जोश में आकर अपनी ज़िप खोली और जो करना था वो कर दिया। उसने "बम डिग्गी डिग्गी बम बम" नाम का एक हिंदी गाना गाना शुरू कर दिया, जिसे मलार ने उसे सुनने के लिए मजबूर किया था।

उसका पेशाब रुक गया, लेकिन इससे पहले कि वह अपना लिंग वापस अंदर डाल पाता और ज़िप बंद कर पाता, एक लड़की शौचालय में दाखिल हो गई।

उसने सागर को देखा और कहा, "ओह, सॉरी।"

सागर ने किसी तरह ज़ोर से "फक" कहा और ज़िप बंद करने की कोशिश में उसका प्राइवेट पार्ट कहीं अटक गया। लड़की तो जा चुकी थी, लेकिन सागर दर्द से कराह रहा था और इतना शर्मिंदा था कि उसने ठान लिया कि वो कभी भी वेलकम ड्रिंक नहीं पिएगा।

बाद में, जब वह हॉल में दाखिल हुआ, तो वही लड़की उसकी ओर आ रही थी। इस बार सागर ने उसे ध्यान से देखा। उसकी सांवली त्वचा पर उसकी गहरी आंखें बेहद आकर्षक लग रही थीं। उसने सुनहरे रंग का गाउन पहना था जो उस पर बेहद खूबसूरत लग रहा था। वह आत्मविश्वास से भरी हुई चल रही थी, मानो पूरी दुनिया को जीत ले, लेकिन चुपचाप उसने सागर का दिल जीत लिया।

वह सागर की ओर बढ़ी और बोली, "वहां जो कुछ भी हुआ उसके लिए मुझे बहुत खेद है।"

सांस लिए बिना, उसने बोलना जारी रखा, “अरे यार, मुझे जल्दी थी, और उस बेवकूफ लड़की का टॉयलेट बंद था। इसलिए कोई और चारा न होने पर, मैं तुम्हारे टॉयलेट में घुस गई। ओह! मुझे माफ़ करना। मेरा मतलब लड़कों के टॉयलेट से है, तुम्हारे टॉयलेट से नहीं। धत् तेरे की, माफ़ करना!”

अब सागर मुस्कुरा रहा था और लड़की की गहरी आँखों में देख रहा था। सागर ने जवाब दिया, "कोई बात नहीं, शांत रहो।"

लड़की ने राहत की सांस ली। “वैसे, मैं देवकी हूँ, रूपाली दीदी की बहन,” उसने सागर को हाथ बढ़ाते हुए कहा। “मैं सागर हूँ, रूपाली दीदी का दोस्त,” उसने जवाब दिया।

सागर ने देवकी का हाथ थाम लिया। हाथ मिलाना पाँच सेकंड तक चला, लेकिन उन पाँच सेकंड में ही सागर को फिर से देवकी से प्यार हो गया। उसे देवकी की सुंदरता इतनी अद्भुत लगी कि उसे शब्दों और आँखों से भी बयान नहीं किया जा सकता था।

अगले आठ महीने कोशिश करने में ही बीत गए।

देवकी और सागर ने इंस्टाग्राम, स्नैपचैट और फेसबुक पर एक-दूसरे को फॉलो करना शुरू कर दिया और व्हाट्सएप पर बातचीत करने लगे। देवकी सागर से वैसे ही बात करती थी जैसे वह अपने सभी दोस्तों से करती थी, चाहे वो लड़की हो या लड़का। लेकिन सागर सोशल मीडिया के ज़रिए उसे प्रभावित करने की कोशिश कर रहा था, जिसमें वह बुरी तरह नाकाम रहा।

देवकी एमबीए के दूसरे साल के लिए पुणे गई और अपनी जिंदगी में कुछ नया करने में व्यस्त थी, लेकिन दूसरी तरफ सागर उसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लगातार तस्वीरें या संदेश भेजता रहता था। वह कुछ संदेशों का जवाब देती थी, लेकिन धीरे-धीरे जवाब देना बंद हो गया। ऐसा इसलिए नहीं था कि वह सागर को नजरअंदाज कर रही थी, बल्कि इसलिए कि वह पढ़ाई में बहुत व्यस्त थी।

संदेश भेजने से बात नहीं बनी, इसलिए सागर ने इंस्टाग्राम पर वही सामग्री पोस्ट करना शुरू कर दिया जो देवकी नियमित रूप से पोस्ट करती थी, जैसे कविताएँ, यात्रा की तस्वीरें या रूमी के उद्धरण। लेकिन यहाँ भी उसे देवकी से "हैलो" और "गुड मॉर्निंग" के अलावा कोई और जवाब नहीं मिला।

सागर बेताब दिख रहा था। उसे लगा कि प्रिया की तरह यहाँ भी वह देवकी के साथ जल्दी ही रिश्ते में आ जाएगा।
उसने मलार और हर्ष के साथ पूरी जानकारी साझा की और उनसे पूछा कि देवकी को कैसे प्रभावित किया जाए।
हालांकि हर्ष और मलार एक दूसरे को नहीं जानते थे, फिर भी उन्होंने एक ही जवाब दिया। सागर, अगर उसे तुममें दिलचस्पी है तो वह भी तुम्हें पसंद करेगी। इतनी कोशिश मत करो। लेकिन सागर ने अपने सबसे अच्छे दोस्त की सलाह पर कोई ध्यान नहीं दिया और अपने प्रयासों में लगा रहा।
अगर लोग सोशल मीडिया के ज़रिए प्यार पैदा करते, तो वह धीरे-धीरे खत्म हो जाता। अच्छा हुआ कि देवकी सागर के प्यार में नहीं पड़ी; वरना, आँखों और उंगलियों के मिलन से पैदा हुए प्यार का अपमान होता।
जनवरी 2018 से अक्टूबर 2018 तक कोशिश करने के बाद भी कुछ नहीं हुआ। परीक्षाओं के कारण देवकी का जवाब आना पूरी तरह बंद हो गया। सागर का सब्र टूट गया और उसने वर्ड डॉक्यूमेंट पर तीन पन्नों का प्रेम पत्र लिखकर 14 नवंबर की आधी रात को व्हाट्सएप के ज़रिए देवकी को भेज दिया। पत्र में लिखा था:
दिनांक: 14/11/2018
स्थान: मुंबई
पिछले कुछ दिनों से मैं एक बड़ा राज़ अपने अंदर छिपाए हुए हूँ, और इसे छुपाए रखना मेरे लिए और भी मुश्किल होता जा रहा है। जब आप किसी से बहुत प्यार करते हैं, लेकिन हर दिन सामान्य होने का दिखावा करना पड़ता है, जैसे कुछ कहना ही नहीं है, तो बहुत दर्द होता है। सिर्फ इसलिए कि आप अपनी भावनाओं को ज़ाहिर करने से डरते हैं। यह सच में बहुत कठिन है, और इन्हीं डरों से बचने के लिए मैं तुम्हें यह पत्र लिख रहा हूँ, देवकी। तो आखिरकार, मैं अपने दिल की बात तुमसे कह रहा हूँ। शुरुआत कैसे हुई: जब मैंने तुम्हें फेसबुक पर "हैरी पॉटर एंड द कर्सड चाइल्ड" की पीडीएफ भेजी थी, तब हमने इंस्टाग्राम पर एक-दूसरे को फॉलो करना शुरू ही किया था। मैंने तुम्हारी पोस्ट देखीं, जीवन के प्रति तुम्हारा नज़रिया देखा, और सब कुछ। मैं तुम्हारी तरफ आकर्षित हो गया। मैं ठीक-ठीक नहीं बता सकता कि मैं

तुम्हारी तरफ क्यों खिंचा चला गया। मुझे लगता है कि तुम्हारी मुस्कान थी। शायद तुम्हारी आँखें। मुझे लगता है कि तुम पूरी तरह से वैसी ही थीं। तो मैंने वह किताब तुम्हारे साथ शेयर की, और तुम्हारी सकारात्मक प्रतिक्रिया से मैं अभिभूत हो गया। तुमने मुझे अपना नंबर भी दिया। उसके बाद, हम मैसेज करते रहे, लेकिन हमने ज़्यादा बात नहीं की। आप सोच सकते हैं कि मैं आपको जाने बिना आपसे प्यार कैसे कर सकता हूँ, लेकिन यही तो असली बात है। प्यार करने के लिए किसी को जानना ज़रूरी नहीं है। यह स्वाभाविक रूप से होता है।
समय के साथ, तुम्हारे लिए मेरी भावनाएँ बढ़ती गईं, लेकिन तब मैंने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की हिम्मत नहीं की, और अब भी नहीं कर पाती। हाल ही में मैं ऋषिकेश की यात्रा पर गई थी और वहाँ मुझे एक ऐसा अनुभव हुआ जिसने मुझे जीवन की क्षणभंगुरता का एहसास कराया। हमें चीजों को टालना नहीं चाहिए। महीने बीत गए और मैं अपने काम में व्यस्त हो गई। तुम्हारा इंस्टाग्राम हैंडल देखकर मुझे हमेशा खुशी होती थी, और आज भी होती है। जनवरी में रूपाली दीदी की सगाई में शामिल होकर मुझे बहुत खुशी हुई। उस दिन ने मेरी जिंदगी बदल दी।
आप सोच रहे होंगे कि उस दिन आपसे कुछ मिनटों की मुलाकात मेरी जिंदगी कैसे बदल सकती है, लेकिन मेरा मानना है कि प्यार में सब कुछ करने की शक्ति होती है। उस दिन मैं कार्यक्रम स्थल पर जल्दी पहुँच गया था और मेरा मोबाइल बंद हो गया था। मैं इधर-उधर देखता रहा और फिर शौचालय में हमारी पहली मुलाकात हुई। (पहली बार मिलने के लिए यह काफी अजीब जगह थी) बाद में हमारी फिर मुलाकात हुई और हमारी नज़रें मिलीं। आपने मुस्कुराकर मेरी तरफ चलना शुरू किया। मैं बैठा रहा और आपको बधाई देने के लिए उठा तक नहीं। मैं कितना मूर्ख था! हमने बातें शुरू कीं और मुझे एहसास हुआ कि मेरे दिल में आपके लिए जो प्यार था वह सच्चा और पवित्र था।
आपने अपना बैग मेरे बगल वाली कुर्सी पर रखा और चली गईं। बाद में, किसी ने आपका बैग हटाकर कुर्सी पर बैठने की कोशिश की, लेकिन मैंने आपका बैग उठा लिया और उसे अपनी कुर्सी के नीचे रख दिया। मैंने आपको इसके बारे में बाद में बताया। आपका बैग उठाते हुए मुझे अंदर ही अंदर बहुत खुशी हुई।

उस दिन के बाद से, तुम हमेशा मेरे विचारों में बसी रहती हो। यही कारण है कि मैं तुम्हें इंस्टाग्राम पर संदेश भेजती रहती हूँ। जब मैं गाने सुनती हूँ या साइकिल चलाती हूँ, तो तुम्हारा चेहरा हमेशा मेरी आँखों के सामने रहता है। तुमसे मिलने के बाद मुझे जीवन का उद्देश्य मिल गया है। तुमसे मिलने से पहले मैं एक कीट थी, लेकिन उस दिन के बाद मैं एक तितली बन गई हूँ।

फिर मैं उस दिन आपको सीता की किताब देने आई थी। आपको देखकर मेरी धड़कनें तेज़ हो गईं। आप बेहद खूबसूरत लग रही थीं। बोस्टन जाने से पहले मैं आपको फोन करना चाहती थी, लेकिन हिम्मत नहीं जुटा पाई। इसलिए मैंने आपको सिर्फ एक वॉइस नोट भेजा। मुझे खुशी है कि आपने अपने कॉलेज में TED Talk के लिए मेरी मदद ली। पता नहीं आपको याद है या नहीं, लेकिन आपने एक दिन मुझे संदीप महेशवरी का प्रेम पर बना वीडियो भेजा था। मुझे उस दिन बहुत अच्छा लगा था। मैंने आपसे प्रेम के अपने अनुभवों के बारे में पूछा था, लेकिन आपने इस बारे में कुछ नहीं कहा। आपकी आंखें और मुस्कान प्रेम के प्रति आपके गहरे लगाव को दर्शाती हैं। मुझे बहुत अच्छा लगा जब आपने मुझे गणेश चतुर्थी के उत्सव के लिए अपने घर बुलाया और इंस्टाग्राम वीडियो में मुझे टैग किया। कहने को बहुत कुछ है, लेकिन मैं संक्षेप में ही बताऊंगी:

मुझे तुमसे प्यार है।

जब मैं तुमसे पहली बार मिली, तो मुझे सच्चे प्यार का एहसास हुआ। तुमसे मिलने के बाद मैंने खुद से और भी ज़्यादा प्यार करना शुरू कर दिया। मैं दिवाली पर तुमसे मिलना चाहती थी और तुम्हें सब कुछ बताना चाहती थी, लेकिन तुम व्यस्त थे। मुझे नहीं पता तुम मेरे बारे में क्या सोचते हो, लेकिन अगर तुम मुझे एक मौका दो, तो यह प्यार हमारे जीवन में कुछ खास मोड़ ला सकता है। मैंने तुम्हें व्हाट्सएप पर मैसेज किया, लेकिन तुमने जवाब नहीं दिया। मुझे इसका कोई अफसोस नहीं है, क्योंकि प्यार का मतलब चौबीसों घंटे जुड़े रहना नहीं होता। तुमसे मिलने के बाद, जीवन की शक्ति ने मुझे पूरी तरह से अपने वश में कर लिया है।

मुझे हमारी सारी बातें याद आती रहती हैं। देवकी, अब फैसला तुम्हारा है। तुम जो भी फैसला करोगी, मैं मान लूंगा। लेकिन मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि प्यार को एक मौका जरूर दो। कृपया इस प्रेम पत्र के बारे में किसी से बात मत करना। यहीं पर मैं यह पत्र समाप्त करता हूं। मैं

तुमसे प्यार करता हूं, और हमेशा करता रहूंगा। मुझे पता है कि तुम इतनी समझदार हो कि मेरे प्यार की गहराई को समझ सकोगी। मुझे लगता है कि तुम्हारी आंखें और मुस्कान तुम्हारी आत्मा का प्रतिबिंब हैं। तुम्हारी आंखें इतनी गहरी हैं कि मैं उनमें खो जाना चाहता हूं। तुम्हारी मुस्कान मेरी आत्मा को रोशन कर देती है। हम मिलकर इस दुनिया को एक महान प्रेम कहानी जरूर दे सकते हैं। मुझे उम्मीद है कि तुमसे जल्द ही मुलाकात होगी। मैं तुम्हें बंगला साहिब का ख्यातिपत्र देना चाहता हूं। बस याद रखना कि तुम्हें प्यार करने वाला हमेशा कोई न कोई होगा। पत्र पढ़ने के लिए धन्यवाद। तुम्हारे जवाब का इंतजार रहेगा।
मानव स्वभाव की विडंबना! वर्ड डॉक्यूमेंट में लिखा प्रेम पत्र भेजा गया
व्हाट्सएप के माध्यम से।
हैरानी की बात यह है कि देवकी ने प्रेम पत्र का जवाब दिया।
जी हां, जवाब साफ था, बिलकुल ना। सीधा और स्पष्ट।
जुनून और प्यार में यही फर्क है। जुनून में हम कोशिश करते हैं। सागर देवकी की खूबसूरती पर इतना मोहित था कि वह भूल गया कि प्यार में कोशिश करने जैसा कुछ नहीं होता। प्यार में तो बस उसे जाने देना होता है।

अध्याय 5

आज

15 नवंबर 2018,

छत।

सागर और मलार की बातचीत जारी है...

अगर ये सब न हुआ होता, तो सागर का मलार और हर्ष से दोबारा संपर्क न होता, और ये कहानी कभी सुनाई ही न जाती। दिल टूटना ज़रूरी है, क्योंकि इससे ही अच्छी कहानियाँ बनती हैं।

सागर यह भूल गया था कि कल ही तो देवकी ने उसे ठुकरा दिया था जब उसे पता चला कि मलार ने निमित के साथ अपना छह साल का रिश्ता तोड़ दिया है। सागर ने कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा हो सकता है।

"ये क्या बकवास है! क्यों?" सागर ने कहा।

मलार बिना कुछ कहे पानी की टंकी से नीचे उतर गई, सागर भी उसके पीछे-पीछे उतर गया। कई सेकंड बीत गए। ठंडी हवा चल रही थी, लेकिन मलार के जीवन में कुछ तो गड़बड़ थी।

"क्या तुम कल मेरे साथ डॉक्टर के पास चलोगे?" मलार ने सागर से पूछा। "ज़रूर चलूँगा। लेकिन क्या बात है, मलार?"

"बस कल आ जाना, सागर।"

उस दिन मलार और सागर दोनों सोए नहीं। कुछ होने ही वाला था।

अगले दिन

सागर ने अपनी बजाज एवेंजर बाइक निकाली और मलार पीछे बैठ गई। दोनों मलाड से अंधेरी स्थित क्लिनिक 30 मिनट में पहुँच गए। सागर की नज़र सबसे पहले क्लिनिक के नाम "द हीलिंग प्लेस" पर पड़ी, जो बिल्कुल अलग और नया था। दोनों अस्पताल में दाखिल हुए। अंदर बहुत ठंड थी, लेकिन क्लिनिक के पूरी तरह सफेद रंग के कारण उन्हें बेहद सुकून महसूस हुआ। सोफे से लेकर दीवारों और दरवाजों तक, सब कुछ सफेद था; यहाँ तक कि

रिसेप्शन डेस्क का कंप्यूटर भी सफेद था। मलार रिसेप्शन डेस्क पर पहुँची और कुछ कहने से पहले ही रिसेप्शनिस्ट ने पूछा, "जी मैडम, मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ?"
"मेरी डॉक्टर मीरा से अपॉइंटमेंट है।"
"मुझे जाँच करने दीजिए। ओह, हाँ, यह रहा आपका नाम। क्या आप यहाँ पहली बार आई हैं, सुश्री मालार?"
"हां," मलार ने सिर हिलाया। सागर असमंजस में था। पेट दर्द, खांसी या जुकाम जैसी आम समस्याओं के लिए मलार इतने बड़े क्लिनिक में क्यों आती? वह चाहता था कि मलार उसे सब कुछ बताए।
लड़की ने मलार को एक फॉर्म दिया और उसे पूरी जानकारी के साथ भरने को कहा। उसने मलार से सारी रिपोर्टें ले लीं और उन्हें एक नई फाइल में दर्ज कर दिया। मलार और सागर सोफे पर बैठ गए। आखिरकार चुप्पी तोड़ते हुए सागर ने पूछा, "हम यहाँ क्यों हैं?"
मलार ने पहले फॉर्म को देखा और फिर सागर की ओर देखकर कहा, "क्योंकि मैं हाइपोथायरायडिज्म से पीड़ित हूं।"
सागर को गहरा सदमा लगा। उसे मिली जानकारी को समझने में कुछ सेकंड का समय लगा। मलार विधिवत फॉर्म भर रही थी। उसे पता था कि उसकी स्वास्थ्य स्थिति सागर को प्रभावित करेगी। जब उसे इसके बारे में पता चला तो वह खुद भी सदमे में थी। उसने कई बार डॉक्टरों से परामर्श किया, लेकिन उनमें से अधिकांश ने उसे केवल बीमारी के तात्कालिक प्रभाव को रोकने के लिए दवाइयाँ दीं। किसी ने भी मूल कारण जानने की कोशिश नहीं की। डॉ. मीरा के क्लिनिक का सुझाव उसे उसके प्रेमी निमित ने दिया था, जिससे उसका पिछले महीने ही ब्रेकअप हुआ था।
सागर ने कहा, "आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? और यह सब कब और कैसे हुआ?"
मलार ने फॉर्म भर लिया था। उसने गहरी सांस ली, सागर की ओर देखा और पूछा, "क्या पिछले कुछ महीनों में आपके पास मेरे लिए समय था?" सागर के कुछ कहने से पहले ही, प्रभारी महिला आई और फॉर्म ले गई। उसने उन्हें यह भी बताया कि डॉ. मीरा उनका इंतज़ार कर रही हैं। दोनों डॉक्टर के केबिन में दाखिल हुए। डॉ. मीरा ने मुस्कुराते हुए उनका स्वागत किया और उन्हें बैठने को कहा।

कल रात

मलार अपने घर में अकेली थी। रात के 10 बज रहे थे और उसे अकेलापन महसूस हो रहा था। निमित से ब्रेकअप के बाद वह घर के बाहर भी अकेली थी और घर के अंदर भी अकेली थी क्योंकि उसके मन में बहुत कुछ कहने को था, पर कोई ऐसा नहीं था जिससे वह बात कर सके।

अचानक, दरवाजे की घंटी बजी। मालार ने दरवाजा खोला, और वहाँ उसने देखा वह फूलों के साथ खड़ा था। निमित वापस आ गया था। घर में प्रवेश करते ही उन्होंने सबसे पहले एक-दूसरे को चूमा। वे ऐसे चूम रहे थे मानो एक-दूसरे के होंठ चूमना चाहते हों। निमित ने मलार की कमर कसकर पकड़ रखी थी और मलार उसे ऐसे गले लगा रही थी मानो कभी जाने न दे। मलार ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा, "बेबी, चलो बेडरूम चलते हैं।" निमित ने मलार को अपनी बाहों में उठा लिया और बेडरूम में पहुँचते ही उसने मलार को बिस्तर पर पटक दिया और उसके ऊपर लेट गया।

उनका चुंबन का सिलसिला फिर शुरू हुआ, लेकिन इस बार उन्होंने एक-दूसरे के कपड़े भी उतार दिए। निमित ने मलार का लाल टॉप फाड़ दिया और एक ही झटके में उसके शॉर्ट्स उतार दिए। मलार ने भी निमित को उसकी जींस और टी-शर्ट उतारने में मदद की।

वे दोनों केवल अपने अंतर्वस्त्रों में ही लेटे हुए थे।

मलार चाहती थी कि वह उसके अंदर प्रवेश करे। उसने निमित का अंडरवियर उतारा और उसकी आँखों में देखते हुए कहा, "चलो करते हैं।"

निमित ने भी वैसा ही किया और दोनों नग्न हो गए। मलार गीली हो चुकी थी। वे लंबे समय बाद ऐसा कर रहे थे। निमित ने अपना लिंग पकड़ा और मलार के अंदर प्रवेश करने ही वाला था। मलार ने आनंद से अपनी आँखें बंद कर लीं। कुछ सेकंड बीत गए, लेकिन निमित ने कुछ नहीं किया। जैसे ही मलार ने देखने के लिए अपनी आँखें खोलीं, निमित ने उसके दाहिने गाल पर ज़ोर से थप्पड़ मारा। मलार चौंक गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। निमित ने उसकी गर्दन को कसकर पकड़ लिया, मानो वह उसका गला घोंट देगा।

उसने उसके चेहरे पर थूका और कहा, "तू मोटी सूअरनी! क्या तुझे सच में लगता है कि मैं तेरे जैसी घटिया मोटी सूअरनी से प्रेम करूंगा? पहले आईने में खुद को देख ले, फिर मेरे पास आ।"

मलार झटके से बिस्तर से उठी। उसने चारों ओर देखा, और वहाँ कुछ भी नहीं था। घोर अंधेरा। आसपास कोई नहीं था। उसने बत्ती जलाई। उसका दिल तेजी से धड़क रहा था। वह पसीने से पूरी तरह भीगी हुई थी।

वह जोर-जोर से रोने लगी। पिछले महीने में दसवीं बार, वह मुझे वही बुरा सपना फिर से आया। यह घटना रात के 2 बजे घटी, और उसके बाद मलार फिर कभी सो नहीं पाई।

अध्याय 6

डॉ. मीरा के क्लिनिक के अंदर

डॉ. मीरा ने मलार और सागर को पानी की बोतल दी। उन्होंने उनसे आराम करने और शांत होने को कहा।

एक डॉक्टर को सबसे पहले अपने मरीजों को शांत करना चाहिए। लेकिन सभी डॉक्टरों में यह गुण नहीं होता; उनके लिए यह सिर्फ एक व्यवसाय है, पेशा नहीं। लेकिन डॉ. मीरा की आँखों में विनम्रता झलकती थी। वह डॉक्टर की रूढ़िवादी छवि से बिलकुल अलग थीं। उनके पहनावे और दमकते चेहरे को देखकर लगता था कि उनकी उम्र 25 साल से ज़्यादा नहीं है। असल में, वह 35 साल की थीं और शादीशुदा थीं।

उस दिन उन्होंने हरे रंग की कुर्ती और नीली जींस पहनी थी, जो उन पर बहुत जंच रही थी। उसने एक छोटी सी बिंदी भी लगा रखी थी, जो उस पर बहुत खूबसूरत लग रही थी। सागर ने पानी के कुछ घूंट पिए, लेकिन मलार ने पानी की बोतल नहीं खोली। वह तनाव में थी। डॉ. मीरा ने यह बात नोटिस की।

"तो मलार, आज तुम कैसी हो?" मीरा ने आशा भरी निगाहों से पूछा। "मैं ठीक नहीं हूँ," मलार ने सच कहा।

मीरा ने मलार की फाइल देखी। दो मिनट तक पढ़ने के बाद, उसने
फाइल बंद की और गहरी सांस ली।

"मालर, सच कहूँ तो आपकी रिपोर्ट उतनी अच्छी नहीं है। थायरॉइड की दो तरह की असामान्यताएँ होती हैं, एक हाइपो और दूसरी हाइपर। आपको हाइपोफंक्शनिंग थायरॉइड है।"

मलार यह जानती थी और उसने अपने चेहरे पर कोई भाव न दिखाने की कोशिश की, लेकिन अब सागर परेशान था। यह उसके चेहरे पर साफ दिख रहा था।

डॉ. मीरा ने आगे कहा, "लेकिन डॉक्टर के रूप में अपने 10 साल के अनुभव के आधार पर, मेरा मानना है कि हमारा शरीर लगातार बदलता रहता है। अगर हम बीमारी के मूल कारण

को समझ लें, तो हम उसे ठीक कर सकते हैं। तो मलार, क्या आप अपने जीवन के बारे में और थायराइड के लक्षण कब से दिखने शुरू हुए, इसके बारे में थोड़ा बता सकती हैं?"
मलार ने सागर और फिर डॉ. मीरा की ओर देखते हुए सिर हिलाया। सागर ने सोचा कि उसके वहां बैठे रहने से मलार असहज महसूस कर रही थी, इसलिए वह उठ गया, लेकिन मलार ने उसका हाथ पकड़ लिया और अपनी आंखों से उसे बैठने का इशारा किया।

मलार अतीत में जीने वाली इंसान नहीं थी। वह वर्तमान में जीती थी। अगर अगर कल उसका किसी से भी बहुत बुरा झगड़ा हुआ होता, तो वह अगले दिन उसे भूल जाती और उस व्यक्ति के साथ नए सिरे से शुरुआत करती। बीते साल ने उसे एक इंसान के तौर पर बहुत बदल दिया। उसका अतीत उसके जीवन का एक बेहद महत्वपूर्ण हिस्सा था।
कहते हैं कि कहानीकार को अपनी किताब के किसी भी किरदार से कभी प्यार नहीं करना चाहिए। उसे सभी किरदारों के प्रति समान भाव रखना चाहिए, लेकिन मैं यहाँ थोड़ा पक्षपात कर रही हूँ; मुझे मलार से बहुत प्यार है। हम जन्म से शुद्ध और पवित्र होते हैं, लेकिन बड़े होने के साथ-साथ हमारे अंदर की पवित्रता धीरे-धीरे कम होने लगती है। लेकिन मलार बड़ी होने के बाद भी पवित्र और निर्मल बनी रही क्योंकि उसके माता-पिता ने उसे बहुत प्यार से पाला-पोसा और उससे कोई अपेक्षा नहीं रखी।
हालातों और मौत ने मलार की पवित्रता छीनने की कोशिश की। जब वह पांच साल की थी, तब उसके पिता का दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया।

उस दिन मलार हमेशा के लिए अंधेरे में डूब जाती, लेकिन उसकी माँ ने ऐसा होने से रोक दिया।

वह उसकी हीरो बनकर उभरी।
बचपन से ही मलार अपनी माँ की तरह बनना चाहती थी, जो एक महान प्रेमी, स्वप्नद्रष्टा और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिला थीं। मलार की किशोरावस्था पूरी तरह से अपनी माँ की तरह बनने में ही व्यतीत हुई।
दसवीं कक्षा में उन्होंने 96% अंक प्राप्त करके स्कूल में टॉप किया। उसी दिन से उनकी यात्रा शुरू हुई। उन्होंने वाणिज्य विषय चुना और उनके मन में यह बात स्पष्ट थी कि वह चार्टर्ड

अकाउंटेंट बनना चाहती हैं और अपनी मां की तरह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनना चाहती हैं।

लेकिन उनका जीवन केवल पढ़ाई तक ही सीमित नहीं था, वे कॉलेज में काफी मशहूर थीं। क्योंकि वह दिखने में सुंदर और आकर्षक थी।

5 फुट 10 इंच की लंबाई वाली मालार किसी भी मॉडल को कड़ी टक्कर दे सकती थी। गेहूं के रंग की त्वचा के साथ, उनकी त्वचा बेदाग और दमकती हुई थी।

उसका शरीर सुडौल था। 60 किलो वजन वाली उस महिला के बाल गहरे काले थे, जो उसमें दुनिया को जीतने का आत्मविश्वास झलक रहा था। उसकी सबसे खूबसूरत चीज उसकी आंखें थीं, गहरी भूरी आंखें जिन पर कवि अनगिनत कविताएं लिख सकते थे।

इसके बाद, मालार ने बेहद छोटे डेनिम शॉर्ट्स को सफेद रंग की टी-शर्ट के साथ पहनकर सबको चौंका दिया।

टी-शर्ट पर लिखा था, "मैं यहां राज करने आया हूं।"

पश्चिमी परिधानों में भी बेहद आकर्षक दिखने के बावजूद, मलार का दिल उत्तर प्रदेश में ही राज करता था।

बारीक और नाजुक कढ़ाई वाली कुर्तियां और लेगिंग के साथ पारंपरिक झुमके।

जब वह अपनी पसंदीदा काली कुर्ती पहनती थी, तो वह देखती थी

वह आईने में खुद को देखती और खुद को एक फ्लाइंग किस देती। वह अपनी ही आत्मा थी।

मलार ने चार्टर्ड अकाउंटेंसी के पहले दो स्तर बहुत आसानी से पास कर लिए। उसे एक बड़ी कंपनी में इंटर्नशिप मिल गई और उसी दौरान उसकी मुलाकात निमित से हुई।

निमित, मलार से चार साल बड़ा था और पेशे से इंजीनियर था। वह उसी कंपनी में काम करता था जहाँ मलार अपनी इंटर्नशिप कर रही थी।

मुंबई में, गर्मियों के दौरान, शहर में रहने वाला हर कोई चाहता है कि ऐसा हो

बारिश हो ताकि मुंबई थोड़ा और सुकून भरा और खूबसूरत बन सके। और जब बारिश शुरू होती है, तो लोग चाहते हैं कि इतनी तेज बारिश हो जैसे कल होगा ही नहीं।

उस दिन ऐसा हुआ। इतनी ज़ोर से बारिश हुई मानो कल होगा ही नहीं, और दोनों

मलार और निमित अन्य कर्मचारियों के साथ कार्यालय में फंस गए, और रात भर के लिए बिजली और मोबाइल नेटवर्क बंद रहे।

रात के करीब 12 बजे थे जब ज्यादातर कर्मचारी सो रहे थे; निमित चाहता था कॉफी पीने के लिए। वह ऑफिस की पेंट्री में गया, अप्रयुक्त गैस स्टोव चालू किया और अपने लिए एक कप ब्लैक कॉफी बनाई।

ठीक उसी समय, मलार भी संयोगवश पेंट्री में दाखिल हुई।

पानी। निमित ने अपने मोबाइल की फ्लैशलाइट उसके चेहरे की ओर घुमाई। मालार अचानक से हैरान रह गई।

उसने अजीब सी मुस्कान के साथ कहा, "ओह, सॉरी... हाय... क्या आप मुझे पानी की बोतल दे सकते हैं?"

मलार की मुस्कान देखकर निमित भावुक हो गया। "दुखी मत हो, ये रहा पानी।"

जब मलार पानी पी रही थी, निमित ने टॉर्च की रोशनी उसके चेहरे पर टिकाए रखी और कहा, "मैं यहाँ बिना दूध के कॉफी बनाने की कोशिश कर रहा हूँ।" मलार पानी पीते हुए हंस पड़ी। निमित ने दो लोगों के लिए ब्लैक कॉफी बनाई। "कुछ चाहिए? इससे रात गुजारने में जरूर मदद मिलेगी।"

मलार ने एक पल सोचा, कॉफी की तरफ देखा, और आवाज सुनी।

बाहर बारिश हो रही थी, और उसने कप स्वीकार कर लिया।

वे दोनों पेंट्री में ही बैठ गए। निमित ने टॉर्च बंद कर दी।

वे एक-दूसरे का चेहरा नहीं देख पा रहे थे, लेकिन उस रात उन्होंने बातें कीं। उन्होंने एक-दूसरे की जीवन कहानियों और अनुभवों को साझा किया और उनके बीच गहरा जुड़ाव महसूस हुआ। निमित का दिल और दिमाग मलार की उस अजीब सी मुस्कान से अभी तक नहीं उखड़ा था, और मलार निमित की काली कॉफी से। उस दिन उसने पहली बार कॉफी का स्वाद चखा था। उसने निमित को इसके बारे में बताया। निमित बस मुस्कुराया।

अगली सुबह भोर हो गई। निमित ने मलार की मुस्कान फिर से देखी, और यह

इस बार उसे पूरा यकीन हो गया। निमित ने दोबारा काली कॉफी बनाई और मालार ने उसे चखा। उसने यह भी देखा कि निमित उसे घूर रहा था जब वह उसके द्वारा बनाई गई कॉफी पी रही थी। उसे पूरा यकीन हो गया।

बरसात के बादल छंट गए, जिससे मलार और निमित एक-दूसरे के करीब आ गए और उनके बीच का रिश्ता और भी मजबूत हो गया।

वे दोनों प्यार में पड़ गए। मलार अपनी माँ के दफ्तर से लौटने का इंतजार कर रही थी। जब उसकी माँ आई, तो मलार उनके लिए पानी लेकर आई और उनके बगल में बैठ गई। उसने उनका हाथ पकड़कर कहा, "मम्मी, अब आपको काम करने की ज़रूरत नहीं है। मैं चार्टर्ड अकाउंटेंट बन गई हूँ।"

बेटी और मां दोनों ने एक-दूसरे को गले लगाया, और ऐसे खुशी के पलों में, मां को अपने पति की याद आ रही थी, और बेटी को अपने पिता की। "आज मुझे पापा की बहुत याद आ रही है," मलार ने अपने पिता की तस्वीर को देखते हुए कहा। मां ने खामोशी को उनके दिलों को सुकून देने दिया। कुछ क्षण बाद, मां ने चुप्पी तोड़ी।

"बेटा, तुम्हारे पिता हमेशा चाहते थे कि मैं तुम्हारे जन्म के बाद भी काम करूं, पैसे के लिए नहीं बल्कि आत्मनिर्भरता के लिए। वे नहीं चाहते थे कि मैं घर पर बैठकर अपनी पढ़ाई-लिखाई बर्बाद कर दूं। लेकिन मैं आलसी थी। मैं आरामदेह जीवन में इतनी फंसी हुई थी कि मैंने कभी कोशिश ही नहीं की। जिस दिन तुम्हारे पिता हमें छोड़कर चले गए, उस दिन इस ईश्वर, प्रकृति या ब्रह्मांड ने मेरे जीवन का सबसे अनमोल हिस्सा छीन लिया। लेकिन अब पीछे मुड़कर देखती हूं तो मुझे लगता है कि इसने मुझे कुछ करने का मकसद भी दिया है, और मुझे यकीन है कि आज मेरे पति को तुम पर बहुत गर्व होगा। मलार, मैं हर दिन तुम्हें उनमें देखती हूं। तुम्हारी लंबाई और बुद्धि दोनों उनमें हैं।"

इस बार मलार ने चुप्पी को हावी होने दिया। वह बेडरूम में गई और सारे फोटो एल्बमों से भरा एक बड़ा बैग ले आई। देर रात तक मां-बेटी हंसती, रोती और कई बार एक-दूसरे को गले लगाती रहीं। एल्बम देखने का सिलसिला खत्म होने पर मलार ने कहा, "मम्मी, मुझे आपको एक और बात बतानी है।"

"हाँ, बताओ।"

"मम्मी, मैं किसी से प्यार करती हूँ और पिछले छह महीनों से उससे मिल रही हूँ। मुझे माफ़ करना कि मैंने आपको पहले नहीं बताया।" मलार की माँ हँसी और मलार से कहा कि वह निमित को अगले ही दिन अपने घर बुलाए। अगले दिन मलार की माँ निमित से मिलीं और उन्हें वह बहुत पसंद आया। अब वह अपने जीवन में बहुत खुश थीं। उनकी बेटी को अपना जीवनसाथी मिल गया था। तीनों ने साथ में तस्वीरें खिंचवाईं और दोपहर का खाना खाया।

सब कुछ अच्छा था, और सब लोग खुश थे। मलार ने आखिरकार सफलता हासिल कर ली। जो वह चाहती थी।

अध्याय 7

यह कहानी पिछले अध्याय में ही समाप्त हो सकती थी, जब मलार का जीवन एकदम परिपूर्ण लग रहा था। उसके पास एक बढ़िया नौकरी थी, एक वफादार और प्यार करने वाला प्रेमी था, एक आदर्श शरीर था, और वह सब कुछ था जो कोई चाहता है। लेकिन प्रकृति का स्वभाव परिवर्तनशील है। बहता हुआ पानी हमेशा ताजा रहता है, लेकिन रुके हुए पानी में मच्छर पनपते हैं।

2016 में, मलार चार्टर्ड अकाउंटेंट बन गईं। वह साल उनके लिए बहुत अच्छा रहा। निमित के जन्मदिन पर, मलार के घर में दोनों ने पहली बार शारीरिक संबंध बनाए। हर सप्ताहांत वे ज़ोमैटो पर खाना खोजते और शहर के सबसे अच्छे और शानदार रेस्टोरेंट में जाते। 2016 के अंत तक, मलार का वज़न 2 किलो बढ़ गया था। लेकिन कोई बात नहीं, वह खुश थीं। उनके लिए सबसे अच्छी बात यह थी कि जनवरी 2017 में उनका प्रमोशन हो गया। अब उनकी कमाई निमित से ज़्यादा थी। हालांकि, उनका काम बढ़ गया, उनके ऑफिस का समय सुबह 10 बजे से शाम 7 बजे तक हो गया। लेकिन ऑफिस से निकलने का कोई निश्चित समय नहीं था। वह अक्सर रात 11 बजे या कभी-कभी दोपहर 1 बजे घर पहुँचती थीं। उन्हें कई बार नाश्ता और रात का खाना भी छोड़ना पड़ता था। यही उनकी दिनचर्या बन गई थी। अत्यधिक काम के दबाव के कारण, मलार अपने नाखून बहुत चबाती थीं। प्रमोशन के दो महीने बाद, मलार निमित के साथ महंगे रेस्टोरेंट में खाने-पीने के लिए सप्ताहांत का इंतज़ार करती थीं। 2017 के मध्य तक, मलार और निमित के बीच कुछ झगड़े हो चुके थे क्योंकि निमित को लगने लगा था कि मलार उनके रिश्ते को पर्याप्त समय नहीं दे रही है। सप्ताहांत तक मलार इतनी थक जाती थी कि वह अपनी छुट्टियां सोने और तरोताज़ा होने में ही बिताती थी। इसके बावजूद, उसकी आंखों के नीचे काले घेरे थे। उसकी तनख्वाह 1.25 लाख रुपये प्रति माह थी, लेकिन इसका अधिकांश हिस्सा वह खर्च नहीं कर पाती थी क्योंकि मलार के पास कमाई का पैसा खर्च करने का समय ही नहीं था। जीवन की विडंबना ही कुछ और है।

जब भी मलार खुद से सवाल करती कि क्या वह बेवजह तनाव ले रही है, तो वह तुरंत खुद को यह कहकर दिलासा देती कि यह वही काम है जिसके लिए उसने इतनी मेहनत से पढ़ाई की है। वह पूरी लगन से काम करती रहती। वह 2018 तक निमित से शादी करना चाहती थी।

उसे लगता था कि उसने अपनी पूरी जिंदगी की योजना बना ली है। अगले दो साल कड़ी मेहनत करो और फिर अपने जीवन के प्यार से शादी करो।

नवंबर 2017 में, निमित कंपनी के प्रोजेक्ट हेड के रूप में छह महीने के लिए दिल्ली गए। योजना यह थी कि मलार और निमित सप्ताहांत में दिल्ली जाएंगे और साथ में शहर घूमेंगे। मलार ने सोमवार को वापस आने की योजना बनाई थी। लेकिन निर्धारित समय से एक घंटा पहले, मलार ने अपना इरादा बदल दिया क्योंकि एक ग्राहक के यहाँ एक ज़रूरी मीटिंग तय थी।

उस दिन निमित ने पहली बार मलार पर चिल्लाया। उसने अपना फोन बंद कर दिया और एक हफ्ते तक दोनों की कोई बात नहीं हुई। दूसरी ओर, मलार ने आखिरी समय में पीछे हटने के बारे में ज्यादा नहीं सोचा। उसे लगा कि उसके ग्राहक की संतुष्टि ज्यादा महत्वपूर्ण है। उसने एक हफ्ते बाद निमित को फोन किया और कहा, "माफ़ करना।" दोनों के बीच सुलह हो गई, लेकिन 2017 के अंत तक हालात काफी खराब हो गए थे।

2018 की शुरुआत में, मलार के लिए साल के पहले 15 दिन बहुत मुश्किल भरे रहे। उसके पास काम का ढेर लगा हुआ था; ऊपर से उसे लगातार कब्ज की समस्या भी थी। हर सुबह वह अपनी आंतों को साफ करने की कोशिश करती, लेकिन कोई फायदा नहीं होता था। 20 जनवरी को, जब वह घर से काम कर रही थी, तब भी उसे कब्ज की शिकायत थी। किसी भी तरह की दवा से आराम नहीं मिला। वह चिढ़ गई और उसने अपना लैपटॉप बंद कर दिया। ताजी हवा लेने और मन बहलाने के लिए वह छत पर चली गई। लगभग छह महीने बाद, वहाँ उसकी नज़र अपने बचपन के दोस्त सागर पर पड़ी। सागर ने उसकी तरफ पीठ कर रखी थी। मलार दबे पांव उसकी तरफ बढ़ी और अपनी हथेलियों से उसकी आँखों को थाम लिया। "यह अनुमान मत लगाओ कि मैं कौन हूँ," मलार ने ठीक उसी तरह कहा जैसे वह बचपन में चिल्लाती थी।

सागर को सिर्फ इतना पता था कि मलार ने कहा था, "यह अनुमान मत लगाओ कि मैं कौन हूँ।" उसने ऐसा क्यों कहा, इसका कोई कारण नहीं था। यह उनके बचपन की रस्म थी। इसलिए उन्होंने इसमें कोई अर्थ खोजने की कोशिश नहीं की।

सागर ने व्यंग्यपूर्वक कहा, "इस ग्रह पर सबसे व्यस्त व्यक्ति को आखिरकार इस छज्जे जैसी जगह पर आने का समय कैसे मिल गया?" मलार ने सागर की आँखों से अपने हाथ हटाए और मुस्कुराते हुए सागर को देखकर मुँह बनाया।

"Aisa kuch nahi hai."

सागर ने पलटकर जवाब दिया, "इसका मतलब है कि आज निमित व्यस्त हो सकता है। इसीलिए तुम यहाँ हो...?"

मलार ने सागर के सामने फिर से एक भद्दा सा चेहरा बनाया।

"अगर तुम ऐसी बकवास करती रहोगी, तो बेहतर है कि मैं वापस चली जाऊं। हम छह महीने बाद मिल रहे हैं, और तुम्हें अपने सारे ताने मारकर मुझे निकाल देना होगा।" मलार मुड़ी और वापस जाने लगी। "अरे नौटंकी," सागर ने कहा और मलार का हाथ पकड़ लिया।

मलार मुस्कुराई। उसे पता था कि सागर उसे किसी भी दिन वापस जाने से रोक देगा। वे पानी की टंकी पर बैठ गए जहाँ से सूर्यास्त दिखाई देता था। सागर ने बातचीत शुरू की, "तो..."

"तो..." मालार ने जवाब दिया

फिर वे दोस्तों की तरह उन सभी चीजों के बारे में बातें करने लगे जो उनके जीवन में महत्वपूर्ण नहीं थीं, जैसे फिल्में, केक, कैफे, गाने और चाय। वे दोनों एक-दूसरे के बारे में सब कुछ जानते थे। फिर भी, उस दिन उन्होंने घंटों बातें कीं।

पहले वे व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम पर नियमित रूप से जुड़े रहते थे, लेकिन जब उन्होंने उस दिन रात 10 बजे तक बात की, तो उन्हें एहसास हुआ कि वे एक-दूसरे की संगति को कितना याद कर रहे थे।

इसलिए यह तय किया गया कि वे दोनों सप्ताहांत में छत पर मिलने की कोशिश करेंगे।

यह कितनी अजीब बात है कि जीवन में हम चाहे कितनी भी तरक्की कर लें, दोस्तों से बात करते समय हम वैसे ही रहते हैं। क्योंकि हम अंदर ही अंदर जानते हैं कि हमें उनके सामने वैसा बनने की ज़रूरत नहीं है जैसा हम असल में नहीं होते। सागर और मलार जब साथ होते थे तो बिल्कुल वैसे ही होते थे जैसे वे असल में होते थे।

अध्याय 8

मार्च 2018 तक, मालार का वजन 70 किलोग्राम हो गया था, और चाहे वह कितना भी सोए या खाए, वह हमेशा सुस्त और कमजोर महसूस करती थी।

कभी-कभी काम करते समय उसके हाथ कांपने लगते थे, और कभी-कभी उसकी पलकें लगातार फड़कती रहती थीं। वह इसे विटामिन की कमी समझकर नज़रअंदाज़ कर देती थी। मलार का शरीर उसे कई बातें बताने की कोशिश कर रहा था, लेकिन वह व्यस्त होने के कारण उन संकेतों को नजरअंदाज करती रही।

वीकेंड के दौरान वह निमित से वीडियो चैट करती थी और बाद में सागर के साथ छत पर जाकर बैठ जाती थी।

जब सागर लगातार अपनी पसंद की लड़की देवकी के बारे में बात करता रहता था, तो वह चिढ़ जाती थी। वह उसकी बातें सुनने की कोशिश करती थी, लेकिन उसका मन बेचैन रहता था। जून 2018 तक हालात बहुत बिगड़ गए।

मलार का वजन 80 किलो तक पहुंच गया था। उसके बाल झड़ने लगे थे और हर सुबह ऑफिस पहुंचने के लिए उसे अपनी कमजोरी से जूझना पड़ता था। सालों में पहली बार मलार ने अपनी मां से तब झगड़ा किया जब उनकी मां ने उसे वजन कम करने के लिए व्यायाम कक्षाओं में शामिल होने का सुझाव दिया। उसके बाद मलार की मां ने उससे कुछ नहीं कहा। उन्हें लगा कि मलार काम के तनाव के कारण परेशान है।

काम करते समय, मलार कुछ घंटों के लिए बेहद खुश रहती थी, और फिर अचानक उसे गुस्सा आ जाता था। वह छोटी-छोटी गलतियों पर भी अपने जूनियर को खूब खरी-खोटी सुनाती थी, और एक बार तो उसने गुस्से में अपना मोबाइल फोन भी फेंक दिया था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसके शरीर और दिमाग में क्या चल रहा है। एक दिन जब वह बहुत उदास थी, उसी दिन उसके दफ्तर में सभी कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य प्रबंधन शिविर आयोजित किया जा रहा था।

मलार ने उस स्वास्थ्य शिविर में समाधान खोजने की उम्मीद में शरीर के सभी परीक्षण भी करवाए।

अगले दिन स्वास्थ्य शिविर की मुख्य डॉक्टर ने मलार को व्यक्तिगत रूप से बुलाया। उन्होंने मलार का गला जांचा, उनसे कुछ सवाल पूछे और फिर मलार की आंखों में सीधे देखकर बताया कि वह हाइपोथायरायडिज्म से पीड़ित हैं।

अध्याय 9

आज के दिन
डॉ. मीरा के क्लिनिक के अंदर
मलार ने आखिरकार थोड़ा पानी पिया। हाल ही में घटी सारी घटनाओं को बताने में उसे कुछ मिनट लग गए।
सागर को बुरा लग रहा था। उसने खुद को फटकारा कि जब उसकी सबसे अच्छी दोस्त को उसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, तब वह उसके साथ नहीं था। उसे बहुत बुरा लग रहा था। वह देवकी को पाने में इतना मशगूल था कि मलार को भूल ही गया। उसने कुछ नहीं कहा। वह माफ़ी मांगना चाहता था।
अब डॉ. मीरा की बोलने की बारी थी। उन्होंने सागर की ओर देखा और कहा, "तो निमित, जब मलार ने तुम्हें अपनी समस्याओं के बारे में बताया तो तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया थी?"
"नहीं, नहीं, मैं निमित नहीं हूँ। मैं सागर हूँ। मैं उसका दोस्त हूँ जो उसके सबसे मुश्किल समय में उसके साथ नहीं था," सागर ने अपने दिल की बात कही। मलार ने सागर की ओर देखा। उसने उसकी नम आँखें देखीं। "मैंने पिछले महीने निमित से रिश्ता तोड़ लिया।"
डॉ. मीरा ने पूछा, "क्यों...?"
मलार ने कहा, "मेरे गुस्से और मूड स्विंग्स की वजह से।" उस बेहद परेशान कर देने वाले पल में, मलार को निमित से ब्रेकअप की वजह बताने के लिए एक बार फिर अपने अतीत में लौटना पड़ा। हाइपोथायरायडिज्म का पता चलने के बाद मलार पूरी तरह से टूटी नहीं थी। वह एक जुझारू महिला थी और उसने डटकर मुकाबला किया। उसकी माँ ने भी उसकी मदद और समर्थन किया। उसने जानबूझकर निमित को इसके बारे में नहीं बताया क्योंकि वह जानती थी कि वह दिल्ली का अपना प्रोजेक्ट छोड़कर उसके पास लौट आएगा। वीडियो चैट के दौरान, वह अपना मोबाइल इस तरह सेट करती थी कि निमित को सिर्फ उसका चेहरा ही दिखाई दे। दरअसल, निमित ने उससे कई बार पूछा, "तुम्हारा चेहरा इतना सूजा हुआ क्यों लग रहा है?" लेकिन मलार झूठ बोलती, "अभी-अभी उठी हूँ ना, इसलिए।" उसे दी गई दवाइयाँ धीरे-धीरे असर कर रही थीं, लेकिन उसके मूड स्विंग्स और कब्ज दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे थे। उसकी

ऊर्जा का स्तर भी बहुत कम हो गया था, लेकिन फिर भी वह किसी तरह हिम्मत बनाए रखती थी।
उनके डॉक्टर ने उन्हें काम से छुट्टी लेने की सलाह दी थी। आराम करने से उनके थायरॉइड का स्तर नियंत्रण में आ जाएगा, लेकिन मालार ने उस सलाह को नजरअंदाज कर दिया और काम करती रहीं।
सप्ताहांत में वह सागर से मिलने जाती थी। उसे उम्मीद थी कि सागर उससे पूछेगा कि सब ठीक है या नहीं। लेकिन उसने नहीं पूछा, और न ही मलार ने उसे कुछ बताया।
वे इधर-उधर की बातें करते थे और इस बारे में भी कि सागर देविका को कैसे प्रभावित कर सकता है।
निमित जून में दिल्ली से वापस आया। सबसे पहले उसने मलार को फोन किया और उससे मिलने के लिए कहा।
मलार शाम को निमित से मिलने के लिए राजी हो गई, लेकिन वह घबराई हुई थी। जब निमित मुंबई गया था, तब मलार का वजन 65 किलो था, और उस समय उसका वजन 82 किलो था। अब तक मलार का आत्मविश्वास काफी कम हो चुका था। वह दोपहर में ही दफ्तर से निकलकर घर चली गई। घर में वह बिलकुल अकेली थी।

वह इस हालत में अपने प्रेमी का सामना नहीं करना चाहती थी। वह अंदर चली गई। वह बाथरूम में गई, अपने कपड़े उतारे और शीशे में खुद को देखा। उसके स्तनों के ऊपरी हिस्से, कूल्हों के आसपास और जांघों के पास खिंचाव के निशान थे।
उसकी बगलों के पास काले धब्बे थे। यह उसके शरीर में हार्मोनल असंतुलन के कारण था। उसके स्तनों और कूल्हों का आकार औसत से अधिक बढ़ गया था। डॉक्टर ने उसे बताया कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसकी थायरॉइड ग्रंथि ठीक से काम नहीं कर रही थी, जिससे उसका शरीर वसा को पचा नहीं पा रहा था।
मलार को पता भी नहीं चला कि खुद को देखते-देखते उसकी आँखों में आँसू आ गए। शाम को जब मलार ने निमित को सब कुछ बताया तो वह रो पड़ी। उसने मलार को कसकर गले लगाया और उसके कानों में फुसफुसाया, "सब ठीक हो जाएगा। मैं तुम्हारे साथ हूँ।" उस दिन मुंबई में इतनी ज़ोरदार बारिश हुई जितनी पहले कभी नहीं हुई थी। नवंबर से एक महीना

पहले, सब कुछ धीरे-धीरे सुधर रहा था। मलार के मूड स्विंग्स कम होते जा रहे थे। उसका वज़न उतना ही था, लेकिन कभी-कभी वह अच्छा महसूस करती थी, और कभी-कभी उसका मूड खराब हो जाता था। वह दिन बहुत अच्छा था, जो बाद में गलत साबित हुआ।

बहुत समय बाद मलार निमित से उसके घर पर मिल रही थी। दोनों एक-दूसरे के साथ कुछ समय बिताना चाहते थे। जब आप किसी से लंबे समय से प्यार करते हैं, तो ऐसा निजी समय एक-दूसरे के प्रति अपने रिश्ते का पुनर्मूल्यांकन करने में सहायक होता है। इससे पहले, उनके अधिकांश सप्ताहांत डॉक्टरों के बारे में चर्चा करते हुए बीतते थे। निमित ने मलार की मदद करने की पूरी कोशिश की। उसने मलार के लिए डॉक्टरों की एक सूची तैयार की, जिनमें से एक डॉक्टर मीरा भी थीं। निमित के घर जाते समय मलार को अचानक याद आया कि पिछले एक साल से उन दोनों ने शारीरिक संबंध नहीं बनाए थे।

उसे अपने प्रेमी के स्पर्श की बहुत याद आ रही थी। उसने गाड़ी रोकी और कंडोम खरीदने के लिए एक मेडिकल स्टोर में गई। वह बहुत खुश थी और उस दिन प्यार करना चाहती थी।

"काफी समय बाद, मुझे अपने बारे में अच्छा महसूस हो रहा है।" मलार ने मन ही मन सोचा।

निमित के घर पहुँचते ही उसने उसे कसकर गले लगा लिया। निमित भी थोड़ा हैरान हुआ, लेकिन उसने भी बिना ज्यादा सोचे-समझे तुरंत हाँ कर दी। दोनों उसके शयनकक्ष में गए और बिस्तर पर बैठ गए। मलार ने उसका हाथ कसकर पकड़ रखा था, जो उसके लिए एक इशारा था। दोनों ने एक-दूसरे की आँखों में देखा और चुंबन किया।

उन्होंने एक-दूसरे के कपड़े उतार दिए और एक-दूसरे को चूमना जारी रखा। मालार कंडोम के बारे में सोचने लगी।

"एक मिनट," उसने कहा और अपने बैग से कंडोम का डिब्बा निकाला। उसी क्षण, निमित ने पहली बार मलार के शरीर में आए बदलावों को देखा। वह मन ही मन उसके पुराने और वर्तमान शरीर की तुलना कर रहा था। उसे अपने दिमाग में कुछ बदलाव महसूस हुआ। मलार ने उसे कंडोम दिए और उसका अंडरवियर उतार दिया। निमित अभी पूरी तरह से उत्तेजित नहीं हुआ था।

वह मलार को चूमता और गले लगाता रहा, लेकिन मलार अपने प्रेम-संबंध को वास्तविक स्तर पर ले जाना चाहती थी।

उसने उसके कानों में फुसफुसाते हुए कहा, "मेरे ऊपर आ जाओ," और वह पीठ के बल लेट गई। निमित उसके ऊपर चढ़ गया, लेकिन उसे कोई उत्तेजना महसूस नहीं हुई। उसने खुद को सहलाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। उसे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है, क्योंकि दो दिन पहले ही उसने पोर्न देखा था और हस्तमैथुन भी बखूबी किया था।

मलार को कुछ गड़बड़ महसूस हुई। "क्या हुआ, निमित?" उसने पूछा। निमित ने कुछ नहीं कहा और अपना मुंह उसके पैरों के बीच रख दिया। यह सिलसिला दो मिनट तक चलता रहा। लेकिन अब मलार समझ चुकी थी कि क्या गड़बड़ है। वह झटके से उठ खड़ी हुई, जिससे निमित हैरान रह गया। "निमित, तुम उत्तेजित क्यों नहीं हो रहे हो?"

"मालर, बात बस इतनी सी है कि हम इसे काफी समय बाद कर रहे हैं, इसलिए इसमें समय लग रहा है।"

तब तक मलार ने अपने अंतर्वस्त्र पहन लिए थे। "निमित, सीधी बात करो, मुझे बस यही एक चीज़ आती है जिसमें समय नहीं लगता, और इसका कारण है मेरा मोटा शरीर।" उसकी आवाज़ तेज़ थी। उसी क्षण, उनकी जानकारी के बिना, निमित के पिता अतिरिक्त चाबी से घर में दाखिल हुए।

मलार उठी और अपने कपड़े पहने। निमित समझ गया था कि मामला हाथ से निकल रहा है। "मलर, ये सब बकवास मत करो। ये तुम्हारे मोटे शरीर की वजह से नहीं है; बस मेरा मन तुम्हारे शरीर में आए बदलावों को स्वीकार करने में थोड़ा समय ले रहा है।" निमित ने भी तेज़ आवाज़ में कहा, और ये शब्द सुनकर मलार का मिजाज अचानक बदल गया। वो रोने लगी। "ओह, अब सच सामने आ रहा है। तो ये सब मेरे शरीर की वजह से था। निमित, मैंने खुद को मोटा नहीं किया है। ये सब थाइरॉइड की वजह से है!" वह रोते हुए गुर्राई।

उसने अपना सामान वापस बैग में रखा और निमित के कमरे से गुस्से में बाहर निकल गई। उसने निमित के पिता को बैठक में टीवी देखते हुए पाया। उन्होंने मलार को देखा और मुस्कुराए। "कैसी हो बेटा? मैंने तुम्हें और निमित को बात करते सुना, इसलिए सोचा कि तुम दोनों को परेशान न करूं।" मलार को समझ नहीं आया कि उन्हें क्या कहे। उसने बस एक बनावटी मुस्कान दी। निमित के पिता ने आगे कहा, "बेटा, तुम्हें अपना वजन कम करने के

लिए कुछ करना चाहिए। पिछली बार जब हम मिले थे तब से तुम्हारा वजन बहुत बढ़ गया है।"
मलार गुस्से से भड़क उठी, "अंकल, मैं बहुत कमाती हूं, और मैं आपके या आपके बेटे के पैसे से खाना नहीं खाती। इसलिए आपको मुझे वजन कम करने के लिए कहने का कोई हक नहीं है। और अगर आपको अंग्रेजी समझ नहीं आती, तो मैं जो कह रही हूं उसे हिंदी में अनुवाद कर देती हूं। मैं आपके बाप के पैसे का नहीं खाती।" निमित ने सब कुछ सुना और चिल्लाकर कहा, "चुप रहो, मलार। मेरे पिता से ऐसे बात नहीं करते। उन्हें तुम्हारी हालत के बारे में कुछ नहीं पता। अभी उनसे माफ़ी मांग लो।" तब तक निमित के पिता हक्का-बक्का रह गए थे।
मलार ने कहा, "तुम मुझ पर चिल्ला नहीं सकते, और अगर तुम्हारे पिता को कुछ नहीं पता, तो उन्हें मेरे वज़न पर टिप्पणी नहीं करनी चाहिए।" निमित का सब्र टूट गया। "मेरे घर से दफ़ा हो जाओ और फिर कभी मुझे अपना चेहरा मत दिखाना।"
उस दिन मलार को अपने शरीर से और भी ज्यादा नफरत हो गई, और उस रात उसे अपना पहला बुरा सपना आया।

आप प्यार और आत्मसम्मान में से किसे चुनेंगे? दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

हाथ।

आत्मसम्मान के बिना प्रेम नहीं टिक सकता, और मलार ने आत्मसम्मान को चुना। वह खुद का बहुत सम्मान करती थी। उस घटना के बाद निमित ने उसे मामला सुलझाने के लिए फोन किया, लेकिन मलार इस बात पर अड़ी रही कि वह उसके पिता से माफी नहीं मांगेगी। दोनों ने अलग होने का फैसला किया। निमित ने कंपनी छोड़ दी और दिल्ली चला गया क्योंकि उसे एक बड़ा प्रस्ताव मिला था।
जिस दिन वह जा रहा था, उसी दिन मलार ने उसे संदेश भेजा, "शुभकामनाएं।"
निमित ने उत्तर दिया, "आपको भी।"
उस दिन दोनों रोए थे। लेकिन बाद में सोचने पर लगा कि यह बेहतर ही था।

अध्याय 10

डॉ. मीरा के क्लिनिक के अंदर

डॉ. मीरा ने मलार की सारी बातें चुपचाप सुनीं। अब बारी थी उसकी। अब समस्या का हल निकालने की, क्योंकि वह समस्या को समझ चुकी थी।

वह अपनी कुर्सी से उठी और मलार की कुर्सी के पीछे खड़ी हो गई। उसने मलार की कुर्सी घुमा दी। मलार अब उसकी ओर देख रही थी। सागर भी डॉक्टर की ओर मुड़ गया।

"तो मलार, तुम्हारे बैंक खाते में बचत के तौर पर कितने पैसे हैं?" डॉ. मीरा ने आदेशात्मक लहजे में पूछा। मलार को डॉक्टर से इस तरह के सवाल की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। वह चुप रही। डॉ. मीरा मुस्कुराईं। "अरे, चिंता मत करो, मैं तुम्हारे घर आयकर अधिकारियों को नहीं भेजूंगी, और अगर भेज भी दूं, तो तुम एक चार्टर्ड अकाउंटेंट होने के नाते जानती हो कि उन्हें कैसे संभालना है।"

मलार के पास जवाब देने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, "मैडम, दरअसल मुझे सही आंकड़ा नहीं पता, लेकिन मेरे पास लगभग 20 लाख रुपये की बचत है।" मलार ने कहा,

"वाह!" डॉ. मीरा ने ताली बजाई और मलार की सराहना की। "यह बहुत बड़ी उपलब्धि है मलार। जब मैं तुम्हारी उम्र की थी, तब मुझे आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता था," उन्होंने कहा।

मलार को आश्चर्य हुआ कि उसकी बचत की चर्चा क्यों उठाई गई। उसने जबरदस्ती मुस्कुराने की कोशिश की।

डॉ. मीरा ने आगे कहा, "लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके पास 20 लाख, 2 करोड़ या 20 करोड़ रुपये हैं। क्योंकि कोई भी रकम आपके कब्ज को दूर करने में आपकी मदद नहीं करेगी।"

सागर को तुरंत व्यंग्य समझ आ गया और वह अपनी हंसी नहीं रोक पाया। डॉ. मीरा भी अपने ही मजाक पर हंसने लगीं। मलार ने उन्हें देखा और कुछ ही पलों में अपने जीवन और पेट की विडंबना को समझते हुए पहले कभी न हंसे हों, वैसे हंस पड़ी।

अगले दो मिनट तक वे बस एक दूसरे को देखते रहे और दिल खोलकर हंसते रहे।

डॉ. मीरा अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गईं। उन्होंने पूछा, "अब कैसा लग रहा है?" मालार ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "हाँ, बिल्कुल। मुझे अच्छा लग रहा है।"
"देखिए, अपनी समस्याओं पर हंसने की यही शक्ति है।" डॉ. मीरा ने यह बात कही, और वह बिल्कुल सही थीं।
"तो, ठीक होने और स्वस्थ होने की दिशा में हमारा पहला कदम आपकी कब्ज दूर करना होगा। इस हफ्ते मैं आपको कुछ गोलियां दूंगी, लेकिन आज से और हर दिन आपको उठते ही 2-3 केले जरूर खाने होंगे। इससे आपकी कब्ज की समस्या अपने आप ठीक हो जाएगी, और केले सिर्फ 20 रुपये के होते हैं, 20 लाख रुपये के नहीं।" डॉ. मीरा ने आंख मारी। मालार ने सिर हिलाया।
दूसरी ओर, सागर को केले खाने की ज़रूरत महसूस हुई क्योंकि वह बहुत दुबला-पतला था और उसे वज़न बढ़ाने की ज़रूरत थी। डॉ. मीरा ने आगे कहा, "और दूसरी बात, मैं आपकी निजी ज़िंदगी पर टिप्पणी नहीं कर सकती, लेकिन मैं आपको यही सलाह दूंगी कि इसे भूल जाइए। फिलहाल आपका एकमात्र उद्देश्य खुद को ठीक करना होना चाहिए, और इसके लिए आपको खुद की मदद करनी होगी। एक और सुझाव यह होगा कि आप जिम ज्वाइन करें क्योंकि हमें आपकी चर्बी कम करनी है, मांसपेशियां नहीं। जिम आपको ज़रूर मदद करेगा।" मलार ने बस सिर हिलाया।
सागर ने मलार की पीठ थपथपाई और कहा, "मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा क्योंकि मुझे थोड़ा वजन बढ़ाना है।" मलार मुस्कुराई।
डॉक्टर मीरा ने कुछ दवाइयाँ लिखकर मलार को पर्ची दी। "मलार, ये दवाइयाँ बताई गई मात्रा में लो और साथ में दो चीज़ें और करो: केले और व्यायाम। 30 दिन बाद मुझसे मिलना, तब तक मैं चाहती हूँ कि तुम्हारी कब्ज़ ठीक हो जाए।"
मलार ने डॉ. मीरा से कागज़ लिया और उनसे हाथ मिलाया। उसने कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद, मैम।"
डॉक्टर मीरा ने आश्वस्त करने वाली मुस्कान दी। मलार और सागर दोनों जाने के लिए उठ खड़े हुए। मलार सबसे पहले केबिन से निकली, और सागर के बाहर जाते समय डॉक्टर मीरा ने उसे पुकारा, "सागर, एक मिनट रुको।"

सागर मुड़ा और डॉ. मीरा ने कहा, "सागर, मेरी बात ध्यान से सुनो। एक समय ऐसा आएगा जब तुम्हें मलार को कुछ बहुत महत्वपूर्ण बात बतानी होगी।"

अध्याय 11

उस सुबह हर्ष खुश मिजाज में उठा। यह उसके लिए उन दिनों में से एक था जब वह बिना किसी कारण के खुश होकर उठता था।

उसने अपना फोन खोला और व्हाट्सएप चेक किया। ज़्यादातर मैसेज उसकी कम्युनिटी की लड़कियों के थे और सागर का एक मैसेज था, जिससे पता चला कि देवकी ने उसे रिजेक्ट कर दिया है। उसे पता था कि ऐसा ही होगा। उसने जवाब दिया, "भाई, चिंता मत करो। मैं तुम्हारे साथ हूँ। लड़कियाँ आती-जाती रहती हैं। ज़्यादा मत सोचो। शाम को मिलते हैं। टेक केयर।"

इसके बाद उसने नाश्ता और प्रोटीन शेक लिया और नहाने चला गया। बाथरूम में उसने शीशे में खुद को देखा। जिम में की गई अपनी सारी मेहनत पर उसे बहुत गर्व हो रहा था। चौड़े कंधे, मज़बूत और गठीली पीठ, गठीला सीना और गठीले हाथ। और सबसे अच्छी बात थी उसके सिक्स पैक एब्स।

जिम में, वह कई लड़कियों और कुछ लड़कों के लिए आकर्षण का केंद्र था। वह नहाकर निकला और उसने एक साफ सफेद कमीज और नीली जींस पहनी। उसने वह घड़ी भी पहनी

जो उसके पिता ने उसे दो साल पहले उपहार में दी थी जब हर्ष ने अपना प्लाईवुड का व्यवसाय शुरू किया था।

जब हम स्कूल में होते हैं, तो हम सभी किसी न किसी रूप में अपरिपक्व बच्चे होते हैं। हमारा स्कूल हमें धर्म और राजनीति से दूर रखता है। क्योंकि स्कूल में हम सभी हर दिन एक साथ प्रार्थना करते हैं,

सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं।

स्कूल से निकलने तक हम पर धर्म का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। घर में इसका प्रभाव हो सकता है। लेकिन स्कूल में प्रवेश करते ही सब एक हो जाते हैं और बराबर हो जाते हैं।

हर्ष भी स्कूल में ऐसा ही बच्चा था। घर पर वह अपने माता-पिता द्वारा बताई गई सभी पूजा-अर्चना करता था, लेकिन स्कूल के अंदर जाने के बाद उसका कोई महत्व नहीं रह जाता था। रमज़ान के दौरान वह अपने क्रिकेट प्रेमी के घर सेवया खाने जाता था और क्रिसमस पर प्लम केक खाने। वह खुश रहता था क्योंकि उसके मन में बसी कल्पना थी कि वह बॉलीवुड का हीरो है जो प्यार में पड़ेगा और अपनी पत्नी के साथ जीवन भर बिताएगा। स्कूल खत्म होते ही हर्ष के जीवन में बदलाव आने लगे। उसकी सोच बदलने लगी। एक बार जब हर्ष एक शादी में गया, तो वहाँ उसके रिश्तेदारों ने उससे कहा, "अगले पाँच-छह सालों में तुम्हारी भी शादी हो जाएगी। इसलिए जल्दी से पैसे कमाना शुरू करो और अपना घर खरीदो।" उसने यह भी सुना, "अगर तुम अगले पाँच-छह सालों में कुछ बड़ा करोगे, तो लड़कियों में तुम्हारी बहुत मांग होगी।" उसके मन में यह विचार बैठ गया कि लड़कियाँ तो पैसे से खरीदी जा सकने वाली वस्तुएँ हैं। कई बार उसके माता-पिता भी इस बात का समर्थन करते थे। हर्ष के बॉलीवुड प्रेम के प्रति नज़रिए में एक बड़ा बदलाव तब आया जब वह 17 साल का था। हर्ष का चचेरा भाई घर से भाग गया और उसने एक ऐसी लड़की से शादी कर ली जो उनकी जाति या समुदाय की नहीं थी।

यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई। चचेरे भाई के परिवार को उनके समुदाय से निकाल दिया गया क्योंकि उनके बेटे ने एक महत्वपूर्ण नियम तोड़ दिया था। उन्हें समुदाय के सभी लोगों से माफी मांगने के लिए मजबूर किया गया। उन्हें सभी रिश्तेदारों के समारोहों से

बहिष्कृत कर दिया गया और उन्हें कभी भी किसी शादी में शामिल होने की अनुमति नहीं दी गई। जब हर्ष ने यह देखा, तो उसने अपने पिता से पूछा,

“पापा, उसके माता-पिता ने कुछ भी गलत नहीं किया, उन्हें क्यों भुगतना पड़ रहा है?” हर्ष के पिता एक कूटनीतिक व्यक्ति थे। वे हर्ष को अब और अनदेखा नहीं कर सकते थे। “बेटा देखो, हम अपने समाज (समुदाय) से बने हैं, और कोई भी इसके खिलाफ नहीं जा सकता। वरना पूरे परिवार को कीमत चुकानी पड़ेगी...” उन्होंने आगे कहा, “और जो हुआ वो अच्छा हुआ। इससे हमारे समाज के सभी युवाओं को सबक मिलेगा कि अपने धर्म के खिलाफ जाने पर उन्हें इज्जत गंवानी पड़ेगी।”

हर्ष सोचने लगा, "अगर मुझे किसी दूसरी जाति या धर्म के व्यक्ति से प्यार हो जाए तो क्या होगा? अगर मेरे माता-पिता को भी घर से निकाल दिया जाए तो क्या होगा?" उसे डर सता रहा था। दुनिया में सबसे खतरनाक बात यही है कि जब आपको प्यार के नाम पर डर पर विश्वास करने के लिए मजबूर किया जाए। हर्ष ने हिम्मत करके अपने पिता से पूछा, "लेकिन पापा, प्यार का क्या होगा?"

अब तक हर्ष की मां भी इस बातचीत का हिस्सा बन चुकी थीं। उन्होंने अपने पति की आंखों में देखा।

हर्ष, समाज में सम्मान इस दुनिया में किसी भी चीज़ से ज़्यादा महत्वपूर्ण है। और सम्मान तभी मिलता है जब हमारे पास पैसा और बड़ा घर हो। तभी तुम्हें अच्छे रिश्ते मिलेंगे। हर्ष, याद रखो कि प्यार बाद की बात है; पैसा पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

हर्ष के पिता की कही बात हर्ष के प्रेम संबंधी विचारों और धारणाओं से बिलकुल विपरीत थी। हर्ष प्रेम को ही जीवन का सर्वोपरि मानता था। उसने अपने पिता की बात को चुपचाप स्वीकार कर लिया। तभी हर्ष की माँ वहाँ आई और बोली, "हर्ष, मुझसे वादा करो कि तुम हमारे समाज से बाहर किसी लड़की से शादी नहीं करोगे।"

समाज हो या कोई भी धर्म, लोगों को उनके माता-पिता से बांधता है। हर्ष के साथ भी यही हो रहा था। उसे बांधा जाने ही वाला था। "जी मम्मी, चिंता मत करो।"

हर्ष के पिता ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "पूरी बात बोलो, हर्ष। कहो कि तुम वादा करते हो कि तुम हमारी जाति के बाहर की किसी लड़की से शादी नहीं करोगे।" यह बात थोड़ी कठोर

थी। हर्ष को यह महसूस हुआ, लेकिन उसमें यह पूछने की हिम्मत नहीं थी कि अगर समाज की किसी लड़की से शादी हुई तो क्या होगा। उसने कहा, "जी पापा, मैं वादा करता हूँ कि मैं समाज के बाहर की किसी लड़की से शादी नहीं करूँगा।"

उस वादे को पांच साल बीत चुके थे। हर्ष और उसके माता-पिता को यह एहसास नहीं था कि प्यार को जबरदस्ती नहीं किया जा सकता, और कोई भी ताकत प्यार को रोक नहीं सकती।

अध्याय 12

हर्ष अब 22 साल का है। उसने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली है और प्लाईवुड का अपना कारोबार शुरू कर दिया है। हर्ष के जीवन में अब सिर्फ एक ही चीज़ बची थी - प्यार। हर्ष को बेताब होकर प्यार हो जाना था। समाज के बाहर से नहीं, क्योंकि यह उसके माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध होता, और उसे अपने पिता की कही बात भी याद थी, "इज्जत सिर्फ पैसे से कमाई जाती है।" हर्ष जानता था कि पैसा कमाने में कई साल लग जाएंगे। उसने बहुत सोचा कि इज्जत कमाने और लड़कियों को रिझाने के लिए क्या किया जा सकता है। 1) अच्छा शारीरिक गठन

एक समर्पित क्रिकेट खिलाड़ी होने के नाते, हर्ष एक सुगठित शरीर बनाना चाहता था। इसलिए उसने डेढ़ साल पहले एक जिम ज्वाइन किया और अब उसके पास वो सिक्स-पैक और मांसपेशियां हैं जिनका ज्यादातर लड़के सिर्फ सपना ही देखते हैं।

2) अपनी प्रतिभा की मदद से प्रसिद्धि प्राप्त करें।

हर्ष की प्रतिभा क्रिकेट में थी। इसलिए, जब भी उसके समाज में क्रिकेट टूर्नामेंट आयोजित होता, वह उस सीज़न का सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज बनकर उभरता था। उसके समाज की कई लड़कियां उसकी दीवानी हो गईं और जब वह छक्के मारता तो उसका हौसला बढ़ाती थीं। 3) शानदार इंस्टाग्राम अकाउंट

क्रिकेट से मशहूर होने के बाद, उसके समाज की लगभग हर लड़की उसे इंस्टाग्राम पर फॉलो करने लगी। वह जानता था कि उन्हें और भी प्रभावित करने के लिए उसका इंस्टाग्राम हैंडल कूल दिखना चाहिए। वह नियमित रूप से व्यायाम करते हुए अपने वीडियो पोस्ट करता था - अपनी मांसपेशियों को दिखाते हुए और बिना शर्ट के अपने सिक्स पैक की तस्वीरें। वह हर दिन अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज़ पर रोमांटिक शायरियां भी शेयर करता था। हर्ष किसी को खास तौर पर नहीं, बल्कि बस यह साबित करना चाहता था कि वह बिना पैसे के भी मशहूर हो सकता है और अपनी प्रतिभा से प्यार पा सकता है। आठ महीने पहले उसे वही मिला जो वह चाहता था; अचानक हर्ष के समाज की एक लड़की ने उसे इंस्टाग्राम पर मैसेज किया। उसका नाम आयुषी था। दोनों ने बात करना शुरू किया, और यकीन करना मुश्किल है, लेकिन

इंस्टाग्राम पर सिर्फ दो दिन बात करने के बाद ही दोनों ने एक-दूसरे से "आई लव यू" कह दिया।

जब आप किसी ऐसी चीज की तलाश करते हैं जो मिल ही नहीं सकती, तो अनजाने में आप किसी और चीज की तलाश करने लगते हैं।

ऊपर दिए गए कथन को पढ़कर आप शायद भ्रमित हो गए होंगे, लेकिन ऐसा तब होता है जब हम प्यार को किसी और चीज से भ्रमित कर देते हैं। हर्ष और आयुषी के साथ भी यही हुआ। हर्ष के लिए यह प्यार नहीं, बल्कि सुकून था। आयुषी खूबसूरत और प्यारी थी। वह अमीर थी और हर्ष की ही तरह उसे भी पसंद थी। सबसे अच्छी बात यह थी कि वह उसी समाज से थी। हर्ष को लगा कि वह उससे जल्दी ही प्यार कर बैठेगा।

आयुषी के लिए यह प्रेम नहीं था। यह हर्ष के समान ही था। वह जानती थी कि उसके पिता उसे अपने समाज से बाहर किसी से भी शादी करने की अनुमति नहीं देंगे। और बचपन से ही उसके मन में यह बात बिठा दी गई थी कि उनके समाज की लड़की के लिए शादी सबसे महत्वपूर्ण होती है। यह भी एक नियम था कि सभी लड़कियों की शादी 22 साल की उम्र तक हो जानी चाहिए। आयुषी 21 साल की थी और उसे हर्ष प्यारा और आकर्षक लगा। वह उसके शारीरिक गठन से आकर्षित हुई। उसने सोचा कि वे दोनों शादी कर सकते हैं।

लेकिन वे दोनों अब भी इतने भोले थे कि उन्हें लगता था कि वे अपने माता-पिता को पूरी तरह से जानते हैं।

अध्याय 13

दो दिन पहले,
हर्ष और आयुषी को एक-दूसरे से मिलते हुए लगभग छह महीने हो चुके थे। आधिकारिक तौर पर, मन में तो वे एक-दूसरे के साथ थे, लेकिन बाहरी तौर पर अनौपचारिक रूप से। उन्हें पूरा भरोसा था कि एक ही समाज से होने के कारण उनके माता-पिता उनकी शादी को स्वीकार कर लेंगे और अंततः उनकी शादी हो जाएगी।
दो दिन पहले दोपहर में आयुषी ने हर्ष को फोन किया। उसने कहा, "हे किटकैट, क्या तुम फ्री हो?"
आयुषी ने हर्ष को किटकैट नाम दिया था क्योंकि उसे यह चॉकलेट बहुत पसंद थी। पिछले छह महीनों में जब भी हर्ष और आयुषी मिले, आयुषी ने उसे एक किटकैट उपहार में दी थी।
"हां, पीरी पीरी," हर्ष ने जवाब दिया।
आयुषी को मैकडॉनल्ड्स के पिरी पिरी फ्राइज़ बहुत पसंद थे। इसलिए पापा ने उसका नाम पिरी पिरी रखा था। "ठीक है, ध्यान से सुनो। आज लंच के दौरान पापा ने मुझे कुछ लड़कों की तस्वीरें दिखाईं। उन्होंने कहा कि अब मेरी शादी का समय आ गया है क्योंकि मुझे अच्छे प्रस्ताव मिल रहे हैं," आयुषी ने बताया।
हर्ष को लगा कि उसके पिता लड़कों को "ऑफ़र" कहकर बुला रहे हैं, मानो वह कोई वस्तु हो। लेकिन वह चुप रहा। "किटकेट, कुछ कहो?" आयुषी हर्ष की राय जानना चाहती थी।
"तो अब हमें क्या करना चाहिए?" उसने पूछा।
"अरे पागल, अपने पापा से कहो और मेरा हाथ मांगो। मुझे यकीन है वो मान जाएंगे।" आयुषी ने पूरे आत्मविश्वास से कहा, जो केवल तभी आता है जब आपके अंदर बहुत मासूमियत होती है।
"हम्म। ठीक है। मैं आज रात उससे बात करूँगा, पीरी पीरी। लेकिन..." हर्ष ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।
"लेकिन क्या, किटकैट? मुझे बताओ।"
"Apna ho jayega na? I just want us to end up together" Harsh felt what he said.

वह सिर्फ प्यार के कारण शादी करना चाहता था, न कि अपने माता-पिता द्वारा तय की गई किसी व्यवस्था के कारण।

"अरे बेटा, इतनी चिंता क्यों कर रही हो! सब ठीक हो जाएगा; बस अपने पापा से आत्मविश्वास से बात करो।" आयुषी किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करना चाहती थी जिसे वह जानती हो, न कि ऐसे व्यक्ति से जिसे उसके माता-पिता ने अचानक चुन लिया हो।

उस रात, हर्ष ने खाने की मेज पर अपने माता-पिता से आयुषी के बारे में बात की। उसने उन्हें बताया कि वह उसी समाज की है और वह उससे प्यार करता है। आयुषी के बारे में जानने के बाद हर्ष के माता-पिता तटस्थ रहे। हर्ष के पिता ने कहा, "ठीक है, मैं उसके पिता से बात करके फैसला करूंगा।" अगले दिन हर्ष के पिता ने उसे बताया कि उन्होंने आयुषी के पिता से बात कर ली है और अगले दिन आयुषी और उसका परिवार उनके परिवार से मिलने आएंगे।

हर्ष की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। उसने आयुषी को फोन किया, लेकिन उसका मोबाइल बंद था। उसने व्हाट्सएप पर मैसेज किया, लेकिन आयुषी ने उन्हें पढ़ा तक नहीं। हर्ष ने इसे नजरअंदाज कर दिया और अगले दिन का इंतजार करने लगा। अगले दिन हर्ष ताजगी और खुशी से जागा। उसने नहाया, साफ सफेद कमीज और नीली जींस पहनी। उसने नाश्ता किया और आयुषी का इंतजार करने लगा।

उसने उसका नंबर डायल करने की कोशिश की, लेकिन वह स्विच ऑफ था, और व्हाट्सएप पर उसने उसके मैसेज नहीं पढ़े थे।

हर्ष ने अपने पिता से आयुषी के पिता को फोन करके यह पता लगाने को कहा कि वे किस समय तक पहुँच सकते हैं। हर्ष के पिता ने कहा, "जी हाँ, मैं उन्हें फोन कर देता हूँ।" उन्होंने अपना फोन निकाला और आयुषी के पिता को फोन किया। कॉल सिर्फ 30 सेकंड तक चली। हर्ष के पिता ने कहा, "वे दोपहर 12 बजे तक पहुँच जाएँगे।" हर्ष अपनी खुशी पर काबू नहीं रख पाया। ठीक 12:01 बजे दरवाजे की घंटी बजी। हर्ष अपने कमरे में था। घंटी की आवाज सुनते ही वह झटके से उठ गया। उसे पता था कि आखिरकार वह आ ही गई है। लेकिन वह कमरे के अंदर ही रुका रहा।

उसकी माँ ने दरवाजा खोला और सभी मेहमान अंदर आ गए। हर्ष के माता-पिता ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। जल्द ही वे सभी हॉल में बैठ गए। हर्ष अभी भी कमरे में था, लेकिन

अब उसे एहसास हुआ कि अपनी प्रेमिका से मिलने और उसे देखने का समय आ गया है। आखिरी बार उसने आईने में खुद को देखा, अपने बालों में उंगलियाँ फिराईं, अपनी कमीज़ ठीक की और आयुषी से मिलने के लिए अपने कमरे से बाहर आया, लेकिन इसके बजाय, उसे अपने जीवन का सबसे बड़ा झटका लगा।
हॉल में बैठी लड़की आयुषी नहीं बल्कि कोई और थी।

अध्याय 14

हर्ष ने लड़की और उसके माता-पिता को अपने माता-पिता से बात करते देखा। सबने हर्ष को देखा और मुस्कुराए। हर्ष का दिमाग सुन्न हो गया, उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि क्या हो रहा है। वह दौड़कर अपने कमरे में वापस चला गया।

हर्ष के पिता ने बहाना बनाकर अपने बेटे के पीछे कमरे में प्रवेश किया और दरवाजा बंद कर लिया।

“आयुषी कहाँ है, और ये कौन हैं?” हर्ष चिल्लाया। वह किसी भी क्षण रोने वाला था। उसका दिल कमजोर पड़ गया था। “बेटा, चिल्लाओ मत। मैं तुम्हें सब समझा देता हूँ। बैठ जाओ।” हर्ष के पिता शांत रहे।

"बस मुझे बता दो कि आयुषी कहाँ है। मुझे और कुछ नहीं जानना।" हर्ष खड़ा रहा और चिल्लाया।

"तुम मुझसे क्यों पूछ रहे हो? आयुषी से खुद पूछो।" इस बार उनके पिता ने अपनी आवाज थोड़ी ऊंची कर दी।

"उसका फोन बंद है," हर्ष ने घबराते हुए कहा।

हर्ष के पिता ने अपना फोन निकाला। उन्होंने अपने समाज का व्हाट्सएप ग्रुप खोला, जिसमें समाज के सभी प्रभावशाली और धनी लोग सदस्य थे। उन्होंने एक साथी सदस्य द्वारा भेजी गई तस्वीर पर टैप किया। उन्होंने हर्ष को तस्वीर दिखाते हुए कहा, "देखो, तुम्हारी आयुषी की आज सुबह ही किसी और से सगाई हो गई है।"

हर्ष को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। आयुषी और जिस लड़के से उसकी सगाई हुई थी, वे दोनों हाथ पकड़े मुस्कुरा रहे थे और कैमरे के सामने अपनी सगाई की अंगूठियाँ दिखा रहे थे।

"यह मुमकिन नहीं है। मैं अभी आयुषी से बात करना चाहता हूँ। मैं उसके घर जा रहा हूँ," हर्ष खुद को रोक नहीं पाया और उसके आँसू बहने लगे।

हर्ष के पिता ने उसे बिस्तर पर बिठाया। उन्होंने हर्ष के कंधे पर हाथ रखा, उसे एक गिलास पानी दिया और कहा, "बेटा, हमारे समाज में, अगर लड़के के पास पैसा हो तो सब कुछ

मुमकिन है। तुम्हें लग सकता है कि आज मैंने आयुषी के तुमसे मिलने आने की बात झूठ बोलकर तुम्हें बेवकूफ बनाया है, लेकिन वह और उसके पिता तुम्हें ज़िंदगी भर बेवकूफ बना सकते थे।"
"जैसा मैंने वादा किया था, मैंने कल उसके पिता को फोन किया और बताया कि हमारे बच्चे एक-दूसरे को बहुत पसंद करते हैं। इसलिए हमें शादी के बारे में बात करनी चाहिए। क्या आप जानते हैं कि उन्होंने क्या कहा?"
हर्ष ने अपने पिता की ओर देखा और चुप रहा।
उन्होंने जवाब दिया कि वह अपनी बेटी को सिर्फ एक ऐसे परिवार में देना चाहते हैं जो उनसे कहीं ज्यादा अमीर हो। उन्होंने कहा कि आयुषी की सगाई अहमदाबाद के एक लड़के से हो चुकी है और बहुत जल्द उनकी शादी हो जाएगी। फिर उन्होंने फोन काट दिया।
"तो फिर आयुषी ने हमारी शादी के बारे में मुझसे झूठ क्यों बोला...?" हर्ष अब रो रहा था।
"आयुषी जैसी अमीर लड़कियों के लिए यह बहुत बुरा है, हम तो बस खिलौने हैं। उसने तुम्हारे साथ खेला और अमीर लड़के से सगाई कर ली। तस्वीर इसका सबूत है। अगर वह सच में तुमसे प्यार करती, तो तस्वीर में मुस्कुराती नहीं।"
हर्ष को एहसास हुआ कि उसके पिता सही थे। कुछ बातें अभी भी उसके मन में स्पष्ट नहीं थीं, लेकिन तस्वीर ने उसके सभी सवालों के जवाब दे दिए। हर्ष का संदेह तब और बढ़ गया जब उसे पता चला कि आयुषी ने परसों अपना फोन बंद कर दिया था और उसे व्हाट्सएप पर ब्लॉक कर दिया था। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि प्यार में उसके साथ धोखा हुआ है। बॉलीवुड फिल्मों ने उसे सिर्फ प्यार करना सिखाया था, सपने में भी नहीं सोचा था कि कोई उसके प्यार और भावनाओं के साथ धोखा करेगा। पिता और पुत्र दोनों चुप रहे। हर्ष ने फिर पूछा, "लेकिन पापा, आपने कल मुझसे झूठ क्यों बोला, और बाहर बैठे ये लोग कौन हैं?"
हर्ष, अगर मैंने कल सच कहा होता, तो तुम यहाँ नहीं बैठे होते, और एक पिता होने के नाते मैं नहीं चाहता कि मेरा बेटा उस लड़की की वजह से खुद को चोट पहुँचाए जो उसकी कदर नहीं करती। जब भगवान एक दरवाजा बंद करते हैं, तो दूसरा दरवाजा खोल देते हैं जो हमारी कल्पना से भी बड़ा होता है। कल रात भगवान ने हमें एक और दरवाजा खोल दिया। बाहर वाला परिवार सूरत का है, और वे हमारे समाज के सबसे अमीर लोग हैं। वे चाहते हैं कि

उनकी बेटी खुशबू की शादी तुमसे हो। ज़रा उनकी विनम्रता का अंदाज़ा लगाइए। इतना पैसा होने के बावजूद भी वे अपनी बेटी को हमें देना चाहते हैं।
"पापा, मैं किसी से शादी नहीं करना चाहता।" हर्ष अभी भी रो रहा था। "हर्ष, तुम उस लड़की के लिए अपनी ज़िंदगी क्यों बर्बाद कर रहे हो जिसने तुम्हें पैसों के लिए छोड़ दिया? वो स्वार्थी थी। अब समय आ गया है कि तुम अपनी ज़िंदगी की बागडोर अपने हाथ में लो और खुशबू से शादी करो। चलो समाज को दिखाते हैं कि हम भी अमीर परिवारों के साथ अपना नाम जोड़ सकते हैं।"
हर्ष कुछ नहीं बोला। उसे पता था कि उसके पिता सही कह रहे हैं। वह गुस्से में था और कुछ करना चाहता था। इसलिए उसने अपने पिता की बात मान ली और दोनों खुशबू के साथ हर्ष का रिश्ता पक्का करने के लिए बाहर चले गए।
खुशबू के माता-पिता हर्ष को देखकर खुश थे। उन्हें लगा कि वह उनकी बात सुनेगा और शादी के बाद उनके हीरे के कारोबार में काम करेगा।
दोनों परिवारों ने अपने बच्चों को बात करने के लिए कुछ समय दिया। खुशबू और हर्ष दोनों उसके कमरे में आए। पहली बार दोनों ने एक-दूसरे को सही नजरों से देखा। हर्ष चुप रहा। उसके दिमाग में ये बात नहीं आ रही थी कि खुशबू कैसी दिख रही है या उसने क्या पहना है। वह अभी भी आयुषी के बारे में सोच रहा था। उसकी सोच तब टूटी जब खुशबू ने उससे पूछा कि क्या उस पर शादी के लिए दबाव डाला जा रहा है।
हर्ष ने संक्षिप्त लहजे में कहा, "नहीं।"
फिर उन्होंने पूछा, "आपका क्या ख्याल है?"
खुशबू बस हंस पड़ी और बोली, "हमारे समाज में लड़की की चाहत मायने नहीं रखती। वैसे भी, हमारे समाज में लड़कों की चाहत भी मायने नहीं रखती। मायने तो सिर्फ हमारे माता-पिता की चाहत रखती है। इसलिए हां, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।"
दो मिनट बाद, दोनों बाहर आए और शादी के लिए हां कह दी। वहीं पर खुशबू और हर्ष ने अंगूठियां बदलीं और उनकी तस्वीरें खींची गईं। इस बार हर्ष ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। सभी तस्वीरों में उन्होंने अपनी सबसे प्यारी मुस्कान बिखेरी। उनकी तस्वीर समाज के

व्हाट्सएप ग्रुप में साझा की गई। यह उनके समाज के लिए एक बड़ी घटना थी, क्योंकि सबसे अमीर परिवार की लड़की की सगाई उनसे कम अमीर लड़के से हुई थी।
खुशबू के परिवार ने उनसे अनुरोध किया कि वे सगाई की जानकारी अपने समाज के बाहर किसी के साथ साझा न करें क्योंकि उनके महाराज ने कहा था कि वे शादी से एक महीने पहले ही अपने रिश्ते की खबर की घोषणा करें।
हर्ष का परिवार उनकी दौलत देखकर इतना चकित रह गया कि वे हर बात पर मान गए। हर्ष और खुशबू को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। उन्होंने बस झूठी मुस्कान बिखेरी।
दो दिन बाद आयुषी ने अहमदाबाद के एक अमीर लड़के से शादी कर ली। सोशल मीडिया पर उनकी शादी की तस्वीरें देखकर हर्ष का दिल टूट गया।
जिस सोशल मीडिया ने उन्हें आयुषी से मिलवाने में मदद की थी, वही अब उन्हें असहनीय पीड़ा दे रहा था। गुस्से में आकर उन्होंने अपने इंस्टाग्राम और फेसबुक अकाउंट डिलीट कर दिए।

अध्याय 15

हर इंसान अपने जीवन में किसी न किसी मोड़ पर प्यार की तलाश करता है। प्यार पाने की चाहत के पीछे कोई विशिष्ट कारण या खोज नहीं है।
मुझे लगता है कि यह हमारे अस्तित्व का सार है, लेकिन जब धार्मिक गलत धारणाओं के कारण प्रेम की यह शक्ति रुक जाती है, तो वही प्रेम एक क्रांति का रूप ले लेता है। एक क्रांति शुरू होने वाली थी।
सागर और मलार को डॉक्टर मीरा के क्लिनिक से लौटे एक हफ्ता हो चुका था और हर्ष ने चुपके से खुशबू से सगाई कर ली थी। लेकिन उनके जीवन में अब भी उदासी छाई हुई थी।
रविवार का दिन था। सागर और मलार ने शाम 6 बजे छत पर मिलने का फैसला किया। शाम 5:30 बजे सागर ने हर्ष को फिर से फोन किया क्योंकि पिछले एक हफ्ते से उनका कोई संपर्क नहीं हुआ था। हर्ष सागर के फोन का जवाब नहीं दे रहा था। इस बार उसने फोन उठा लिया।
"बोलो भाई," सागर ने हमेशा की तरह ख़ुशी से कहा।
“बस भाई। बस चलता जा रहा है,” हर्ष की आवाज़ में थोड़ी उदासी थी। सागर ने भांप लिया, “भाई, तुम्हारी आवाज़ इतनी धीमी क्यों है?”
“कुछ नहीं भाई, बस कल थोड़ा ज्यादा व्यायाम कर लिया था। इसलिए शरीर थक गया है,” हर्ष ने झूठ बोला। वह आयुषी या अपनी सगाई के बारे में किसी से बात नहीं करना चाहता था। सागर से भी नहीं।
"अरे! भाई, एक काम करो, मेरे घर आ जाओ। चलो छत पर बैठते हैं और ताज़ी हवा में सांस लेते हैं।" सागर इस बार कुछ ज़्यादा ही नाटकीय अंदाज़ में बात कर रहा था। हर्ष सागर के घर से सिर्फ़ 15 मिनट की दूरी पर रहता था। हर्ष ने कुछ पल सोचा। पिछले पूरे हफ़्ते वह घर पर ही था। न ऑफिस, न जिम। वह इतना कमज़ोर महसूस कर रहा था, जैसे किसी ने उसकी सारी ऊर्जा चूस ली हो। "ठीक है, एक घंटे में मिलते हैं," हर्ष मान गया।
शाम के 6 बज रहे थे और सूरज डूबने ही वाला था। दिसंबर का महीना था और मुंबईवासियों को सर्दी का पहला आभास होने लगा था। जब मलार पानी की बोतल लेकर छत पर पहुँची, तो आसमान नारंगी और बैंगनी रंग का हो गया था। वह आशावादी महसूस कर रही थी और

उसके चेहरे पर मुस्कान थी। उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए और पीठ सीधी की। डूबते हुए सूरज और आसमान को देखकर उसे अच्छा लगा। क्लिनिक में पिछली बार जाने के बाद से मलार की हालत धीरे-धीरे सुधर रही थी। उसने जीवन को सकारात्मक नजरिए से देखना शुरू कर दिया था।

उसने सुबह उठते ही सबसे पहले केले खाना शुरू कर दिया और दो दिनों के भीतर ही उसकी कब्ज कम होने लगी। उसने ऑफिस में अपने मैनेजर को यह भी बताया कि स्वास्थ्य कारणों से वह हर दिन शाम 7 बजे ऑफिस से निकल जाएगी, चाहे कुछ भी हो जाए। उसे वेतन या पैकेज कम होने से कोई आपत्ति नहीं थी।

मलार की माँ इस बात से खुश थी कि उसकी बेटी पूरे सप्ताह उसके साथ खाना खाती थी। मलार को भी अच्छा लगा क्योंकि उसे सागर का एक बिल्कुल नया और स्नेही रूप देखने को मिला। वे पूरे सप्ताह मिले नहीं, लेकिन सागर उसे फोन या मैसेज करके पूछता रहता था कि क्या उसने अपनी दवाइयाँ ले ली हैं या फिर उसका हालचाल पूछता रहता था।

उन्होंने मलार से यह भी कहा, "अगर बुरे सपने फिर से आएं, तो बस मुझे फोन कर देना।" उन्होंने मलार को थायरॉइड के इलाज से संबंधित चुनिंदा लेखों के लिंक भेजे। मलार जानती थी कि सागर लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के लिए दुखी था, और उनके प्रयासों से यह स्पष्ट था।

सागर ने उसकी सोच को तोड़ते हुए कहा, "अरे भाई, क्या हालचाल है?" उसने हाई फाइव के लिए अपना हाथ उठाया।

"ब्रो क्या होता है?" मलार ने हाई फाइव देते हुए पूछा। "ब्रो आजकल का नया ट्रेंड है। कॉलेज के बच्चे एक-दूसरे को ब्रो कहते हैं। लड़का-लड़की सबको ब्रो," सागर ने विस्तार से समझाया। "लेकिन हम कॉलेज के बच्चे नहीं हैं, ब्रो," मलार भी "ब्रो-कॉलिंग-स्क्वाड" में शामिल हो गई।

"लेकिन हम एक जैसे होने का नाटक तो कर ही सकते हैं ना, भाई। हा हा हा!" सागर को अपने ही चुटकुलों पर हंसने की एक अजीब आदत थी।

मलार ने उसे अजीब नजरों से देखा और कहा, "ये बहुत हो गया भाई, चलो पानी की टंकी पर बैठते हैं।"

सागर ने उसके निर्देशों का पालन किया। बैठते ही सागर ने अपनी जींस की जेब से कुछ निकाला। यह 20 सेंटीमीटर लंबा एक पारदर्शी स्टिकर था। "मैं तुम्हारे लिए कुछ लाया हूँ," उसने कहा और स्टिकर मलार को दे दिया। मलार ने स्टिकर को फैलाया। उस पर कुछ लिखा था, "तुम खूबसूरत हो।"

इसे पढ़ने के बाद मलार चुप हो गई। वह जानती थी कि सागर ने उसे यह क्यों दिया था। उसने सागर को उसके नेक प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया।

"तुम्हें इसे अपने बाथरूम के शीशे के ऊपर चिपकाना होगा," सागर ने समझाया क्योंकि वह जानता था कि मलार को बस अपना आत्मविश्वास वापस पाने की जरूरत है, और वह वास्तव में उसकी सुंदरता पर विश्वास करता था।

मलार स्टिकर के पीछे का मकसद समझ गई। उसने उसे वापस मोड़ दिया। उसने सागर के कंधे पर ज़ोर से थपथपाया।

"इसके लिए धन्यवाद, भाई, और डॉक्टर के पास मेरे साथ आने के लिए भी धन्यवाद, साथ ही पूरे सप्ताह मेरा ध्यान रखने के लिए भी धन्यवाद।"

सागर ने जवाब दिया, "बस क्या? दोस्त को धन्यवाद कहना, चलो चलो, समय पर पानी पीते रहो।" मलार हंस पड़ी और थोड़ा पानी पिया। सागर का फोन बजा। उसने फोन उठाया। "जी भाई। ए-विंग में लिफ्ट लेकर चौथी मंजिल पर आ जाओ। मैं यहीं हूँ।" उसने फोन रख दिया।

मलार ने उलझन भरे चेहरे से पूछा, "कौन है?"

"अरे, तुम्हें पता है ना, मेरा स्कूल का दोस्त हर्ष। वो ऊब रहा था और पास में ही रहता है। तो मैंने उसे छत पर ताजी हवा लेने के लिए बुलाया," सागर ने आँख मारी।

मलार ने कहा, "ठीक है, ये तो कुछ नया है।" हर्ष लिफ्ट में चढ़ा और चौथी मंज़िल पर पहुँचते ही उसका फ़ोन बज उठा। एक अनजान नंबर था। उसने फ़ोन उठाया। खुशबू का नंबर था। उनकी सगाई को एक हफ़्ता हो गया था, लेकिन हर्ष ने उससे संपर्क करने की कोशिश नहीं की थी। "हैलो," हर्ष ने कहा।

"हाय हर्ष। खुशबू, इधर आओ," उसने कहा। अब दोनों के लिए स्थिति थोड़ी अजीब हो गई थी।

"ओह, हाय!" हर्ष ने संक्षेप में कहा।

"हमारी मुलाकात को एक हफ्ता हो गया है, इसलिए मैंने सोचा कि मैं फोन कर लूं," खुशबू ने बताया।
हर्ष सोच रहा था कि वह उससे किस बारे में बात करे। "मैं उसे क्या बताऊँ? कि मैंने उससे सगाई सिर्फ इसलिए की क्योंकि उसके पास बहुत पैसा है और मैं अपनी प्रेमिका से बदला लेना चाहता था, जिसने सिर्फ पैसे के लिए किसी और लड़के से शादी कर ली?"
"ओह, जी हाँ! दरअसल, मैं काम में व्यस्त था और अभी गाड़ी चला रहा हूँ। क्या मैं आपको बाद में कॉल कर सकता हूँ?" हर्ष ने झूठ बोला।
"ठीक है, ज़रूर," खुशबू ने कहा और फोन काट दिया।
हर्ष ने झुंझलाहट में फोन बंद कर दिया, गहरी सांस ली और छत की ओर चल दिया।
जैसे ही वह छत पर पहुँचा, सबसे पहले उसने ताज़ी शाम की हवा में साँस ली। सदियों बाद वह किसी इमारत की छत पर टहल रहा था। उसने आकाश को देखा, जो बेहद शांत लग रहा था। उसे विभिन्न पक्षियों की चहचहाहट भी सुनाई दी जो अपने घोंसले की ओर लौट रहे थे। उसने सागर को देखा। सागर की पीठ उसकी तरफ थी, और उसने एक लड़की को हंसते हुए देखा। हर्ष ने अंदाज़ा लगाया कि सागर ने कोई घटिया मज़ाक किया होगा। लेकिन ये लड़की कौन थी? सागर की प्रेमिका? नहीं, ऐसा मुमकिन नहीं था। कुछ ही दिन पहले तो वो देवकी के साथ था। "सागर ने मुझे क्यों नहीं बताया कि उसके साथ एक लड़की भी है?" हर्ष सागर की तरफ चलते हुए सोचने लगा।
हर्ष को सबसे पहले मलार ने देखा। हर्ष को देखते ही सबसे पहले उसकी सुगठित काया ने उसे आकर्षित किया। वह उसे देखती ही रही, और जब सागर ने मलार का चेहरा देखा, तो वह भी हर्ष को देखने के लिए मुड़ गया।
"हेलो भाई! हमारी छत पर आपका स्वागत है। यहाँ आपको चौबीसों घंटे शांति और ताज़ी हवा मुफ्त में मिलेगी।" सागर ने हर्ष का ज़ोरदार स्वागत किया। हर्ष उसे गले लगाने ही वाला था, लेकिन उसने बस हाथ मिलाया। "शुक्रिया भाई, लेकिन ये भाई-भाई वाली बात क्या है?" हर्ष ने सागर के इस अति उत्साहित और अजीब व्यवहार के पीछे का कारण समझते हुए कहा। यह सुनकर मलार हंस पड़ी।

हर्ष ने उसकी ओर देखा। उसने देखा कि उसकी आँखें चौड़ी हो रही हैं, और मुस्कुराने पर मलार के गालों पर पड़ने वाले डिम्पल भी उसने गौर किए। मलार ने देखा कि हर्ष उसे घूर रहा है। उसने कहा, "दरअसल, मैं इसलिए हँसी क्योंकि मैंने भी उससे यही सवाल पूछा था। वो सबको 'भाई' क्यों कह रहा है?" वह फिर हँसी, और उसे देखकर हर्ष भी मुस्कुराया। इस बार मलार ने हर्ष की मुस्कान भी देखी। उसने गौर किया कि मुस्कुराने पर हर्ष की आँखें छोटी हो जाती हैं।

सागर ने बीच में कहा, "मैं आप दोनों का परिचय कराना भूल गया था।"

"तो मलार, ये हर्ष है, मेरा स्कूल का दोस्त। ये भी मलाड में हाजी बापू रोड पर रहता है।"

"और हर्ष, ये मलार है। हम एक ही बिल्डिंग में रहते हैं, और वो मेरी बचपन की दोस्त है।" हर्ष और मलार दोनों ने हाथ मिलाया और एक-दूसरे को गर्मजोशी भरी मुस्कान के साथ अभिवादन किया।

"आओ, हर्ष, यहाँ बैठो," सागर ने कहा और हर्ष और सागर दोनों पानी की टंकी पर बैठ गए। हर्ष सागर के बगल में बैठा और सागर मलार के बगल में।

अध्याय 16

"पिछले हफ्ते तुम कहाँ थे? न कोई कॉल, न कोई मैसेज?" सागर ने हर्ष से पूछा।
अब हर्ष सागर को सच नहीं बता सकता था, खासकर मलार के सामने तो बिल्कुल नहीं, क्योंकि वह उसे जानता ही नहीं था।
"मैं काम में व्यस्त था। प्लाईवुड का नया स्टॉक आ गया था, इसलिए मैं उसे स्टॉक कर रहा था, गिन रहा था और ग्राहकों को ठीक से भेज रहा था। बहुत काम था, आप समझ रहे हैं ना," हर्ष ने बड़ी चतुराई से झूठ बोला।
यह सुनकर मलार उससे पूछना चाहती थी कि वह असल में क्या करता है, लेकिन वह चुप रही क्योंकि उसे लगा कि किसी से उसका पेशा पूछना सबसे उबाऊ काम है।
हर्ष ने मलार की ओर मुड़कर देखा। मलार सूरज की ओर और शून्य की ओर देख रही थी। हवा चलने के कारण उसने अपने बाल दाहिने कान के पीछे कर लिए।
असभ्य न दिखने की परवाह किए बिना, हर्ष ने मलार से पूछा, "तो मलार, तुम क्या करती हो? मतलब, काम से जुड़ी चीज़ें!" वाक्य खत्म करते-करते हर्ष कांप रहा था। उसने मन ही मन खुद को कोसना शुरू कर दिया कि वह एक साधारण वाक्य भी ठीक से नहीं बना पा रहा है।
मलार ने हर्ष की आँखों में देखा। वह थोड़ा मुस्कुराई और बोली, "मैं चार्टर्ड अकाउंटेंट हूँ। मैं बॉम्बे की एक मल्टीनेशनल कंपनी में काम करती हूँ।" सागर ने बीच में टोकते हुए कहा, "तुम बॉम्बे में काम करने की बात क्यों कहती हो? मुंबई और बॉम्बे एक ही हैं। तुम्हें यह दिखाने की क्या ज़रूरत है कि तुम शहर में काम करती हो? और हम सब मुंबई के बाहरी इलाके में रहते हैं, बॉम्बे में नहीं।"
"अरे भाई, बॉम्बे कहने का उसका मतलब था कि वह उस शहर में काम करती थी, और आज भी जो लोग उस शहर में काम करते हैं या रहते हैं, वे मुंबई को बॉम्बे ही कहते हैं।" हर्ष को भी नहीं पता था कि उसने मलार का बचाव क्यों किया। यह सुनकर मलार हंसने लगी। उसने कहा, "सागर, तुम्हारा दोस्त तुमसे ज़्यादा समझदार है। इसीलिए तुम्हारा तीन पन्नों का पत्र खारिज हो गया।" मलार और ज़ोर से हंसने लगी। हर्ष और सागर दोनों उसे देखते रहे। कुछ पल बाद मलार को एहसास हुआ कि उसे हर्ष के सामने प्रेम पत्र का ज़िक्र नहीं करना चाहिए

था, क्योंकि सागर ने शायद उसे इसके बारे में कुछ नहीं बताया होगा। "ओह, माफ़ करना। मैं तो बस मज़ाक कर रही थी," मलार ने माफ़ी मांगी। इस बार हर्ष और सागर ने एक-दूसरे को देखा और हंसने लगे। हर्ष ने कहा, "मुझे उसके प्रेम पत्रों के बारे में सब पता है।"
हर्ष की बात सुनकर मलार ने कहा, "तुम्हें पता है, मैंने उसे चिट्ठी भेजने से पहले ही चेतावनी दे दी थी। मैंने उससे कहा था कि इस तरह की चिट्ठी भेजना अभी जल्दबाजी होगी।" सागर ने बड़े ही सलीके से जवाब दिया। मानो वह जीवन के सबक पर उपदेश दे रहा हो, "जीवन का मतलब ही है गिरना और फिर उठना।" हर्ष कहना चाहता था, "बेवकूफों के कटने के बाद सब यही कहते हैं," लेकिन उसने खुद को रोक लिया और बस हंस दिया।
सागर की बातें सुनकर मलार अपनी हंसी नहीं रोक पाई। वह खिलखिलाकर हंसते हुए बोली, "बेवकूफों को काटने के बाद सब यही कहते हैं।" विडंबना यह थी कि उन तीनों को ही छोड़ दिया गया था। मलार की बात सुनकर हर्ष चौंक गया। "ये मेरे मन की बात कैसे पढ़ लेती है या ये महज़ एक संयोग है...?" वह बस मलार को हंसते हुए देखता रहा।
दूसरी ओर, इतने लंबे समय बाद मलार को हंसते देख सागर खुश हो गया। स्थिति को और सहज बनाने के लिए उसने कहा, "मुझे हर्ष को नहीं बुलाना चाहिए था; तुम दोनों मेरे खिलाफ साजिश रच रहे हो।"
"अरे, मेरे प्यारे सागर को बुरा लगा? मुझे माफ करना," मलार ने सागर के गाल खींचते हुए कहा।
हर्ष ने सागर और मलार के बीच के सहज संबंध को देखा। उसने बस अपनी मुस्कान बरकरार रखी।
"बस करो, मलार, मेरे गाल दुख रहे हैं!" सागर ने नकली गुस्सा दिखाया और मलार के गाल खींचने की कोशिश की।
"अब तुम्हें पता चलेगा कि तुमने मेरे गाल कितनी ज़ोर से खींचे थे," सागर ने कहा। लेकिन सागर के कुछ कहने से पहले ही मलार पानी की टंकी से कूद गई। अब वह दोनों लड़कों के सामने खड़ी थी।
सागर को याद आया कि उसे कुछ बहुत ज़रूरी बात कहनी है। "बस करो, मलार, अब मेरी बात ध्यान से सुनो।"

"जी सर," मालार ने मुस्कुराते हुए कहा।
सागर ने हर्ष की ओर देखते हुए कहा,
"तो, आप जिम के दीवाने हैं। मुझे आपकी मदद चाहिए।"
हर्ष ने सिर हिलाया।
सागर ने आगे कहा, "दरअसल, मलार पास के ही किसी जिम में शामिल होना चाहती है। अगर आप जिम में दाखिले और व्यायाम की दिनचर्या तय करने में उसकी मदद करें तो बहुत अच्छा होगा।"
हर्ष को इसकी उम्मीद नहीं थी, लेकिन यह पहली बार था जब किसी ने उसकी पसंदीदा चीज़ के बारे में उससे मदद मांगी थी। उसने कहा, "ज़रूर, मैं मदद करूंगा।"
मलार को सागर से ऐसी उम्मीद नहीं थी। हर्ष को देखकर मलार समझ गई थी कि वह बेहद फिट है और मलार बिल्कुल अनफिट है। उसे हर हाल में मना करना ही था।
उसने सागर को गुस्से से घूरते हुए कहा, "तुम उसे क्यों परेशान कर रहे हो? अभी तो मैं जिम जॉइन नहीं करना चाहती। अगले महीने कर लूंगी।"
"अगर तुम कल जिम नहीं जाओगे तो मैं डॉक्टर मीरा को फोन करके तुम्हारी शिकायत करूंगी।"
सागर को पता था कि यह तरकीब काम करेगी। मलार असहज महसूस करने लगी। उसने सोचा कि हर्ष जैसा फिट लड़का उसके मोटे शरीर के बारे में क्या सोचेगा।
हर्ष ने मलार के चेहरे के हाव-भाव देखे। वह सहज महसूस नहीं कर रही थी। उनकी नज़रें पहली बार मिलीं।
हर्ष ने कहा, "इतनी चिंता मत करो। बस एक दिन के लिए आओ। अगर तुम्हें अच्छा लगे तो तुम आगे भी आ सकते हो।"
इस बार मलार मना नहीं कर सकी। उसने बस "ठीक है" कह दिया। सागर बोला, "वाह! तो मलार, तुम्हारे लिए कौन सा समय ठीक रहेगा?" मलार ने सोचकर कहा, "शायद रात के 9 बजे।"
"दरअसल, मैं सुबह जाता हूँ..." हर्ष कुछ और कहने ही वाला था कि मलार ने बीच में ही टोक दिया।

"अगर आप रात में खाली नहीं हैं तो कोई बात नहीं। हम किसी और दिन जा सकते हैं।"
"शांत हो जाओ। मुझे कोई दिक्कत नहीं है। क्या तुम एक काम कर सकते हो? बस मेरा नंबर ले लो और कल जब तुम तैयार हो जाओ तो मुझे कॉल कर देना," हर्ष ने मुस्कुराते हुए कहा।
जब हर्ष ने मलार के लिए अपना समय निकाला तो मलार को अच्छा लगा। उसने हर्ष को धन्यवाद दिया और अपना मोबाइल निकाला। हर्ष ने अपना नंबर मलार को दिया। मलार ने उसे "हर्ष जिम" के नाम से सेव कर लिया। फिर उसने उस नंबर पर कॉल किया, लेकिन वह बंद था। मलार ने हर्ष से कहा, "यह बंद है।"
"हाँ, मेरी बैटरी खत्म हो गई है। क्या आप मुझे व्हाट्सएप पर 'हाय' लिख सकते हैं? मैं आपका नंबर वहीं से सेव कर लूंगा," हर्ष ने कहा।
उस रात जब हर्ष ने अपना फोन ऑन किया तो उसे एक अज्ञात नंबर से व्हाट्सएप मैसेज मिला।
"अरे हर्ष! मलार इधर। मैं सागर के सामने ये नहीं कह सकती थी, लेकिन अगर तुम्हें असहज लग रहा है तो कोई बात नहीं।"
हर्ष हँसते हुए बोला, "कोई बात नहीं। चिंता मत करो।" इसके बाद उसने उसका नंबर "मलर" के नाम से सेव कर लिया।
उसे आश्चर्य हुआ कि "मलार" नाम का क्या अर्थ है। सहज ही उसने मलार को संदेश भेजा। "आपके नाम का क्या मतलब है?"
जब मलार को हर्ष का यह संदेश मिला, तो उसने सबसे पहले उसकी डीपी देखी। हर्ष ने टी-शर्ट नहीं पहनी थी और वह अपनी सुगठित काया का प्रदर्शन कर रहा था। मलार उसे देखती रही और बाद में उसने हर्ष के संदेश का जवाब दिया। "मलार का मतलब है, रास्ता।"
उस रात मलार अपनी भावनाओं को ठीक से व्यक्त नहीं कर पाई क्योंकि यह पहली बार था जब किसी ने उससे उसके नाम का अर्थ पूछा था।

अध्याय 17

अगला दिन कई लोगों के लिए एक सामान्य सोमवार था, लेकिन हर्ष और मलार के लिए ऐसा बिल्कुल नहीं था।

हर्ष यही सोचता रहा कि एक दिन पहले ही जिस लड़की से वह मिला था, वह उसके साथ जिम में कसरत करने के लिए कैसे राजी हो गई? उसे सागर की डॉक्टर मीरा के बारे में कही गई बात भी याद आ गई। क्या मलार को कोई स्वास्थ्य समस्या थी? वह अपने दफ्तर में था, लेकिन उसका मन मलार के ख्यालों में डूबा हुआ था। पहली बार कोई उसकी शारीरिक बनावट में नहीं, बल्कि उसे बनाने की प्रक्रिया में दिलचस्पी ले रहा था। उसकी पूर्व प्रेमिका आयुषी उसके शरीर से आकर्षित तो थी, लेकिन उसने कभी उससे यह नहीं पूछा कि उसने जिम में कितनी मेहनत की है, और खुशबू ने तो उसके शरीर पर ध्यान ही नहीं दिया था।

मलार को सूरज की ओर खालीपन में देखते हुए देखकर उसके मन में एक गहरा घाव सा हो गया। वह दृश्य बार-बार उसके दिमाग में कौंध रहा था। दूसरी ओर, मलार ने उस दिन छुट्टी ले ली थी। पिछली रात से ही वह उस लड़के के साथ जिम जाने के बारे में सोच रही थी जिससे वह एक दिन पहले ही मिली थी। वह घबराई हुई थी और उसके मन में डर बैठ गया था। अगर वह ठीक से व्यायाम नहीं कर पाई तो क्या होगा? व्यायाम करते समय दूसरे लोग उसे कैसे देखेंगे? वजन कम करने के लिए कौन से व्यायाम करने चाहिए? उसके मन में कई सवाल थे, लेकिन जवाबों के नाम पर सिर्फ उलझन थी। एक और सवाल उसके मन में आया और उसने तुरंत गूगल पर सर्च किया, "मोटी लड़कियों को जिम में क्या पहनना चाहिए?"

उसने कुछ लेख पढ़े और खरीदारी करने का फैसला किया। वह आमतौर पर अपनी माँ के साथ खरीदारी करने जाती थी, लेकिन उस दिन उसने अकेले ही खरीदारी करने का फैसला किया क्योंकि उसकी माँ ऑफिस में थी।

दोपहर में, उसने एक ऑटो लिया और मलाड वेस्ट स्थित इनऑर्बिट मॉल पहुंची। मॉल के अंदर पहुंचते ही वह सीधे नाइकी शोरूम में चली गई। वहां एक युवा सहायक ने मलार से संपर्क किया।

"जी मैडम, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?" उसने विनम्रता से पूछा। "दरअसल, मैं आज से जिम ज्वाइन कर रही हूँ, इसलिए मैं कुछ जिम के कपड़े और जूते ढूंढ रही थी," मलार ने झिझकते हुए कहा।
"जी मैडम। पहले मैं आपको स्पोर्ट्स शूज़ दिखा देता हूँ," सहायक ने कहा। उसने जल्दी से उन्हें कुछ स्पोर्ट्स शूज़ दिखाए। मलार को जो शू पसंद आया, वह काले रंग का था और उस पर नाइकी का गुलाबी लोगो बना हुआ था।
"इसकी कीमत क्या है?" उसने पूछा।
"मैडम, ये 15 हज़ार का है," सहायक ने आत्मविश्वास से कहा। "ये इतना महंगा क्यों है?" मलार ने सहायक से पूछा, क्योंकि बाकी जूतों की कीमत 10 हज़ार से कम थी।
"दरअसल, महोदया, आपके हाथ में जो जूते हैं, उन्हें सेरेना विलियम्स ने अपने टेनिस मैच के दौरान पहना था।"
मलार ने कुछ पल सोचा। उसे लगा कि अगर सेरेना विलियम्स, जिन्हें वह उस दिन से पहले नहीं जानती थी, ने टेनिस खेलते समय ये जूते पहने होते, तो ये जूते वाकई खरीदने लायक होते। उसने तुरंत उन्हें खरीद लिया। उसने एक काले रंग का योगा पैंट, एक स्पोर्ट्स ब्रा, नीले और भूरे रंग की फिटनेस टी-शर्ट और एक हुडी भी खरीदी।
उसे अच्छा लगा क्योंकि काफी समय बाद उसने खरीदारी की थी। खरीदारी के बाद उसने एक सादा डोसा और एक कप फिल्टर कॉफी भी पी। उसका दिन अच्छा गुजर रहा था, लेकिन तभी उसे एहसास हुआ कि असली चुनौती तो अभी उसके सामने है।
मलार ने समय देखा। रात के 8 बज चुके थे। बस एक घंटा बाकी था। वह घबराई हुई थी और उसे अपने डर से लड़ना था।
जब वह सागर और अपनी मां जैसे अपने लोगों के साथ होती थी, तो वह जानती थी कि वे उसका न्याय नहीं करते या उसकी दिखावट की परवाह नहीं करते, लेकिन उस दिन वह कुछ अनजान लोगों के सामने व्यायाम करने जा रही थी, और इससे वह असुरक्षित महसूस कर रही थी।

आखिरकार, दस मिनट तक इस बात पर विचार करने के बाद कि वह जिम जा सकती है या नहीं, वह उठी और नाइकी शोरूम से खरीदे गए व्यायाम के कपड़े पहने और आईने में देखने के लिए बाथरूम के अंदर चली गई।

नकारात्मक विचारों का सैलाब उसके मन में उमड़ आया। व्यायाम करते समय जब उसके बड़े-बड़े अंग हिलेंगे तो लोग क्या सोचेंगे? अगर कुछ पुरुष उसके शरीर को घूरने लगें तो क्या होगा? उसने मुड़कर आईने में अपना शरीर देखा और उसी क्षण उसकी सारी उम्मीदें टूट गईं। उसने जो योगा पैंट पहनी थी, उसमें उसके नितंब बहुत बड़े दिख रहे थे और उसे असहज महसूस हो रहा था। एक और विचार ने उसका मनोबल तोड़ दिया - अगर व्यायाम करते समय लोग उसके नितंबों को घूरते रहे तो क्या होगा? उसकी आँखों में आँसू भर आए और उसने सोचा, "मैं अपने जीवन में इतनी असहज स्थिति में क्यों हूँ?"

"यह थाइरोइड ग्रंथि मुझसे क्यों चिपकी रहती है और मेरे शरीर के कुछ खास हिस्सों में असमान रूप से मेरा वजन क्यों बढ़ाती है?"

अचानक उसका फोन बजा और वह वर्तमान क्षण में लौट आई। उसने अपने आंसू पोंछे और फोन लेने के लिए बाहर गई। यह डॉ. मीरा का फोन था। मलार ने फोन उठाया। "हे मलार, सागर ने अभी मुझे मैसेज किया है कि तुम आज जिम ज्वाइन कर रही हो," डॉ. मीरा की आवाज़ सकारात्मक और खुशमिजाज थी।

"डॉक्टर साहब, मुझे नहीं लगता कि मैं कभी जिम जा पाऊंगी।" मालार हताश लग रही थी।

"क्यों, बेटी? क्या हुआ?"

मलार ने अपनी गहरी असुरक्षाओं को डॉ. मीरा के साथ साझा किया। "जिम में मलार, हर कोई अपनी-अपनी लड़ाई लड़ रहा होता है, इसलिए किसी को इस बात की परवाह नहीं होती कि कोई कैसा दिखता है, और तुम्हें एक आदर्श देने के लिए, मेरे पास एक है," डॉ. मीरा ने शांत भाव से समझाया।

"कौन?" मलार ने पूछा।

क्या आपने सेरेना विलियम्स के बारे में सुना है?

"मैंने उसके बारे में आज ही सुना। मुझे बस इतना पता है कि वह टेनिस खेलती है," मलार ने ईमानदारी से जवाब दिया।

"ठीक है, कॉल को स्पीकर पर रखो और उसके बारे में गूगल पर सर्च करो। देखो वो कैसी दिखती है।" मलार ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था, और उसने सेरेना की एक तस्वीर देखी जिसमें वो टेनिस खेल रही थी और उसे पूरा भरोसा था कि वो पूरी दुनिया जीत सकती है। मलार ने उसके शरीर का रंग देखा, जो काला था, लेकिन उसका शरीर सुडौल, गठीला और अच्छी तरह से गढ़ा हुआ लग रहा था।

मलार को समझ आ गया कि डॉ. मीरा ने उसे सेरेना की तस्वीरें देखने के लिए क्यों कहा था। डॉ. मीरा फोन पर बात करती रहीं।

"मलर, सेरेना विलियम्स दुनिया की महानतम टेनिस खिलाड़ियों में से एक हैं। लेकिन, जब भी वह खेलने आती हैं, तो उनके कपड़ों और बच्चे को जन्म देने के बाद बढ़े हुए वजन को लेकर उनकी आलोचना की जाती है।"

"लोग हमेशा कहते हैं कि सेरेना का शरीर कितना सुडौल है। लोग उसके तंग कपड़े पहनने पर सवाल उठाते हैं, लेकिन मलार जब मैदान पर उतरती है, तो अपने खेल और रवैये से अपने प्रतिद्वंद्वियों को धूल चटा देती है।" मलार समझ गई कि डॉ. मीरा क्या कहना चाह रही थीं। उस समय उन्हें प्रेरणा की बहुत ज़रूरत थी। "धन्यवाद, डॉक्टर।" मलार डॉ. मीरा की मदद और मार्गदर्शन के लिए हमेशा आभारी रहेंगी।

"मालर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम्हारा नितंब कितना छोटा या बड़ा है या लोग तुम्हें कैसे देखते हैं या तुम्हारे बारे में क्या राय रखते हैं। मायने यह रखता है कि तुम खुद को कैसे देखती हो।" मालर को कुछ याद आया। उसने डॉक्टर को एक बार फिर धन्यवाद देकर फोन काट दिया।

अब उसे वह आत्मविश्वास मिल गया था जिसकी उसे तलाश थी। उसने सागर द्वारा उस दिन उपहार में दिया गया स्टिकर निकाला। वह बाथरूम में गई और स्टिकर को दर्पण के ऊपर चिपका दिया।

उसने आईने में अपनी आंखों में देखा, मुस्कुराई और स्टिकर पर लिखी हुई बात पढ़ी।

"मैं सुंदर हूँ।"

***

हर्ष ने अपनी सबसे अच्छी काली ट्रैक पैंट और अपनी पसंदीदा ग्रे रंग की जिम टी-शर्ट पहनी, जिस पर लिखा था, "चलो मांसपेशियां बनाते हैं।" उसने अपने बालों में जेल लगाया और शीशे में देखा। उसने खुद को गठीला और तैयार पाया।

ठीक रात 9 बजे, वह अपने जिम के बाहर खड़ा था। उसे उम्मीद थी कि मलार उसे फोन करेगी या मैसेज करके बताएगी कि वह कहाँ है, लेकिन मलार की तरफ से कोई सूचना नहीं आई।

"क्या उसने अपनी योजना छोड़ दी...?"

"क्या मुझे उसे फोन करके पूछना चाहिए...?"

मैं किसी लड़की को सीधे कैसे कॉल कर सकता हूँ?

हर्ष के मन में कई विचार थे, लेकिन फोन की घंटी बजते ही वे सब टूट गए। यह मलार का फोन था।

"हाय हर्ष, मुझे देर हो गई, इसके लिए माफ़ करना। मैं रास्ते में हूँ। क्या आप मुझे पता बता सकते हैं?" मलार ने ऑटो-रिक्शा में बैठे हुए कहा। हर्ष ने उसे रास्ता दिखाया और पाँच मिनट के भीतर मलार हर्ष के सामने खड़ी थी। हर्ष ने उसे देख लिया, इससे पहले कि मलार को इसका एहसास भी होता। मलार ने रिक्शावाले को किराया दिया और पीछे मुड़ी। इस बार उसने हर्ष को देखा। उसने मुस्कुराते हुए हाथ उठाकर कहा, "हाय।" और सड़क पार कर ली। "अरे!" हर्ष ने मुस्कुराते हुए कहा।

"हेलो! मुझे देर हो गई, इसके लिए माफ़ करना," मलार ने मुस्कुराते हुए कहा। "अरे, कोई बात नहीं! क्या हम अंदर चलें?" हर्ष ने मलार को देखते हुए घबराते हुए पूछा। वह उससे नज़रें नहीं मिला पा रहा था। "हाँ, चलो चलते हैं," मलार ने उत्साह से कहा और वे जिम में चले गए।

***

सबसे पहले हर्ष ने मलार को पंजीकरण और फीस जमा करने में मदद की। फिर उसने मलार से अपना बैग अपने लॉकर में रखने और जूते पहनने को कहा। दोनों तैयार हो गए और अंत में जिम के मुख्य क्षेत्र में प्रवेश किया। जिम का रंग काला और लाल था। तेज़ संगीत बज रहा था और कसरत कर रहे सभी लोग अपने-अपने काम में व्यस्त थे। हर्ष और मलार, जो अभी-अभी अंदर आए थे, उनकी तरफ किसी ने देखा तक नहीं।

हर्ष ने कहा, "चलो वार्म-अप ज़ोन में चलते हैं।" मलार ने सिर हिलाया।
वार्म-अप जोन में, मलार और हर्ष दोनों दर्पण की ओर मुंह करके एक दूसरे के बगल में खड़े थे।
“हर कसरत से पहले वार्म-अप करना ज़रूरी है, और यह लगभग सभी के लिए एक जैसा ही होता है। तो चलिए शुरू करते हैं,” हर्ष ने समझाया। “ठीक है।” मलार ने हमेशा की तरह एक मेहनती छात्रा की तरह सिर हिलाया, और दोनों ने शुरू किया। हर्ष ने निर्देश दिए और मलार ने उनका पालन किया। दोनों ने कुछ ट्विस्ट, कंधे घुमाना, गर्दन हिलाना और पैरों को स्ट्रेच करना किया। “ठीक है, चलिए व्यायाम शुरू करते हैं। आज हम बहुत हल्की कसरत करेंगे क्योंकि यह आपका पहला दिन है। क्या आपको स्क्वैट्स करना आता है?” हर्ष ने पूछा।
“नहीं।” मलार ईमानदार थी, और हर्ष को अपनी मदद करते देखकर उसे अच्छा लगा। उसने आसपास देखा और दो बेहद पतली लड़कियों को अपने पास से गुजरते हुए देखा। मलार ने सोचा कि वह उनके जैसी पतली और तंदुरुस्त नहीं हो सकती। हर्ष उसकी बात समझ गया।
"चलो शुरू करते हैं। मैं तुम्हें बताता हूँ कि इसे कैसे करना है। ध्यान केंद्रित करो! इधर-उधर मत देखो," हर्ष ने उस पर झल्लाते हुए कहा।
"अरे, माफ़ कीजिए, माफ़ कीजिए!" मलार ने अपना ध्यान केंद्रित किया और सीधी खड़ी हो गई। हर्ष ने एकदम सही तरीके से स्क्वैट किया। मलार ने इसे ध्यान से देखा। फिर मलार ने भी ऐसा करने की कोशिश की, लेकिन हर्ष ने उसे रोक दिया।
"नहीं, नहीं! ऐसे नहीं। आपके कूल्हे नीचे जाने चाहिए, और इसके साथ ही आपके घुटने अपने आप मुड़ जाएंगे," हर्ष ने समझाया।
हर्ष के आसपास उसकी घबराहट बढ़ती जा रही थी। उसने अपनी ज़िंदगी में किसी भी लड़की के साथ ऐसा महसूस नहीं किया था। "हिप्स" शब्द सुनते ही मलार सचेत हो गई। उसने इधर-उधर देखा कि कहीं कोई उसे देख तो नहीं रहा। उसने स्क्वैट्स करने की कोशिश की, लेकिन हर बार नीचे जाते समय वह अपने नितंबों को वापस लाने से पहले अपने घुटने मोड़ रही थी। यह ठीक नहीं था, और हर्ष को यह पसंद नहीं आया।
"मलार, रुको! तुम सही से नहीं कर रही हो। रुको, मैं तुम्हारी मदद करता हूँ।" इसके बाद जो उसने किया, उसके लिए उसे बहुत हिम्मत जुटानी पड़ी। वह मलार के पीछे गया। "अपने पैरों

के बीच की दूरी बढ़ाओ और अपनी उंगलियों को बाहर की ओर रखो," हर्ष ने आदेश दिया। मलार ने वैसा ही किया जैसा कहा गया था।

“अब बस इतना ध्यान रखना कि अपनी कमर को ऐसे नीचे करो जैसे कुर्सी पर बैठने की कोशिश कर रही हो। मैं तुम्हारी मदद करूंगा,” हर्ष ने कहा और मलार की कमर पर हाथ रख दिए। यह पहली बार था जब उन्होंने एक-दूसरे को छुआ था। “शुरू करो,” हर्ष ने ज़ोर से कहा।

मलार ने अपने कूल्हों को स्थिर रखते हुए उन्हें नीचे की ओर धकेला। हर्ष ने उसकी कमर को पकड़कर उसके कोर और कूल्हों को स्थिर किया। अंत में, उसने अपना पहला परफेक्ट स्क्वाट किया।

"चलो, बहुत बढ़िया! हम 20 स्क्वैट्स करेंगे," हर्ष ने चिल्लाकर मलार को प्रोत्साहित किया। बीस स्क्वैट्स के दौरान, मलार और हर्ष के शरीर एक-दूसरे के संपर्क में थे। दोनों को कुछ ऐसी भावनाएं महसूस हुईं जो उनके लिए अनजान थीं। लेकिन, दोनों ने सशक्त महसूस किया, खासकर मलार ने। निमित के अलावा, उसे पहले कभी किसी ने छुआ नहीं था। लेकिन हर्ष का यह स्पर्श अंतरंग और सुरक्षित महसूस हुआ।

बीस स्क्वैट्स पूरे होने के बाद हर्ष ने कहा, "बहुत बढ़िया!" मलार ने अपना हाथ आगे बढ़ाया। हर्ष ने उससे हाथ मिलाया। मलार ने आँखों में अनदेखे आँसू लिए हर्ष की ओर देखा।

अगले एक घंटे में हर्ष ने मलार को सभी अभ्यासों में मदद की। स्पर्श से कहीं अधिक महत्वपूर्ण वे भावनाएँ थीं जो उन्होंने एक-दूसरे के साथ साझा की थीं।

अध्याय 18

संपूर्ण ब्रह्मांड रहस्यमय ढंग से काम करता है, और अभी भी ऐसे कई प्रश्न हैं जिनके उत्तर मनुष्य को ज्ञात नहीं हैं। उन्हीं प्रश्नों में से एक है, "एक अनजान लड़का और लड़की अचानक एक-दूसरे से क्यों मिलते हैं और प्यार में पड़ जाते हैं?"

हर्ष और मलार रात 10:30 बजे जिम से बाहर आए। हर्ष ने पूछा, "तो, अपने पहले वर्कआउट के बाद कैसा महसूस कर रहे हो?"

उन्हें वही उत्साह महसूस हुआ जो उन्हें पहली बार जिम से बाहर आने पर हुआ था।

"मुझे ताज़गी महसूस हो रही है। मुझे लगा था कि व्यायाम करना कठिन होगा, लेकिन आपने इसे आसान बना दिया," मलार ने सच्चे मन से कहा।

"अरे यार, रहने दो! मैंने तो बस पिछले एक साल में जो सीखा है, वही बताया है," हर्ष मुस्कुराया।

"ओह, तुम भी तो मोटे थे, क्या...?" हर्ष के वर्कआउट सेशन के बाद उसकी अच्छी फिजिक देखकर मलार ने एक बार फिर पूछा। "नहीं, नहीं, बात बिल्कुल उलट थी। मैं दुबला-पतला था और आत्मविश्वास की कमी थी," हर्ष ने इशारों से समझाते हुए कहा और अपने फोन से एक साल पुरानी तस्वीर दिखाई।

"हे भगवान! तुमने ये सब सिर्फ एक साल में कैसे कर लिया?" हर्ष का रूप देखकर मलार दंग रह गई। कुछ मिनट पहले ही उसने हर्ष का सम्मान करना शुरू किया था, जब हर्ष ने उसकी परवाह किए बिना ही उसे व्यायाम में मदद की थी। वो बस वहाँ मौजूद था, मदद कर रहा था। लेकिन अब हर्ष का ये रूप देखकर मलार का सम्मान और भी बढ़ गया। "दूसरों को कभी हार न मानने और लगातार प्रयास करने की सलाह देना आम बात है, लेकिन असली राज यही है, कभी हार न मानो और व्यायाम करते रहो और सही खान-पान अपनाओ," हर्ष ने अपने अनुभव से कहा।

अब तक वे दोनों हर्ष की स्कूटी की ओर चल रहे थे, जो पास की एक गली में खड़ी थी। ज़्यादातर दुकानें बंद थीं। गली में शोर कम था और शांति थी; हर्ष और मलार चल रहे थे।

वे दोनों एक-दूसरे में पूरी तरह लीन थे और अपने आसपास की दुनिया से बेखबर थे। वे एक स्ट्रीट लाइट के नीचे रुके, जहाँ हर्ष की स्कूटी खड़ी थी।
"मैं एक बात कबूल करना चाहती हूं," मलार ने हर्ष की आंखों में देखते हुए कहा।
"जी?" हर्ष ने सिर हिलाया। वह उत्सुक था।
"मैं आज आना नहीं चाहती थी क्योंकि मुझे लगा था कि सब लोग मेरे रूप-रंग के आधार पर मेरा आकलन करेंगे। आपको देखकर मेरी घबराहट और बढ़ गई क्योंकि आप बेहद फिट हैं और मैं बेहद अनफिट हूं," उसने हंसते हुए अपने दर्द और असुरक्षाओं को हंसी के मुखौटे के पीछे छिपा लिया।
लेकिन हर्ष ने उसकी आँखों में देखा कि कुछ गड़बड़ है। वह उसकी आँखों में देखता रहा और बोला, "मलर, जब मैंने जिम जॉइन किया, तो पहले छह महीने कुछ नहीं हुआ। मेरा वज़न 500 ग्राम भी नहीं बढ़ा। मुझे गाइड करने वाला कोई नहीं था, और धीरे-धीरे मेरी उम्मीद टूटने लगी। लेकिन फिर मैंने एक बॉडीबिल्डर का वीडियो देखा, जिसके पैर नहीं थे, फिर भी वह रोज़ाना वर्कआउट करता था, सब कुछ बदल गया, और आज मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ। कोई परवाह नहीं करता कि हम कितने अनफिट या फिट हैं; यह सिर्फ इस बात पर निर्भर करता है कि हम कितनी परवाह करते हैं।" हर्ष ने अपना छोटा सा भाषण समाप्त किया। उसकी आँखों में ऐसा भाव था मानो उसके भाषण पर आस-पास के लोग तालियाँ बजा रहे हों।
मलार ने हर्ष के हाथ को छुआ। यह उन स्पर्शों में से एक था, जिसमें वह अपने शब्दों से कहीं अधिक कहना चाह रही थी। "आपके शब्दों के लिए धन्यवाद; आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि मुझे उनकी कितनी ज़रूरत थी," मलार ने आँखों में चमक के साथ कहा।
"आपका स्वागत है," हर्ष ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। एक ऐसी मुस्कान जो हर चीज के लायक थी।
उसका फोन बजा; उसने फोन निकाला। उसके पिता का फोन था, इसलिए उसने उसे साइलेंट करके वापस रख दिया। मालार ने इसे भांप लिया और कहा,
मुझे लगता है अब जाने का समय आ गया है।
"जी हां, जरूर, आराम से बैठिए; मैं आपको छोड़ देता हूं," हर्ष ने बेपरवाही से पूछा। "अरे नहीं, मैं ऑटो ले लूंगी।"

"इस समय यहां से गाड़ी मिलना मुश्किल है, और चिंता मत करो, चाहे कितनी भी महंगी गाड़ी हो, मैं तुमसे पैसे नहीं लूंगा," हर्ष ने इतने व्यंग्य के साथ कहा कि मलार हंस पड़ी।
वह हंस पड़ी और बोली, "ठीक है"।
हर्ष स्कूटी पर बैठा, उसे स्टार्ट किया और एक मोड़ लिया। फिर मलार पीछे बैठ गई और वे दोनों स्कूटी की सवारी करने लगे, लेकिन मलार को एक और बात का पता नहीं था। वह हर्ष के साथ पीछे बैठने वाली पहली लड़की थी। हर्ष को ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी अधूरी फिल्म का हीरो हो। ऊपर से चांद भी उन्हें देखकर मुस्कुरा रहा था।
वो रात दोनों के लिए खास थी, जब वे अपने-अपने बिस्तर पर लेटे थे। मलार उन सभी पलों के बारे में सोच रही थी जब हर्ष ने कसरत के दौरान उसकी मदद करने के लिए उसे छुआ था। उसे पूर्णता और सुरक्षा का एहसास हो रहा था। वो स्पर्श आशा और प्रोत्साहन से भरे थे। उसे लगा कि सच में कोई ऐसा है जिसे उसके रूप-रंग की परवाह नहीं है और जो उसे बिना किसी कमी के एक सामान्य इंसान के रूप में देखता है। वह अगले दिन हर्ष से मिलने के लिए उत्सुक थी।
हर्ष सोच रहा था कि आखिरकार किसी ने उसकी मेहनत का सम्मान किया। उसे लगा कि वह उपयोगी है और उसका कोई मकसद है। मलार की मुस्कान और उसकी आँखें बार-बार उसके दिमाग में कौंध रही थीं, और वह बस मुस्कुराता रहा। उसने सोचा कि आखिरकार कोई तो है जो उसके कौशल और क्षमता के लिए उसकी मदद चाहता है। यह उसकी अपनी उपलब्धि थी, जिस पर उसका पूरा अधिकार था। उसने मलार के उस स्पर्श के बारे में भी सोचा जब उसने उसके हाथ को छुआ था। वह स्पर्श बहुत ही सुखद और अवास्तविक सा लगा था। वह और स्पर्श चाहता था।
उसने सोने के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं, लेकिन उस रात नींद आना असंभव लग रहा था। वह अगले दिन मलार से मिलने के लिए उत्सुक था।

अध्याय 19

सागर के मन में कई सवाल उठ रहे थे। पहला, देवकी ने बिना कोई कारण बताए सीधे-सीधे उसे ठुकरा दिया। कुछ नहीं। बस एक साफ-साफ 'ना'। दूसरा, उसे पता चला कि मलार को थायरॉइड की बीमारी है, और उसने उसे यह बात नहीं बताई क्योंकि वह अपना समय ऐसे व्यक्ति को प्रभावित करने में बर्बाद कर रहा था जिसका कोई महत्व ही नहीं था। लेकिन सागर के लिए असल में क्या मायने रखता था? यही सवाल उसे परेशान कर रहा था।

उसने अपने आस-पास कॉलेज से निकले अपने हमउम्र लोगों को देखा था; वे जीवन से भरपूर थे - खूब पैसा कमाना चाहते थे और जीवन में बड़ी सफलता हासिल करना चाहते थे। सागर को पैसे से कोई लगाव नहीं था। इसका एक कारण यह था कि उसने 17 साल की उम्र में ही कमाना शुरू कर दिया था, इसलिए अब तक वह आर्थिक रूप से अच्छी स्थिति में था और चीजें धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थीं।

लेकिन उसके भीतर एक खालीपन बढ़ता जा रहा था। पिछले एक हफ्ते से वह खुद से बस यही सवाल पूछ रहा था, "मेरी जिंदगी का मकसद क्या है?", "जीने का कारण क्या है?" और मलार और हर्ष के साथ छत पर बिताए समय के बाद उसके मन में एक खालीपन सा छा गया था। "मैंने कुछ भी बड़ा हासिल नहीं किया है," यह बात उसे तुरंत समझ आ गई, और अब वह खुद को हारा हुआ महसूस नहीं करना चाहता था। मंगलवार का दिन था, और वह सुबह की चाय पीते हुए इन सब बातों के बारे में सोच रहा था। उसने अपने माता-पिता को बताया कि वह आज काम पर नहीं जाएगा क्योंकि वह उदास महसूस कर रहा है। उसके माता-पिता चले गए, और अब वह अकेला था, बार-बार उन्हीं सवालों के बारे में सोच रहा था। एक बात जो उसे समझ आ गई थी, वह यह थी कि वह अपनी जिंदगी को ऐसे ही नहीं जी सकता था। उसे जीने के लिए एक जुनून और प्रेरणा चाहिए थी।

काफी समय बाद, उसने अचानक अपना ध्यान भटकाने के लिए टीवी चालू किया। उसने फिल्म चैनल पर स्क्रॉल किया, लेकिन डब की हुई कुछ दक्षिण भारतीय एक्शन फिल्मों के अलावा कुछ भी नहीं चल रहा था। इसलिए उसने समाचार अनुभाग की ओर रुख किया।

उसने सबसे पहले डीडी न्यूज़ चैनल चुना। पहली तस्वीर जो उसने देखी, वह राष्ट्रपति भवन के एक हॉल की थी, जहाँ पद्म पुरस्कार वितरण समारोह चल रहा था। सागर हमेशा से यह जानना चाहता था कि सरकार लोगों को पुरस्कार कैसे देती है, इसलिए उसने रिमोट एक तरफ रख दिया और राष्ट्रपति भवन के अंदर चल रही गतिविधियों को देखने लगा। समारोह का सीधा प्रसारण हो रहा था।

सागर स्क्रीन पर दिख रहे असीम उत्साह और सकारात्मकता से मंत्रमुग्ध हो गया। हॉल खचाखच भरा हुआ था, मंच पर भारत के राष्ट्रपति खड़े थे, प्रधानमंत्री और अन्य मंत्री पहली पंक्ति में बैठे थे। पुरस्कार विजेताओं के परिवार के सदस्य बाकी पंक्तियों में बैठे थे। एक-एक करके नामों की घोषणा की जा रही थी, और फिर वे राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किए जाने के लिए आगे आते थे।

सागर यह सब देखकर रोमांचित हो गया। उसने देखा कि गौतम गंभीर को क्रिकेट में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया जा रहा है। मनोज बाजपेयी को भी उनके अभिनय कौशल के लिए यही पुरस्कार दिया जा रहा था, लेकिन सागर का ध्यान इस बात पर गया कि ये पुरस्कार केवल मशहूर हस्तियों को ही नहीं दिए जा रहे थे। देश के विकास में योगदान देने वाले कई आम लोगों को भी पद्म श्री से सम्मानित किया जा रहा था, और यह देखकर वह दंग रह गया।

उन्होंने कर्नाटक की श्रीमती सालुमरदा थिम्मक्का को मंच पर जाते देखा। वे 107 वर्ष की थीं और उन्हें उनके सामाजिक कार्यों के लिए सम्मानित किया जा रहा था। वे अपने गाँव के पास राजमार्ग के 4 किलोमीटर लंबे हिस्से में बरगद के पेड़ लगाने के लिए जानी जाती थीं। राष्ट्रपति से पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त करते समय उन्होंने नारंगी और हरे रंग की सुंदर साड़ी पहनी हुई थी। उस क्षण उनकी मुस्कान में खुशी, शांति और संतोष झलक रहा था। इसके बाद उन्होंने तमिलनाडु की श्रीमती चिनापिल्लई को देखा। उन्होंने लाल रंग की दक्षिण भारतीय साड़ी पहनी हुई थी और राष्ट्रपति द्वारा उनके नाम की घोषणा किए जाने पर वे गर्व से मंच पर आईं। सबसे पहले उन्होंने सम्मान के प्रतीक के रूप में राष्ट्रपति के सामने सिर झुकाया और फिर मंच पर गईं। उन्हें अपने गाँव और आसपास के वंचित लोगों के सशक्तिकरण और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के लिए किए गए कार्यों के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार दिए जाने पर वे मुस्कुराईं। गोल चश्मे के पीछे उनकी आँखें मुस्कुराते समय बंद हो गईं और उनके दाँत दिखाई दिए। उनके चेहरे पर एक मासूमियत थी। उन्हें पता था कि उन्होंने अपने जीवन में कुछ सार्थक कार्य किया है।

सागर को उन सभी लोगों में दिलचस्पी थी। उसने समारोह को अंत तक देखा, और उस दौरान वह भूल गया कि वह कहाँ है, कौन है और क्यों है। उसके लिए बस इतना ही मायने रखता था कि देश के विभिन्न हिस्सों से आए लोगों के चेहरे पर मुस्कान थी। उसे शायद कभी पता ही नहीं चलता कि लोग अपने काम के लिए पुरस्कार जीत रहे हैं, और उनके काम के लिए मार्केटिंग या शक्ति की ज़रूरत नहीं होती। बस मानवीय भावना की ज़रूरत होती है।

सागर मन ही मन सोचने लगा, "अगर मुझमें भी काम के प्रति ऐसा ही जुनून और मानवीय भावना होती तो कैसा लगता?" शारीरिक, मानसिक और आर्थिक सीमाओं से परे एक ऐसे गहरे उद्देश्य को पाना कैसा लगता? सागर के चेहरे पर आखिरकार मुस्कान आ गई; वह समझ गया था कि उसे बस अपने से बड़ा कोई उद्देश्य खोजना है।

शाम ढलते ही सागर अपने भवन के पास की गलियों में टहलने निकल गया, ताकि आसपास की हर चीज़ को देख सके। अब तक दिन होश में ही बीता था। मानो बहुत लंबे समय बाद उसे एहसास हुआ कि समय कैसे बीत रहा है और कैसे हर एक मिनट मिलकर एक घंटा बन जाता है। उसने अपना दोपहर का खाना बनाया, अपना पसंदीदा ब्रेड चीज़ ऑमलेट, सारे बर्तन धोए और अलमारी से सारी किताबें निकाल लीं। फर्श पर 250 से ज़्यादा किताबें पड़ी थीं। सागर ने उनमें से ज़्यादातर को सूंघा और उसे याद आया कि उसने नौवीं कक्षा में ही इन्हें इकट्ठा करना शुरू कर दिया था। उसने सारी किताबों को सूखे कपड़े से साफ किया, वापस अलमारी में रख दिया और उसे अच्छा लगा। सागर को ऐसा लगा जैसे अलमारी में लंबे समय से रह रहे अपने कई पुराने दोस्तों से उसकी मुलाकात हो गई हो।

उसने मलार को फोन करके जिम में उसके पहले दिन के बारे में पूछा और यह भी जाना कि उसे कैसा लगा। मलार के जवाबों से सागर को अच्छा लगा क्योंकि वह सकारात्मक और उत्साही लग रही थी, और हर्ष को उससे मिलाने की उसकी योजना सफल रही। वह मलार की मदद के लिए किसी ऐसे व्यक्ति को चाहता था जो नियमित रूप से जिम जाता हो, और हर्ष इस भूमिका के लिए बिल्कुल उपयुक्त था।

शाम के 5 बज चुके थे, जब सूरज डूबने ही वाला था, सागर ने अपने लिए चाय बनाई। चाय उसका पसंदीदा पेय था और उसे अपनी बनाई चाय का स्वाद बहुत अच्छा लगा। फिर उसने गर्म पानी से स्नान किया, जिससे उसे तनाव से उबरने में मदद मिली। वह खुद से बार-बार पूछ रहा था, "मुझे इस ग्रह पर क्यों भेजा गया?" सागर को स्नान करते समय खुद से बातें करने की आदत थी। उसे अपने सवालों के जवाब तो नहीं मिलते थे, लेकिन वह महत्वपूर्ण सवाल पूछता रहता था। जब वह तौलिया अपनी कमर पर लपेट रहा था, तब उसने खुद से पूछा, "क्या मैंने सचमुच देवकी से प्यार किया था या यह सिर्फ एक भ्रम और अकेलापन था जिसने मुझे यह विश्वास दिलाया कि मैं उससे प्यार करता हूँ?"
वह बाथरूम से बाहर आया, आरामदायक नीली टी-शर्ट और जींस पहनी और टहलने जाने का फैसला किया।
उसकी इमारत स्टेशन रोड पर स्थित थी, इसलिए शाम के समय वह अपने-अपने घरों की ओर जाने वाले लोगों से भरी रहती थी। वह ऐसे टहल रहा था मानो उसके आसपास के लोग उसके लिए मायने ही न रखते हों। बस उसके मन में अपने ही सवाल थे। आखिर उसने देवकी को अपने प्यार में पागल करने के लिए इतना समय क्यों बर्बाद किया?
दरअसल, यह प्यार नहीं था, वह केवल अपने अंदर के खालीपन को भरना चाहता था, और जब उसने देवकी को देखा, तो वह शारीरिक रूप से उसकी ओर आकर्षित हुआ और उसे लगा कि यह प्यार है; सागर को यह एहसास हुआ।
उन्हें यह भी एहसास हुआ कि लड़कियों को प्यार के लिए मनाने की कोशिश में वह ऐसे ही आगे नहीं बढ़ सकते। जीवन इससे कहीं बढ़कर है। वह कुछ ऐसा करना चाहते थे जो लंबे समय तक कायम रहे। लेकिन कैसे? अपने ही सवालों का जवाब ढूंढते हुए सागर रामलीला मैदान पहुँच गए, और अंदर से आ रही ढोल की तेज़ आवाज़ ने उनकी आत्म-चर्चा को तोड़ दिया। उन्होंने लड़कों के एक समूह को नासिक ढोल बजाते देखा। सभी ने सफेद कुर्ता और पजामा पहना हुआ था, जिसके ऊपर पारंपरिक लाल बंदी थी। उनके संगीत ने सागर में जोश भर दिया। उन्होंने अपने शरीर में ऊर्जा का संचार महसूस किया। वह समूह के पास गए और उन्हें देखने लगे, और अचानक लड़कों के उस समूह में सागर ने एक लड़की को ढोल बजाते देखा। फिर वह आगे आई, और उन्हें एहसास हुआ कि वही समूह का नेतृत्व कर रही थी।

सागर ने देखा कि उसकी कमर पर एक भारी ढोल बंधा हुआ है, और वह ऐसे उछल रही थी मानो ढोल का वजन उसके लिए कोई मायने ही न रखता हो। उसके लिए मायने रखता था ढोल से निकलने वाला संगीत। सागर के मन में कोई विचार नहीं थे। वह बस वहीं खड़ा उसका चेहरा और मुस्कान देखता रहा, जो हर बार ढोल को पूरी ताकत से बजाते समय उसके चेहरे पर झलकती थी।

संगीत की धुन पर थिरकते हुए उसके चांदी के झुमके भी लहरा रहे थे। संगीत अपने चरम पर पहुँच गया था और पूरा समूह ढोल बजा रहा था मानो वे सब किसी दिव्य ऊर्जा से एक-दूसरे से जुड़े हों। जाति, रंग, उम्र, वजन, कद, लिंग का कोई महत्व नहीं था क्योंकि सभी एक ही संगीत बजा रहे थे और सभी ढोल एक ही लय में बज रहे थे। सागर को अपने जीवन का उद्देश्य नहीं पता था, लेकिन वह जानता था कि उद्देश्य कैसा होता है। उस लड़की की आँखों में वह उद्देश्य झलक रहा था और ऐसा लग रहा था मानो उसके आसपास की दुनिया उसी से जुड़ी हुई हो। सागर ने अपना फोन निकाला और नासिक ढोल बजा रहे समूह का वीडियो रिकॉर्ड किया। उसने कुछ सेकंड के लिए लड़की पर फोकस किया और देखा कि उसका चेहरा कैसे दमक रहा था। उसके माथे पर एक छोटी सी बिंदी थी, जो सागर को बहुत प्यारी लगी। फिर वह मैदान से निकलकर अपने घर की ओर चल पड़ा और उसे एक बात पता थी। वह भी वही चमक अपनी आँखों में चाहता था जो ढोल बजाते समय उस लड़की की आँखों में झलक रही थी।

अध्याय 20

क्या प्यार एक दिन में हो सकता है, या इसमें पूरी ज़िंदगी लग जाती है? हर्ष और मलार के दिन की शुरुआत एक जैसी होते हुए भी अलग-अलग थी। दोनों एक-दूसरे के ख्याल से जागे। हर्ष सोच रहा था कि मलार उसके प्रति कितनी आभारी है। उसने अपनी ज़िंदगी में पहले कभी इतना अहमियत महसूस नहीं की थी। उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। वह खुशी से उछल पड़ा और बिस्तर से उठ गया। कुछ पल के लिए वह अपनी असलियत भूल गया था, लेकिन जल्द ही नाश्ते की मेज पर उसके पिता ने उसे वापस हकीकत में ला दिया। "हर्ष, मैंने कल खुशबू को फोन किया था," उसके पिता ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा। हर्ष ने ओट्स उपमा खाते हुए एक पल के लिए ऊपर देखा। "उसने कहा कि उसने तुम्हें रविवार को फोन किया था, लेकिन तुमने उसे वापस फोन नहीं किया," उसके पिता की आवाज़ अब थोड़ी सख्त थी। हर्ष ने चम्मच नीचे रखा, ऊपर देखा और गंभीर चेहरे से कहा, "मैं भूल गया था पापा; आजकल दफ्तर में बहुत काम है।"

"हर्ष, एक कॉल करने में सिर्फ पांच मिनट लगते हैं। तुम्हारे पास उस बेकार जिम में जाने के लिए दुनिया भर का समय है, लेकिन तुम उसे कॉल नहीं कर सकते? आज ही उसे कॉल करो, ऑफिस से घर आने के बाद और उसके बाद ही जिम जाना," उसने लगभग आदेश देते हुए कहा।

हर्ष को समझ नहीं आ रहा था कि बहस के बीच में जिम जाने का सवाल कैसे उठ गया। वह चुप रहा। तब तक उसका ओट्स उपमा ठंडा हो चुका था।

कुछ मिनट बाद, हर्ष के पिता अपनी कुर्सी से उठे और हर्ष के कंधे पर हाथ रखकर उसके पास खड़े हो गए। उनकी आवाज़ धीमी और प्रेरक थी।

“बेटा, हमारे समाज के कई लड़के खुशबू से उसके पिता के पैसों के लिए शादी करना चाहते हैं, लेकिन उन्होंने तुम्हें इसलिए चुना है क्योंकि तुम अच्छे लड़के हो। अगर तुम ऐसे ही रहे तो वे बिना सोचे समझे सगाई तोड़ देंगे और तुम्हारा पूरा जीवन बर्बाद हो जाएगा। इसलिए खुशबू से बात करना शुरू करो; तुम्हारा उज्ज्वल भविष्य तुम्हारा इंतजार कर रहा है।” जब पिता ने

अपना भाषण समाप्त किया तब तक हर्ष गुस्से से आग बबूला हो रहा था, “सगाई टूटने से मेरा जीवन कैसे बर्बाद हो सकता है?”, “उसके घटिया समाज में पैसे की इतनी अहमियत क्यों है?” ऐसे सवाल उसके मन में घर कर गए। लेकिन फिर उसे एहसास हुआ कि आयुषी ने भी उसे पैसों के लिए ही छोड़ा था। यह एक कभी न खत्म होने वाला झगड़ा था। हर्ष ने बस इतना ही कहा, "ठीक है।"

फोन बजते ही हर्ष का सारा तनाव और परेशान करने वाले विचार गायब हो गए। यह मलार का व्हाट्सएप मैसेज था। उसने झटपट मैसेज खोला। मलार ने लिखा था, "क्या मुझे नाश्ते में उपमा मिल सकता है...?" यह मैसेज पढ़कर हर्ष मुस्कुराया और उसने अपना ठंडा ओट्स उपमा खाना शुरू कर दिया।

***

मलार रात 9 बजे से पाँच मिनट पहले रिक्शा से जिम के बाहर पहुँची। वह उस दिन के वर्कआउट को लेकर उत्साहित थी और हर्ष के आने का इंतज़ार कर रही थी। वह सड़क के दोनों ओर देख रही थी और हर्ष को अपनी स्कूटी पर आते हुए कल्पना कर रही थी। इस सोच ने उसे एहसास दिलाया कि वह सुबह से ही उसके बारे में सोच रही थी।

सबसे पहले, वह उसके ख्याल के साथ जागी। उसने सोचा कि वह उसके बारे में क्या सोच रहा होगा।

नाश्ते के दौरान, मलार की मां ने उपमा बनाया, इसलिए खाने से पहले उसने हर्ष को मैसेज करके पूछा कि क्या वह इसे खा सकती है।

उसका तुरंत जवाब था, "हाँ, खा सकती हो। गरमा गरम घर का बना नाश्ता हमेशा अच्छा होता है। क्या संयोग है, मैं भी आज ओट्स उपमा खा रहा हूँ।" मलार थोड़ी देर रुकी और सोचने लगी कि क्या यह सचमुच संयोग था या कुछ और। यात्रा के दौरान और ऑफिस में भी, जब भी मलार किसी सुगठित शरीर वाले लड़के को देखती, तो उसे हर्ष की याद आ जाती और वह मन ही मन सोचती, "उसका शरीर तो मुझसे भी अच्छा है।"

उस शाम, मलार के दफ्तर में पैंट्री मैनेजर उनके डेस्क पर आया और उन्हें काजू कतली का एक डिब्बा दिया। उसने कहा,

"मलर महोदया, लक्ष्मी जी कल मेरे घर आई थीं।" मलार अपनी कुर्सी से उठीं और मिश्रा जी को गले लगा लिया। "बधाई हो, मिश्रा अंकल! आंटी ने कब बच्चे को जन्म दिया?"
"आज सुबह। इसीलिए मैं देर से आया। यह फोटो देखिए।" मिश्रा जी ने अपने मोबाइल पर अपनी नवजात बेटी की फोटो मलार को दिखाई। मलार ने अपना फोन लिया और स्क्रीन को चूम लिया। "बिल्कुल आप ही की तरह दिखती हैं ये, मिश्रा अंकल।"
“Badi hokar usko bhi aap he ke taraha C.A banana hain.”
“Mishra ji phele use badi toh hone do fir jo usska mann kahega kar legi.” Malar said while eating a Kaju Katli.

***

रात के 9 बज चुके थे और हर्ष अभी भी अपने घर पर ही था। उसने मलार का संदेश देखा, "मैं पहुँच गई। तुम कहाँ हो?"
उन्होंने जवाब दिया, "10 मिनट में पहुँच रहा हूँ।"
उसके पिता ने उसे फिर से खुशबू को फोन करने के लिए कहा, और वह जानता था कि उसके पास ऐसा करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। इसलिए आखिरकार, पहली बार उसने खुशबू को फोन किया। "हाय," हर्ष ने कहा।
"अरे, आखिरकार तुमने फोन किया ही," खुशबू ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा। "मुझे माफ करना कि मैं रविवार को तुम्हें वापस कॉल नहीं कर पाया। मैं पूरी तरह भूल गया था," हर्ष जानता था कि वह झूठ बोलने में बहुत बुरा था।
"अरे! कोई बात नहीं। मुझे पता है कि हम दोनों के लिए यह थोड़ा अजीब है क्योंकि हम एक-दूसरे को नहीं जानते। अगर हमारे माता-पिता हमें मजबूर भी करें, तो भी हम इसे सरल रख सकते हैं," खुशबू ने सच्ची भावना से कहा।
“समझने के लिए धन्यवाद,” हर्ष को और कुछ सूझा नहीं। “तो क्या बात है? तुम क्या कर रहे थे?” खुशबू ने ऐसे लहजे में पूछा जैसे वह बातचीत करने के लिए उत्सुक हो।
"दरअसल, मैं जिम जाने ही वाला था," हर्ष ने सच कहा। "अच्छा, तो आप जाइए। हम बाद में बात करेंगे।" खुशबू अपने होने वाले पति या उनके बीच जो भी रिश्ता हो, उससे बात करना चाहती थी, लेकिन वह बेताब नहीं दिखना चाहती थी, इसलिए उसने बात टाल दी।

"ओह, समझने के लिए फिर से धन्यवाद! मैं आपको सप्ताहांत में ज़रूर कॉल करूँगा। और एक बात और, अगर मेरे परिवार से कोई आपको कॉल करे, तो कृपया उन्हें बता देना कि हम नियमित रूप से बात कर रहे हैं," हर्ष ने जल्दी से सब कुछ कह दिया क्योंकि वह जल्दी से जिम जाकर व्यायाम करना चाहता था या यूँ कहें कि वह मलार के साथ कसरत करना चाहता था।

खुशबू कुछ कह पाती, उससे पहले ही कॉल कट गई और हर्ष जा चुका था।

***

रात 9:15 बजे, मलार ने हर्ष को एक रिक्शा में देखा जो सड़क के दूसरी ओर रुका था। लगभग दो मिनट तक उसे ऐसा लगा कि हर्ष का रिक्शा चालक से तीखी बहस हुई। फिर रिक्शा चालक ने यू-टर्न लिया और जिम के सामने रुक गया।

रिक्शा से उतरते ही हर्ष ने सबसे पहले कहा, "मुझे बहुत खेद है! मैं कुछ काम में फंस गया था और आपको इंतजार कराना पड़ा।"

"कोई बात नहीं! तुम अपनी स्कूटी क्यों नहीं लाए?" मलार ने पूछा क्योंकि वह चाहती थी कि हर्ष आज भी उसे उसकी बिल्डिंग के बाहर छोड़ दे। कल उनके बीच जो नज़दीकी थी, वह आज भी बरकरार थी। "मेरे पिताजी को कहीं जाना था, इसलिए वह स्कूटी ले गए," हर्ष ने जिम में जाते हुए कहा।

"अरे, तुम्हें पता है, सामने से ऐसा लग रहा था जैसे तुम रिक्शा चालक से बहस कर रहे हो," मलार ने कहा। "अरे हाँ, वो बात। उसने यू-टर्न लेने से मना कर दिया, इसलिए मैंने कहा कि जब तक वो यू-टर्न नहीं लेगा, मैं उसे पैसे नहीं दूंगा," हर्ष ने फिर से समझाया और महसूस किया कि मलार उसे ध्यान से देख रही है।

"ठीक है," मलार इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह पाई क्योंकि वह इस बात को लेकर उलझन में थी कि कोई सिर्फ़ यू-टर्न के लिए क्यों लड़ेगा। हर्ष दो सेकंड में आसानी से सड़क पार कर सकता था, लेकिन उसने अपने विचार मन में ही रखे। जिम के अंदर, हर्ष ने मलार से कसरत शुरू करने से पहले अपना वज़न जाँचने को कहा। उसने कहा, "मैं कसरत से पहले हमेशा अपना वज़न जाँचता हूँ। इससे हमें अपने लक्ष्य और अपनी मंज़िल की याद आती है।"

"क्या यह ज़रूरी है?" मलार अपने वजन को लेकर सचेत थी और उसे डर था कि हर्ष उसके बारे में क्या सोचेगा।

हर्ष ने उसकी आँखों में डर देखा। उसने मलार के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "हिम्मत रखो मलार, अपने डर का सामना करो, तराजू सिर्फ तुम्हारा वर्तमान दिखाता है, तुम्हारा भविष्य नहीं, और मुझे यकीन है तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल है।" हर्ष की बातें सुनकर मलार को हिम्मत मिली और वह तराजू पर चढ़ गई। उसका वजन 82 किलो था। हर्ष ने देखते ही मलार घबरा गई और अपना बचाव करने लगी।

"दरअसल, मुझे थायरॉइड की समस्या है, और यह वजन उसी का नतीजा है।" हर्ष हंस रहा था। मलार चौंक गई। उसने पूछा, "तुम क्यों हंस रहे हो?"

"मलार, अपनी जिंदगी में कभी भी यह मत कहना कि तुम्हें थायरॉइड है। तुम्हें यह नहीं है। थायरॉइड बस तुम्हारे शरीर में एक मामूली सी परेशानी है, जो समय के साथ ठीक हो जाएगी। लेकिन अगर तुम कहोगी कि तुम्हें यह है, तो यह यकीनन हमेशा के लिए रहेगी।" मलार एक पल के लिए स्तब्ध रह गई।

"मैंने इसे उस तरह से क्यों नहीं देखा?" उसने सोचा।

"हर्ष, मुझे तुम्हारा चीजों को देखने और समझने का तरीका बहुत पसंद है। बहुत-बहुत धन्यवाद, दोस्त," मलार ने कहा और अपना हाथ बढ़ाया। हर्ष ने उसका हाथ मिलाया और दोनों को ही स्पर्श से गर्माहट महसूस हुई। अगले एक घंटे में, उन्होंने व्यायाम किया और व्यायाम के दौरान उनके बीच हुए अनजाने स्पर्श एक अनकही कहानी लिख रहे थे। व्यायाम के दौरान, हर्ष बार-बार सोच रहा था कि मलार ने बातचीत के दौरान पहली बार "प्यार" शब्द का इस्तेमाल किया था, और यह कितना खास था। यह अच्छा लगा, और दिल को छू गया।

अध्याय 21

90 मिनट के वर्कआउट के बाद, मलार और हर्ष जिम से बाहर आए। दोनों तरोताज़ा और थके हुए लग रहे थे। बाहर की हवा ठंडी थी, लेकिन मलार और हर्ष के बीच इतनी गर्माहट महसूस हो रही थी क्योंकि वे एक-दूसरे के बहुत करीब चल रहे थे।

मलार बिना कुछ कहे हंस पड़ी। हर्ष ने उसकी तरफ देखकर कहा, "मुझे भी ये चुटकुला सुनाओ।"

"दरअसल, यह कोई मज़ाक नहीं है, बल्कि तुम्हारे बारे में एक विचार है। मुझे लगता है, तुम्हारी शारीरिक क्षमता को देखते हुए, तुम दिन भर बहुत सक्रिय रहोगी, पूरी ऊर्जा के साथ इधर-उधर दौड़ोगी, मेरे विपरीत, जिसे कार्यालय के पूरे समय बैठना पड़ता है," मलार फिर हंस पड़ी।

"असल में, तुम गलत हो। मैं सिर्फ वर्कआउट के दौरान ही एक्टिव रहता हूँ और काम के दौरान बेहद आलसी हो जाता हूँ। ये मेरा एनर्जी सेविंग मोड है," हर्ष ने मुस्कुराते हुए कहा। उसने अपना दायाँ पैर बाएँ पैर पर रखा, दोनों हाथों के अंगूठे और तर्जनी को छुआ और आँखें बंद कर लीं। ये ध्यान लगाने का एक जाना-माना तरीका था, और हर्ष ने इसे अपने एनर्जी सेविंग मोड को दिखाने के लिए इस्तेमाल किया। मलार उसे देखकर ज़ोर से हँस पड़ी।

"ऑफिस की बात करते-करते मुझे एक बात याद आ गई," मलार ने कहा और अपने कंधे से बैग उतारकर उसमें से एक डिब्बा निकाला। उसने उसे खोलकर हर्ष को दे दिया।

"ये काजू कतली खा लो। मैं इसे आज ऑफिस से लाई हूँ," मलार ने हर्ष की आँखों में मुस्कुराते हुए देखा।

हर्ष ने एक काजू कतली उठाई और उसे खा लिया। मिठास उसके मुंह में घुल गई और हर्ष को लगा कि वह काजू कतली खास उसके लिए लाई थी।

"यह तुम्हारी सेहत के लिए अच्छा नहीं है। एक खाना ठीक है, लेकिन पूरा डिब्बा नहीं," हर्ष ने मज़ाकिया चेहरा बनाते हुए मलार को चिढ़ाया।

"इस काजू कतली के पीछे एक खास वजह है; इसीलिए मैं इसे आपके साथ साझा करना चाहती थी," मलार ने कहा।

"तो, खास वजह क्या है?" हर्ष ने पूछा। वह वजह जानने के लिए उत्सुक था क्योंकि जब मलार ने कहा, 'मैं इसे तुम्हारे साथ साझा करना चाहती थी', तो उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। 'तुम' शब्द ने उसकी आँखों में चमक ला दी।
"मेरे दफ्तर में पैंट्री का काम संभालने वाले मिश्रा अंकल हैं। आज उन्हें एक प्यारी सी बेटी हुई है। उन्होंने सबको मिठाई बांटी। लेकिन असली जादू तो उनकी कहानी में है। उनकी उम्र 45 साल है और शादी के 20 साल तक उनकी कोई संतान नहीं थी। उनके परिवार ने उन्हें बच्चों के लिए दूसरी शादी करने को कहा, लेकिन उन्होंने साफ इनकार कर दिया और अपनी पत्नी और प्यार के लिए डटे रहे। उन्होंने मुझे बताया कि वे अपनी पत्नी के साथ बच्चों के लिए नहीं, बल्कि उनके प्यार के लिए हैं, और आखिरकार, कई दवाइयों के बाद पिछले साल वह गर्भवती हुईं और प्यार की जीत हुई।" मलार को ऐसा लगा जैसे उन्होंने अभी-अभी कोई प्रेरणादायक भाषण खत्म किया हो।
हर्ष कुछ कह नहीं सका। उसका दिल भरा हुआ था। वह बस यही चाहता था कि हर किसी की कहानी में प्यार की जीत हो, लेकिन यह मुमकिन नहीं था, खासकर उसके समाज में, जहाँ सिर्फ पैसे की ही जीत होती थी।
हर्ष को एहसास हुआ कि मलार जवाब का इंतज़ार कर रही है। उसने कहा, "यह तो बहुत ही प्यारी प्रेम कहानी है! शुक्र है कि मिश्रा अंकल हमारे समाज से नहीं हैं।" मलार हर्ष की बात समझ नहीं पाई। उसे हर्ष के समाज के बारे में कुछ भी पता नहीं था।
मुझे आपकी बात समझ नहीं आई।
"कुछ नहीं, बस यूं ही मन में आया," हर्ष ने इसे नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की। उसे बोलने से पहले सोच लेना चाहिए था।
"नहीं, बताओ क्या बात है?" मलार ने पूछा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि हर्ष अजीब व्यवहार क्यों कर रहा है।
"यह कुछ भी नहीं है। मैं आपको किसी और दिन समझा दूंगा," हर्ष ने बातचीत खत्म करने की कोशिश करते हुए कहा।
"ठीक है," मलार को बुरा लगा। कुछ मिनट पहले तक वह खुश थी। उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं था जब कोई उसके सामने खुद को बंद कर लेता था।

अगले कुछ मिनटों तक वे चुपचाप चलते रहे। हर्ष को एहसास हुआ कि मलार को उसके चुप रहने से बुरा लग रहा था, लेकिन उसे अपने डर से भी निपटना था।
उसने विषय बदलने की कोशिश करते हुए कहा, "मलर, मैं तुम्हें कल सुबह तक व्हाट्सएप पर तुम्हारा डाइट प्लान भेज दूंगा।"
"हम्म ठीक है," मालार ने संक्षिप्त में कहा।
फिर सन्नाटा छा गया। सड़क पर सन्नाटा भी कुछ हद तक राहत दे रहा था। मलार ने अपने फोन में समय देखा और कहा...
"मुझे लगता है अब हमें चले जाना चाहिए। 11 बज चुके हैं।"
"जी हां, जरूर," हर्ष ने कहा।
"चलो ऑटो पकड़ लेते हैं। मैं तुम्हें पहले छोड़ दूंगी, फिर मैं जाऊंगी," मलार ने कहा। "ठीक है," हर्ष ने संक्षिप्त और सरल शब्दों में कहा।
पिछले कुछ मिनटों में उन दोनों के बीच कुछ असहजता सी पैदा हो गई थी। लेकिन अब हर्ष के सामने एक और समस्या खड़ी हो गई थी।
वे सड़क के किनारे, स्ट्रीट लाइट के नीचे खड़े हो गए और एक ऑटो को रोकने की कोशिश करने लगे। लेकिन कोई ऑटो नहीं रुका। आखिरकार, दस मिनट के लगातार प्रयास के बाद, एक रिक्शा वाला रुका। लेकिन वह सड़क के दूसरी तरफ था। हर्ष चिल्लाया, "आगे से यू-टर्न लेकर यहाँ आओ!"
यू-टर्न 100 मीटर आगे था और उनकी मंज़िल की ओर नहीं जा रहा था, इसलिए रिक्शा चालक ने मना कर दिया और चला गया। मलार को समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। उसने जिज्ञासु स्वर में कहा, "हम आसानी से सड़क पार कर सकते थे, हर्ष। आज जब तुम आए थे, तो तुमने ड्राइवर से यू-टर्न को लेकर बहस की थी। अब तुम इतने आलसी क्यों हो रहे हो?" हर्ष चुप रहा। उसे मलार को यह बात समझानी ही थी। "मलार, मुझे एगोराफोबिया है। इसे सड़क पार करने का डर कहते हैं। सड़कें चाहे कितनी भी खाली हों, मुझे उन्हें पार करते समय घबराहट होती है, चाहे रात हो या दिन। मुझे पता है कि यह दुर्लभ है, लेकिन ऐसा ही है। मुझे नहीं पता कि मुझे यह क्यों है। मेरे माता-पिता में से किसी को भी इसके बारे में नहीं पता।

इसलिए मैं हमेशा अपनी स्कूटी अपने साथ रखता हूँ। लेकिन आज मेरे पापा ने उसे ले लिया है," हर्ष ने थोड़ी उदासी भरी आवाज़ में कहा।
इस बार मालार के पास कहने के लिए शब्द नहीं थे।
"तुम्हें गलत समझने के लिए मुझे बहुत खेद है, हर्ष। मुझे तुम्हें आलसी नहीं कहना चाहिए था। मुझे सच में बहुत अफ़सोस है।" मलार को एहसास हुआ कि हर्ष ने उसके मोटे शरीर के लिए उसे कभी बुरा-भला नहीं कहा, लेकिन सड़क पार न करने पर उसने तुरंत उसे आलसी घोषित कर दिया। वह कितनी गलत थी!
"कोई बात नहीं, मलार। मुझे इसकी आदत हो गई है। सब ठीक है," हर्ष ने कहा। वह समझ गया था कि मलार पर उसकी बातों का कितना असर हुआ है।
दोनों चुप थे। वे शारीरिक या मानसिक रूप से एक-दूसरे से जुड़ना चाहते थे, लेकिन दोनों ने चुप्पी को चुना।
अचानक सड़क के दूसरी ओर एक रिक्शा रुका। इस बार मलार ने खुद को नहीं रोका। उसने वही किया जो उसके मन और दिल ने चाहा। उसने अपना दाहिना हाथ हर्ष के बाएं हाथ पर इस तरह कसकर लपेट लिया मानो वह उसे कभी नहीं छोड़ेगी। उनकी आँखें एक ही समय पर मिलीं।
"चलो साथ में सड़क पार करते हैं," मलार ने कहा।
"मैं नहीं कर सकता।" हर्ष का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। डर उसे जकड़ रहा था। "तुम कर सकते हो। अगर तुम मुझे फिट होने के लिए प्रेरित कर सकते हो, तो तुम यह भी कर सकते हो। बस मेरे पीछे आओ और अपनी आँखें बंद कर लो।" मलार हर्ष की मदद करने के लिए दृढ़ संकल्पित थी। उसने वही किया जो मलार ने कहा।
मलार ने पहला कदम बढ़ाया और हर्ष ने दूसरा। उनके हाथों का बंधन और भी मजबूत होता गया और देखते ही देखते वे सड़क पार कर गए। रिक्शा में बैठते ही हर्ष की आँखों में आँसू आ गए, पर वह मलार को दिखाना नहीं चाहता था। अँधेरे में भी वे एक-दूसरे का हाथ ऐसे थामे हुए थे मानो कभी एक-दूसरे को छोड़ना ही न चाहें। हर्ष ने मलार को धन्यवाद दिया, पर उसने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उसने हर्ष का हाथ थोड़ा और कसकर दबा दिया। मानो वह अपने स्पर्श से बहुत कुछ कहना चाह रही हो।

जब हर्ष अपनी इमारत के बाहर उतरा, तो आखिरकार उनके हाथ अलग हो गए। उसने मलार की आँखों में देखा और कहा, "मुझे नहीं पता कि मैं दोबारा कैसे राहें पार करूँगा जब तुम मेरा हाथ थामने के लिए मेरे साथ नहीं होगी।" उसने मलार के जवाब का इंतज़ार नहीं किया, लेकिन दोनों जानते थे कि मलार का जवाब क्या होगा।

वह रात उन दोनों के लिए कठिन थी क्योंकि वे बार-बार अपने-अपने हाथों को देख रहे थे, उस स्पर्श को फिर से महसूस करने की कोशिश कर रहे थे।

अध्याय 22

शाम के छह बज रहे थे और सागर अपने घर से छत पर जाने के लिए निकला। आमतौर पर रविवार को वह खाली रहता था और उस दिन भी ऐसा ही था।

उस अनजान रहस्यमयी लड़की को ढोल बजाते हुए देखने के बाद सागर का पिछला हफ्ता अच्छा बीता, मानो पूरा ब्रह्मांड उसी पर टिका हो। उस दिन से सागर को यकीन हो गया कि वह भी जीवन के प्रति वैसा ही उत्साह पा सकता है। उस हफ्ते उसने अपनी डायरी में अपने सारे आंतरिक प्रश्न और ढोल बजाने वाली उस लड़की के बारे में भी लिखा।

आज वह खुश था क्योंकि उसने शाम को मलार और हर्ष से उनके घर पर मिलने की योजना बनाई थी। उनका अड्डा - उनकी छत।

सागर सबसे ऊपरी मंजिल पर पहुंचा, लिफ्ट का दरवाजा खोला और छत की ओर चल पड़ा। उसके कानों में इयरफ़ोन लगे हुए थे और वह वही गाना सुन रहा था जो उसने एक दिन पहले रेडियो पर सुना था।

उन्हें खुद नहीं पता था कि वे वह गाना क्यों सुन रहे थे या वह गाना किस फिल्म का था। बस एक पंक्ति उनके मन में बस गई थी—वही पंक्ति जो गाने में तब दोहराई गई थी जब सागर छत पर आया और उसने किसी को देखा। “छूकर मेरे मनको किया तूने क्या इशारा, बदला ये मौसम लगे प्यारा जग सारा,

Tu jo kahe jeevan bhar tere liye main gaoon,

Geet tere bolon pe likhta chala jaoon”

एक लड़की उसकी तरफ पीठ करके खड़ी थी। किसी और को छत पर देखकर वह दंग रह गया, क्योंकि आमतौर पर वहाँ केवल वह और मलार ही अक्सर आते-जाते थे।

सागर ने अपने इयरफ़ोन हटाए और पहली बार उस लड़की की आवाज़ सुनी। उसने महसूस किया कि उसकी आवाज़ अलग थी। वह किसी दक्षिण भारतीय भाषा में किसी से फ़ोन पर बात कर रही थी, और उसे इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि सागर उसे देख रहा है।

उसके बाल जूड़े में बंधे थे और उसने काली टी-शर्ट और ग्रे रंग का पजामा पहना हुआ था। सागर वहीं खड़ा रहा और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। नए लोगों के साथ उसका व्यवहार असहज था।
उसका फोन बजा, मलार का फोन था। उसने फोन उठाया। "तुम कहाँ हो?" मलार ने पूछा। "मैं पहले से ही ऊपर हूँ," सागर ने कहा, और उसकी आवाज़ सुनकर इस बार लड़की पीछे मुड़ गई।
मलार ने यह कहकर फोन काट दिया कि वह पांच मिनट में पहुंच जाएगी, लेकिन सागर उस लड़की को देखता रहा।
वह स्तब्ध रह गया, और उसके मन में सबसे पहला विचार आया, "क्या यह पल किसी घिसी-पिटी बॉलीवुड फिल्म जैसा है या महज़ एक संयोग?" उसके सामने खड़ी, उसे घूरती हुई लड़की वही ढोल बजाने वाली लड़की थी जिसने अनजाने में सागर को उम्मीद दी थी।
सागर ने बेपरवाही दिखाने की कोशिश की। उसने महसूस किया कि वह उसे देख रही थी और अभी भी फोन पर बात कर रही थी। उसने "शेरी चेट्टा, बाय" कहते हुए फोन काट दिया। सागर सोचने लगा कि उसके शब्दों का क्या मतलब था।
सागर ने अपने दोनों होंठ अंदर की ओर मोड़े और उन्हें आपस में दबा लिया। वह ऐसा तब करता था जब उसे समझ नहीं आता था कि क्या कहे या क्या करे।
दक्षिण भारतीय भाषा बोलने वाली लड़की ने सबसे पहले बातचीत शुरू की। "अरे, तो क्या आप भी यहीं रहते हैं?" उसने इमारत की ओर इशारा करते हुए अपनी उंगलियां नीचे की ओर उठाईं।
"जी हां, बिल्कुल," सागर को आश्चर्य हुआ कि उसने "तुम भी"..? क्यों कहा। "ओह, मैं भी," लड़की ने बनावटी मुस्कान के साथ कहा। "क्या?" सागर चौंक गया, और उसके 'क्या' कहने के तरीके से लड़की थोड़ी असहज हो गई।
"तुम इतने हैरान क्यों दिख रहे हो?" लड़की ने हैरानी से पूछा। "ऐसा कुछ नहीं है। मैंने तुम्हें पहले कभी यहाँ नहीं देखा। तुम छत पर कैसे आए, क्योंकि यह तो आमतौर पर बंद रहती है, और इसकी चाबी मेरे पास है?" सागर ने उससे और जानने की इच्छा से पूछा।

“दरअसल, हम दो दिन पहले ही ए-विंग 403 में किराएदार के तौर पर यहाँ आए हैं, और आज मैं यहाँ आई तो देखा कि छत खाली है। वैसे, यहाँ से नज़ारा बहुत ही शानदार है। खासकर सूर्यास्त। देखो,” लड़की ने मुस्कुराते हुए कहा और डूबते सूरज की ओर उंगली से इशारा किया। “ओह, हाँ। हमारे लिए तो हर दिन ऐसा ही होता है,” सागर ने बिना किसी वजह के सहज बनने की कोशिश की। किसी को नहीं पता था कि वह कभी-कभी ऐसी अजीब बातें क्यों करता या कहता था। “हाँ, लेकिन हर दिन एक जैसा नहीं होता,” उसने सूरज की ओर देखते हुए जवाब दिया। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें चमक रही थीं।

सागर कुछ कह पाता, उससे पहले ही मलार और हर्ष पीछे से एक साथ आ गए, और मलार ने उसे धक्का देते हुए बहुत जोर से "हैलो" कहा; वह स्पष्ट रूप से उत्साहित थी।

इससे पहले कि सागर समझ पाता कि क्या हो रहा है, उसका संतुलन बिगड़ गया और वह आगे की ओर लड़खड़ाकर सीधे दक्षिण भारतीय लड़की पर जा गिरा, जिससे वह लड़की भी अपना संतुलन खो बैठी और गिर पड़ी।

मलार को यह एहसास होने में बहुत देर हो चुकी थी कि छत पर एक चौथा और नया व्यक्ति भी मौजूद है। तब तक सागर और वह लड़की एक-दूसरे के बेहद करीब लेटे हुए थे। सागर सबसे पहले थोड़ा सा उठा और यह देखने लगा कि वह ठीक है या नहीं। "मुझे बहुत अफ़सोस है। मुझे पता नहीं था। क्या तुम ठीक हो...?" सागर ने घबराते हुए एक साथ कई सवाल पूछे। लड़की भी अपने हाथों की मदद से उठी, और सागर से उसकी यह पहली मुलाकात थी। सागर ने उसकी आँखों के नीचे लगा काला काजल देखा, और उसने सागर की बढ़ी हुई मूंछों को उसके होठों तक आते हुए देखा। दोनों को लगा कि एक-दूसरे को देखना प्यारा है। उनकी तंद्रा तब टूटी जब मलार और हर्ष उन्हें उठने में मदद करने आए।

सागर ने मलार को देखा और कहा, "ये क्या बकवास है यार! तुम्हारी मस्ती की भी कोई सीमा होनी चाहिए।"

सागर के ये शब्द सुनकर मलार अपनी मुस्कान नहीं रोक पाई और सागर ने भी हल्की सी मुस्कान दी। हर्ष को भी हंसी आ रही थी क्योंकि स्थिति अनजाने में ही हास्यास्पद हो गई थी। लेकिन हर्ष और मलार के मन में सवाल था, "सागर के साथ वो लड़की कौन थी?" सागर ने उनके सवाल का जवाब दिया, "वैसे, वो हमारी बिल्डिंग की नई सदस्य है, और इससे पहले कि

मैं उसका नाम पूछ पाता, मलार ने मुझे धक्का दे दिया और हम दोनों गिर गए। नए सदस्य का स्वागत ऐसे नहीं किया जाता।" सागर ने मलार को आँख मारी। मलार समझ गई कि वो धक्का देने का बदला ले रहा है। मलार ने उस लड़की को देखा और सच्ची मुस्कान के साथ बोली, "मुझे बहुत अफ़सोस है। मुझे पता नहीं था कि आप यहाँ हैं। बहुत-बहुत अफ़सोस।" लड़की मुस्कुराई और बोली, "कोई बात नहीं। वैसे, मेरा नाम साई है," और उसने मलार की ओर हाथ बढ़ाया।

"मैं मलार हूं, और साई, हमारे भवन में आपका स्वागत है," उसने हाथ मिलाते हुए कहा। मलार ने आगे कहा, "और ये सागर हैं, और ये हर्ष हैं।" सागर और हर्ष दोनों ने साई से हाथ मिलाया और उनका अभिवादन किया।

मलार ने साई को उनके साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित किया, और फिर वे चारों अपनी नियमित जगह पर बैठ गए, और अगला एक घंटा जीवन के बारे में बातें साझा करने और एक दूसरे से बातचीत करने में बीत गया।

सागर और मलार ने साई को बताया कि वे इमारत में एक साथ पले-बढ़े थे और सालों से छत उनके लिए एक बहुत ही खास जगह रही थी। हर्ष ने यह भी बताया कि कैसे एक आलसी रविवार को सागर ने इसी छत पर उसे फोन किया था और तब से, इमारत का निवासी न होते हुए भी, वह उनके समूह का हिस्सा बन गया था।

मलार और हर्ष ने एक-दूसरे को चुपके से देखा और हर्ष के ऐसा कहने पर दोनों मुस्कुरा दिए। अब साई की बारी थी अपने बारे में बताने की। वह अपने तीनों नए दोस्तों के गर्मजोशी भरे स्वागत से बहुत खुश थी। उसने उन्हें बताया कि वह केरल के कोच्चि से है। 12 वीं के बाद, वह होटल मैनेजमेंट कोर्स के लिए बेंगलुरु आ गई थी। उसके पिता सरकारी कर्मचारी थे और उनका सपना था कि सेवानिवृत्ति के बाद कोच्चि के किसी समुद्र तट के पास एक कैफे खोलें, और साई की होटल मैनेजमेंट की डिग्री उस सपने की ओर पहला कदम था। लेकिन तीन साल के कोर्स के दौरान, बहुत कुछ बदल गया। कोच्चि जैसे शांत और हरे-भरे शहर में पहले 17 साल बिताने के बाद, बेंगलुरु की तेज़ रफ़्तार ने उसे परेशान कर दिया। उन तीन सालों के दौरान वह हर समय असंतुष्ट महसूस करने लगी।

और उसने अपने आस-पास हर जगह यही समस्या देखी। उसके आस-पास रहने वाली उसकी रूममेट्स भी उलझे हुए और हिंसक रिश्तों में फंसी हुई थीं। उनका मकसद किसी 5-स्टार होटल में नौकरी पाना था, न कि खुद कुछ खास बनाना।

बैंगलोर के ट्रैफिक की वजह से उसका आधा समय कमरे से कॉलेज आने-जाने में ही बीत जाता था। सप्ताहांत में सभी लोकप्रिय और चहल-पहल वाले रेस्तरां कॉर्पोरेट जगत के लोगों और कॉलेज के छात्रों से भरे रहते थे।

साई ने भी नई जीवनशैली अपनाने की कोशिश की और उसे तुरंत ही नापसंद आ गई क्योंकि खाने की मेज पर लोग एक-दूसरे के साथ कम और अपने मोबाइल फोन के साथ ज्यादा समय बिताते थे, खाने की तस्वीरें खींचने और उन्हें इंस्टा स्टोरीज और स्नैपचैट पर अपलोड करने की कोशिश करते थे।

साई को खुद पर शक होने लगा। उसे लगता था कि उसमें कुछ कमी है क्योंकि उसे उन चीजों में आनंद नहीं आता था जिनमें दूसरे लोग आनंद लेते थे। उसे हर काम या अनुभव में कुछ न कुछ अधूरा सा लगता था। ये सारे सवाल तब बदल गए और हालात बेहतर होने लगे जब उसने हम्पी की अकेले यात्रा करने का फैसला किया।

"तो, आजकल आप क्या कर रही हैं?" मलार ने पूछा। "होटल मैनेजमेंट का कोर्स पूरा करने के बाद, मैं पर्यटन प्रबंधन में मास्टर्स करने के लिए मुंबई आ गई। मैं अब अंतिम वर्ष में हूँ, और सब ठीक चल रहा है। मुझे लंबे समय बाद अपने माता-पिता के साथ रहने का मौका मिलेगा क्योंकि मेरे अचान का तबादला मुंबई हो गया है।"

साई खुश थी। वह लोगों को उनके स्वभाव से परखती थी, और उसके आसपास के तीनों नए दोस्तों में एक अलग ही तरह का शांत और पुराने ज़माने का अंदाज़ था। उसे लगा कि वे इस दुनिया की भागदौड़ में शामिल नहीं हैं। "अचन, मतलब?" सागर ने पूछा, साफ़ तौर पर इस नए दक्षिण भारतीय शब्द को लेकर उलझन में था।

"मलयालम में अचन का मतलब पिता होता है," साई ने मुस्कुराते हुए उसे बताया।

उस शाम बेतरतीब चर्चाओं में बीत गई। साई अब टेरेस के मुख्य समूह का हिस्सा बन चुकी थी, क्योंकि मलार ने उसे उनके व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ दिया था। उस समय, उन चारों को नहीं

पता था कि भविष्य में उनके लिए क्या होने वाला है, क्योंकि वे अपने वर्तमान का आनंद ले रहे थे।

अध्याय 23

छत पर चार दोस्तों के साथ हुई उस घटना के कुछ दिनों बाद, साई और उसके माता-पिता वे अपने नए घर में बस गए थे। इसलिए, शाम को साईं अपने नए इलाके मलाड ईस्ट में घूमने निकलीं, ताकि आसपास की चीजें देख सकें।

लगभग 15 मिनट पैदल चलने के बाद, वह मलाड ईस्ट के चिल्ड्रन्स एकेडमी स्कूल पहुँची। स्कूल के गेट के बाहर, साई ने एक दुबले-पतले आदमी को साइकिल पर इडली और मेंदू वड़ा बेचते देखा। कई स्कूली बच्चे इडली और वड़ा खा रहे थे और अपनी उंगलियों से चटनी और सांभर चाट रहे थे। उन्हें देखकर साई मुस्कुराई। छात्रों के बीच, उसने एक जाना-पहचाना चेहरा देखा। वहाँ उसने सागर को इडली खाते और चटनी चाटते देखा। उनकी नज़रें मिलीं, और सागर ने इडली पकड़े हुए अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाया, साई को सड़क पार करके उसके पास आने का इशारा किया।

साई सड़क पार करके सागर की नाक पर चटनी चिपकी देखकर अपनी हंसी रोकने की बड़ी कोशिश करने लगी। "अरे, क्या हाल है?" सागर ने हाथ में आधी इडली और मुंह में आधी इडली लिए हुए कहा।

साई को यह घिनौना लगा और उसने मुंह बना लिया। उसने कहा, "पहले इसे खाना खत्म करो।"

सागर ने अगले दो मिनट में इडली खत्म कर दी और पानी से हाथ धो लिए, लेकिन नाक पर चटनी अभी भी लगी हुई थी। साईं हंसते हुए बोली, "तुम्हारी नाक पर चटनी लगी है।"

"क्या, कहाँ?" सागर ने अपनी नाक साफ करने की कोशिश की, लेकिन वह सही जगह पर नहीं लगा। आखिरकार, साई ने इडलीवाले अंकल से एक कागज लेकर सागर की नाक की नोक साफ की।

"इडली खाने का यह सबसे घिनौना तरीका है।"

"हाँ, ये थोड़ा अजीब है, लेकिन चटनी का असली स्वाद तो उंगलियां चाटने से ही आता है। मैं तो ये बहुत दिनों से करता आ रहा हूँ।" सागर को अपनी उंगलियां चाटने की कला पर गर्व था।

"बस करो सागर।" साई ने उसकी पीठ पर थप्पड़ मारने की कोशिश की। "वैसे, यह मेरा स्कूल था।" सागर ने इडलीवाले और उसकी साइकिल के पीछे खड़ी विशाल इमारत की ओर इशारा किया। वह पाँचवीं कक्षा से ही इडली खाता आ रहा था।
"यह बहुत बढ़िया है," साई ने कहा, उस विशाल स्कूल को देखते हुए जो उसे केरल में अपने स्कूल के दिनों की याद दिला रहा था।
"तो, आप कहाँ जा रहे हैं?" सागर ने पूछा।
"हमारी इमारत की ओर।"
"मुझे लगता है कि हमारी मंज़िल एक ही है। चलो मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ," सागर ने इडली का भुगतान किया और साई के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगा।
उनके बीच अजीब सी खामोशी छा गई। दोनों को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें, खासकर सागर को। वह साई से बातचीत जारी रखना चाहता था, इसलिए उसने सबसे घिसा-पिटा सवाल पूछा। "तो मास्टर्स के बाद तुम्हारी क्या योजना है? उस दिन छत पर तुमने कहा था कि परीक्षा से पहले मास्टर्स का आखिरी महीना बचा है।"
"सच कहूँ तो, मेरी योजनाएँ काफी अजीब हैं। क्या तुम सच में उन्हें जानना चाहते हो?" साई की आवाज़ में लापरवाही का भाव था, जिसे सागर ने महसूस किया। "मैं उन्हें अभी जानना चाहता हूँ," सागर ने कहा, और चलते-चलते उसे एहसास हुआ कि उसकी और साई की लंबाई लगभग बराबर है।
"मैं अपनी ट्रैवल कंपनी शुरू करना चाहती हूँ जहाँ मैं भारत में अपनी पसंदीदा जगह, हम्पी के लिए टूर आयोजित करूँगी," साई ने आँखों में चमक के साथ कहा। "यह योजना बिल्कुल भी अजीब नहीं है, लेकिन हम्पी कहाँ है? मैंने इसके बारे में पहले कभी नहीं सुना," सागर ने ईमानदारी से जवाब दिया।
“देखो, इसीलिए मैं सबको हम्पी ले जाना चाहती हूँ। उस जगह का जादू किसी को पता ही नहीं है। तुम्हें पता है, मुझे एक बड़ी ट्रैवल कंपनी से उनके साथ काम करने का प्रस्ताव मिला है। वो लेह और लद्दाख वगैरह के सारे मशहूर टूर आयोजित करती है, लेकिन मैं चाहती हूँ कि लोग हम्पी का अनुभव करें,” साई ने इतने जोश से समझाया जैसे वो कोई लाखों डॉलर का सौदा करने वाली हो। “तो फिर कर लो। हम्पी के बारे में बताते हुए तुम इतनी आत्मविश्वास से भरी

लग रही हो। मुझे यकीन है तुम ज़रूर कामयाब हो जाओगी," सागर ने बस वही कहा जो उसे उस पल महसूस हुआ।
साईं कुछ पल के लिए स्तब्ध रह गई। उसने सागर की आँखों में देखते हुए कहा, "तुम पहले व्यक्ति हो जिसने मुझसे यह कहा है। इससे पहले, सब मुझे कहते थे कि इस तरह की नौकरी का प्रस्ताव ठुकराकर मैं गलती कर रही हूँ, लेकिन उन्हें नहीं पता कि हम्पी मेरे लिए कितना मायने रखता है। तो हाँ, धन्यवाद।"
"दरअसल, मुझे पहले आपका शुक्रिया अदा करना है," सागर ने कहा और साई को बताया कि कैसे उसने उसे पहली बार ढोल-ताशा बजाते हुए देखा था और कैसे उसे ढोल को इतने जोश से बजाते देखकर प्रेरणा मिली थी। "क्या? सच में! आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?" साई चौंक गई। "माफ़ कीजिएगा, मैंने आपको इसलिए नहीं बताया क्योंकि मैं आपको अपनी बिल्डिंग में देखकर बहुत हैरान था और आपको बताने में मुझे शर्म आ रही थी। लेकिन देखिए, मैंने आपके प्रदर्शन का वीडियो भी रिकॉर्ड कर लिया है।" सागर ने उसे अपना रिकॉर्ड किया हुआ वीडियो दिखाया।
वीडियो देखते हुए साई ने सागर की ओर आंख मारते हुए कहा, "मुझे नहीं पता था कि मेरा इतना बड़ा फैन है।"
"हाहा, हाँ! मुझे तुम्हारा ढोल बजाने का अंदाज़ बहुत पसंद आया। जब भी दोबारा बजाओ, मुझे ज़रूर बताना," सागर ने साई की आँखों में देखते हुए कहा। "दरअसल, ये मेरे कॉलेज फेस्ट के लिए प्रैक्टिस सेशन था, जो पिछले हफ्ते ही हुआ था। तो देखते हैं कि मुझे दोबारा बजाने का मौका मिलता है या नहीं," साई ने कहा।
वे दोनों बातचीत में इतने मग्न थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि वे कब इमारत तक पहुंच गए। विदा लेने से पहले साई ने पूछा, "तो आज रात तुम क्या कर रहे हो?"
"कुछ खास नहीं। क्यों?" सागर ने जवाब दिया।
"दरअसल, मेरे माता-पिता पापा के सहकर्मी के घर रात बिताने जा रहे हैं। तो अगर तुम, मलार और हर्ष मेरे साथ आ सको, तो हम कोई अच्छी मलयालम फिल्म देख सकते हैं?"

"ठीक है, मैं मलार और हर्ष से पूछ लेता हूँ। लेकिन क्या आप सचमुच मलयालम फिल्में देखना चाहते हैं? मैंने सोनी मैक्स पर प्रसारित होने वाली कुछ डब की हुई दक्षिण भारतीय फिल्में देखी हैं जिनमें ऐसे एक्शन सीन हैं जो विज्ञान और गुरुत्वाकर्षण से परे हैं।"
“किसी किताब को उसके कवर से मत आंकिए। मलयालम फिल्में दक्षिण भारतीय सिनेमा के बाकी हिस्सों में बनने वाली फिल्मों से अलग हैं। पहले फिल्म देखिए, फिर फैसला कीजिए,” साई ने पूरे जोश के साथ मलयालम सिनेमा का बचाव किया। “ठीक है, ठीक है, बुरा मत मानिए! मैं मलार और हर्ष से पूछ लेता हूँ, फिर आपको बताता हूँ,” सागर ने कहा और वे अलग हो गए। लगभग दो घंटे बाद सागर ने साई को फोन किया।
"अरे! मलार और हर्ष जिम में हैं और आ नहीं पाएंगे। तो अब बताओ मैं क्या करूं?"
"तो फिर तुम क्यों नहीं आती? कोई न होने से तो कोई होना बेहतर है।" साई ने खुद अपने ही मजाक पर हंसते हुए कहा।
"क्या तुम सच में आश्वस्त हो?" सागर कभी किसी लड़की के घर अकेले नहीं गया था, इसलिए वह घबराया हुआ था।
"हाँ, मुझे पूरा यकीन है। जल्दी मेरे साथ आ जाओ," साई ने कहा। "अरे, लेकिन मुझे मलयालम समझ नहीं आती। मैं फिल्म कैसे देखूंगा?" सागर की बात में दम था।
"यार, तुम्हारे जैसे लोगों के लिए ही तो 'सबटाइटल्स' नाम की चीज़ बनी है," साई का व्यंग्य बिल्कुल सटीक था।
"हाहा। ठीक है ठीक है! पाँच मिनट में आ रहा हूँ।" सागर ठीक 10 मिनट बाद साई के घर पहुँच गया।
उसने दरवाज़े की घंटी बजाई; साई ने मुस्कुराते हुए दरवाज़ा खोला। "अरे! मेरे इस छोटे से घर में आपका स्वागत है।"
सागर थोड़ी घबराहट के साथ उसके घर में दाखिल हुआ। उसे नहीं पता था कि यह योजना किस तरह आगे बढ़ेगी। उसने साई को देखा। उसने ग्रे टी-शर्ट और काले पजामे पहने हुए थे। उसके काले बाल खुले हुए थे और उसके आस-पास एक ताजगी भरी आभा थी।
उसकी सहजता को देखकर सागर को ऐसा लगा मानो किसी ने उसे लंबे थका देने वाले दिन के बाद एक बढ़िया, कड़क कॉफी पिला दी हो।

"तो आप क्या लेंगे? कॉफ़ी या चाय?" साई ने पूछा। "नहीं, औपचारिकताएं मत निभाइए!" मन ही मन सागर को अच्छा लगा जब उसने उससे चाय या कॉफ़ी के लिए पूछा।
"मैं कॉफी के बिना फिल्म नहीं देख सकता, इसलिए मैंने कॉफी बना ली है। इसे पीजिए, और कृपया मेरी तारीफ करते हुए कहिए कि मैं सबसे अच्छी कॉफी बनाता हूं," साई का जवाब बिल्कुल सटीक था।
"जैसा आप कहें, महोदया," सागर प्रसन्न होकर बोला।
कॉलेज के दिनों में प्रिया के साथ बिताए समय के अलावा, किसी और लड़की ने उसमें रोमांटिक दिलचस्पी नहीं दिखाई थी और अब साई के घर में अकेले बैठना उसके लिए बहुत बड़ी बात थी। उसे अच्छा और आत्मविश्वास महसूस हो रहा था।
साईं रसोई में चली गई, और इसी बीच सागर ने उसके घर का जायज़ा लिया। मुख्य फर्नीचर पर एक बड़ा टीवी रखा था, और उसके ऊपर कई फोटो फ्रेम रखे हुए थे। एक तस्वीर में उसने छोटी साईं को अपने माता-पिता के साथ एक नावघर में देखा। सागर ने अनुमान लगाया कि यह केरल है। एक खास तस्वीर में साईं एक विशाल चट्टान पर बैठी थी, जिसके नीचे कई छोटी-छोटी चट्टानें, नारियल के पेड़ और प्राचीन मंदिर दिखाई दे रहे थे। सागर उस जगह का सटीक पता नहीं लगा सका।
जब वह केले के चिप्स के साथ दो कप गर्म कॉफी लेकर आई तो साई का ध्यान भंग हो गया।
“ये चिप्स खास तौर पर केरल से हैं, इन्हें खाओ,” साई ने कहा। सागर ने एक चिप्स उठाया और चखा। उसने अपने जीवन में कभी इतने कुरकुरे और स्वादिष्ट केले के चिप्स नहीं खाए थे।
"ये तो बहुत ही बढ़िया हैं, साई। शुक्रिया," सागर ने और चिप्स खाते हुए कहा। "आपका स्वागत है। जब भी मुझे केरल की याद आती है, मैं इन्हें खाता हूँ। बुरे समय में ये मेरे लिए सहारा होते हैं," साई की बात सागर को बिल्कुल सही लगी।
वह सागर के बगल में उचित दूरी पर बैठ गई। दोनों ने अपनी-अपनी कॉफी ली।
"तो क्या हमें फिल्म शुरू करनी चाहिए?" साई ने पूछा।

"हाँ, ज़रूर। मैं बहुत उत्साहित हूँ।" सागर ने कॉफ़ी का पहला घूंट लिया और उसके मुँह की सारी स्वाद कलिकाएँ जाग उठीं। यह गाढ़ी और मीठी दोनों थी। केले के चिप्स के बाद, कॉफ़ी दूसरी सबसे स्वादिष्ट चीज़ थी जो उसने चखी थी।
"साई, तुम सचमुच दुनिया की सबसे अच्छी कॉफी बनाती हो," उसने उसकी आंखों में देखते हुए कहा।
"मुझे पता है। शुक्रिया। हाहाहा!" साई मुस्कुराया और हँसा। "यह तुमने कहाँ से सीखा?"
सागर उत्सुक था। "यह एक लंबी कहानी है। इसे किसी और दिन के लिए छोड़ दो। पहले फिल्म शुरू करते हैं।"
"अच्छा, वैसे फिल्म का नाम क्या है?"
"फिल्म शुरू होते ही मैं आपको बताऊँगा। अब आराम से बैठिए और मुझे आपको मलयालम सिनेमा का जादू दिखाने दीजिए," साई ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा। और फिल्म शुरू हो गई। उन तीन घंटों के दौरान, साई और सागर ने साथ मिलकर "प्रेमम" देखी।

***

क्या होता है जब आप किसी व्यक्ति से प्यार करते हैं लेकिन अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की हिम्मत नहीं रखते?
हर्ष को अपराधबोध हो रहा था क्योंकि उस दिन तक उसने मलार को खुशबू से अपनी सगाई के बारे में नहीं बताया था। वह जानता था कि वह मलार से प्यार करता है, लेकिन क्या इसे पक्का जानने का कोई और तरीका था? नहीं। एकमात्र तरीका था उसे बताना। लेकिन कैसे? उसके पास इसका कोई जवाब नहीं था।
दूसरी ओर, मलार प्यार में थी लेकिन असमंजस में थी। क्या होगा अगर हर्ष उसे इसलिए ठुकरा दे क्योंकि वह उससे कम फिट और उम्र में बड़ी थी? उसे निमित के साथ अपने रिश्ते के अंत से उपजे डर भी सता रहे थे।
वे दोनों अब भी जिम में हर रोज मिलते थे। हर्ष अब भी वर्कआउट के दौरान मलार की मदद करता था, और मलार अब भी सड़क पार करते समय हर्ष का हाथ पकड़ती थी।
वे दोनों ऐसी मानसिक स्थिति में थे जहां वे एक-दूसरे को कसकर गले लगाना चाहते थे, लेकिन उन्हें डर था कि गले लगाते समय वे एक-दूसरे को चोट पहुंचा देंगे।

हर्ष को इस बात का भी डर था कि अगर उसका और मलार का रिश्ता शुरू हुआ तो वह अपने परिवार को कैसे बताएगा। वह सोच भी नहीं सकता था कि अगर उसने खुशबू से अपनी सगाई तोड़ दी तो क्या होगा। पूरा समाज इस बारे में बातें करने लगेगा और उसके परिवार का नाम समाज में बदनाम हो जाएगा।

उस रात जिम के बाद, मलार और हर्ष ने आपस में अपने काम के बारे में कुछ नहीं कहा, बल्कि खाने-पीने, गानों और फिल्मों जैसी बेतरतीब बातों पर चर्चा करते रहे। दोनों जानते थे कि दूसरे के पास कुछ ज़रूरी बात है, लेकिन किसी ने भी पूछने की पहल नहीं की। जिस रास्ते पर वे चल रहे थे, वह उस दिन सुनसान सा लग रहा था।

उनके चारों ओर वाकई काले बादल मंडरा रहे थे।

अध्याय 24

काफी समय बाद सागर और मलार हर्ष और साई के बिना छत पर बैठे थे। हालांकि उन्होंने कभी ऐसा सोचा भी नहीं था, लेकिन छत पर अकेले और साथ होने पर उन्हें एक अलग ही शांति का अनुभव हुआ।

शुक्रवार का दिन था और साई ने सागर, मलार और हर्ष को शाम 6:30 बजे छत पर बुलाया था। मलार की भी उस दिन छुट्टी थी, इसलिए सागर और मलार ने थोड़ा जल्दी मिलने का फैसला किया।

सागर ने मलार के रूप में बदलाव देखा। वह दुबली-पतली और तंदुरुस्त लग रही थी। उसका चेहरा दमक रहा था और उसकी आंखों के नीचे के काले घेरे लगभग गायब हो गए थे।

“तुम्हारी सेहत कैसी है?” उसने पूछा। दोनों छत पर टहल रहे थे। “मैं बिल्कुल ठीक हूँ। सब तुम्हारी वजह से,” मलार ने मुस्कुराते हुए कहा। “तुम मुझे धन्यवाद क्यों दे रही हो? मैंने क्या किया है?”

"सबसे पहले, आप मेरे साथ डॉक्टर मीरा से मिलने गए। दूसरे, आपने ही मुझे हर्ष से मिलवाया। उनके बिना मैं व्यायाम शुरू ही नहीं करती। क्या आपको पता है कि पिछले एक महीने में मेरा 3 किलो वजन कम हो गया है?" मलार ने आँखों में चमक के साथ कहा। वह सागर के प्रति सचमुच आभारी लग रही थी।

लोगों का दिल से शुक्रिया अदा करना कभी पुराना नहीं होगा। सागर ने कहा, "मैंने तुम्हारे लिए जो कुछ कर सकता था, किया। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैं तुम्हें निराश और थका हुआ नहीं देख सकता था। तुम्हारी वजह से ही तुमने अपनी ज़िंदगी की बागडोर दोबारा संभाली।"

मलार ने विषय बदलते हुए पूछा, "हाहाहा, ठीक है! बहुत हो गई तुम्हारी ये उपदेशबाज़ी। बताओ, तुमने और साई ने जो मलयालम फिल्म देखी, कैसी थी?" सागर प्रेमम के बारे में बात करते हुए बहुत उत्साहित था। मलार, तुम्हें लगेगा कि मैं बढ़ा-चढ़ाकर बोल रहा हूँ, लेकिन 'प्रेमम' अब तक की सबसे बेहतरीन रोमांटिक फिल्म थी जो मैंने देखी है। यह इतनी सच्ची और दिल को छूने वाली थी कि मुझे समझ नहीं आया कि मैं ये घटिया बॉलीवुड फिल्में क्यों देखता था। प्रेमम के बारे में बात करते हुए सागर बहुत उत्साहित था। मलार ने पूछा, "ओह,

ठीक है। तुम्हारी इस जोशीली प्रतिक्रिया से पता चलता है कि फिल्म बहुत अच्छी थी। कहानी क्या थी?"
"अगर मैं कहानी सुना दूं तो मज़ा किरकिरा हो जाएगा। यह जॉर्ज की कहानी है, जिसे तीन बार प्यार होता है। फिल्म 16 साल की उम्र से शुरू होती है और 30 साल की उम्र में खत्म होती है, और यह उसके प्यार और जीवन का सफर है। बस इसे देखिए। यह वाकई जादुई है," सागर ने बिना कोई स्पॉइलर दिए जितना हो सका समझाया। "अगर आपको यह इतनी पसंद आई, तो मैं इसे जल्द ही जरूर देखूंगा," मलार ने कहा।
सागर ने मलार को यह नहीं बताया था कि प्रेमम देखने के बाद वह मलयालम फिल्मों से इतना प्रभावित हुआ था कि उसने और साई ने हर शाम करीब आठ बजे छत पर बैठकर एक साथ 10 से अधिक मलयालम फिल्में देखी थीं। दोनों ने फिल्में देखते समय ईयरफोन का इस्तेमाल किया था।
फिल्मों के बीच में, साई ने उन्हें यह भी बताया कि वह अपनी ट्रैवल कंपनी शुरू करना चाहती है और सभी को हम्पी ले जाना चाहती है।
हर फिल्म के बाद सागर अपनी निजी डायरी में अपने अनुभवों के बारे में लिखता था। मलार और सागर के आधे घंटे तक घूमने के बाद साईं आईं और 10 मिनट बाद हर्ष भी उनके साथ आ गया। चारों पानी की टंकी पर बैठ गए। साईं ने कुछ पल रुककर ऐसे बोलना शुरू किया जैसे वह किसी बोर्ड मीटिंग को संबोधित कर रही हों।
"सबसे पहले तो, इतने कम समय में आने के लिए आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।" सागर ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "इतनी औपचारिकता मत निभाइए," वह अपने ही मजाक पर हँस पड़ा।
साई ने गुस्से से उसकी ओर मुंह बनाया।
"ठीक है, मुझे माफ़ करना। कृपया जारी रखें," सागर ने किसी तरह अपनी हंसी रोकते हुए कहा। "तो दोस्तों, मैं अपनी ट्रैवल कंपनी शुरू करना चाहता हूँ। और मैं दुनिया को हम्पी दिखाना चाहता हूँ। सागर को यह पहले से ही पता है, और अब आप दोनों को भी पता चल गया है। अब आपके मन में सवाल होगा, हम्पी ही क्यों? क्योंकि ग्रेजुएशन के दौरान मैंने अपने माता-पिता से झूठ बोला था कि मैं अपने दोस्तों के साथ गोवा जा रहा हूँ और इसके बजाय मैं

अकेले हम्पी घूमने चला गया। उस अनुभव ने मुझे बदल दिया, और यही कारण है कि मैंने मास्टर्स में टूरिज्म मैनेजमेंट को अपना विषय चुना। अब, हम्पी इतना खास क्यों है? मैं इसे समझा नहीं सकता। आपको वहाँ जाकर खुद अनुभव करना होगा।"
"अब चलिए मुख्य मुद्दे पर आते हैं। आप सोच रहे होंगे कि मैंने आप लोगों को क्यों बुलाया है। मैं चाहती हूं कि आप सब मेरे साथ हम्पी की एक ट्रायल ट्रिप पर चलें, इससे पहले कि मैं अपनी कंपनी शुरू करूं। मैं यह अकेले नहीं कर सकती क्योंकि कंपनी को आधिकारिक तौर पर शुरू करने से पहले वास्तविक प्रतिक्रिया बहुत ज़रूरी है। सब कुछ मैं ही व्यवस्थित करूंगी - होटल, खाना, घूमने-फिरने की जगहें। हम खर्च आपस में बाँट लेंगे और अगला वीकेंड ट्रिप के लिए अच्छा रहेगा। तो बस यही बात है," साई ने एक ही बार में इतनी सारी बातें कह दीं कि उन्होंने खुद को शांत करने के लिए गहरी सांस ली।
"मैं तैयार हूँ," सागर ने सबसे पहले जवाब दिया। उसने हाँ कहते हुए हाथ उठाया। उसे देखकर साईं हँस पड़ी, मानो वह सोच रही हो कि यह एक ऐसी कक्षा है जहाँ साईं शिक्षक हैं और सागर आज्ञाकारी छात्र। मलार ने पहले हर्ष की ओर देखा और फिर जवाब दिया, "अगर सब तैयार हैं, तो मुझे कोई समस्या नहीं है।" हर्ष के चेहरे के हाव-भाव देखकर मलार समझ गई कि कुछ गड़बड़ है।
हर्ष ने जवाब दिया, "मैं आना तो चाहता हूँ, लेकिन मेरे माता-पिता ने पहले से ही योजना बना रखी है। हम अगले सप्ताहांत सूरत जा रहे हैं, और वो भी हमारे समाज की एक उबाऊ शादी में।" हर्ष ने आधी बात सच कही और बाकी कहानी मनगढ़ंत थी। असल में, खुशबू के परिवार ने हर्ष के परिवार को दो दिन के लिए अपने घर पर पारिवारिक मेल-जोल बढ़ाने और सगाई की तारीख तय करने के लिए आमंत्रित किया था।
"हम तारीखें बदल सकते हैं," मलार ने सुझाव दिया क्योंकि वह हर्ष के बिना यात्रा की कल्पना भी नहीं कर सकती थी।
"यह भी संभव नहीं है क्योंकि आगामी सप्ताहांत के बाद मेरी कई बैठकें तय हैं। कई जगहों से खरीदार आने वाले हैं। इसलिए मैं काम से छुट्टी नहीं ले सकता।" इस बार हर्ष बिलकुल सही था।

हर्ष की बातें सुनकर मलार का चेहरा उतर गया। उसे देखकर हर्ष को एहसास हुआ कि उसे कुछ करना होगा क्योंकि शायद उसे मलार के साथ यात्रा करने का दूसरा मौका न मिले। मलार वही थी जिससे वह प्यार करता था लेकिन अपने प्यार का इज़हार नहीं कर पाता था। और उसे जबरदस्ती उस इंसान से मिलना था जिसे वह ठीक से जानता भी नहीं था। मलार में उम्मीद जगाने और सकारात्मक सोच बनाए रखने की कोशिश करते हुए हर्ष ने कहा, "मुझे आज रात तक का समय दो। मैं देखता हूँ कि क्या मैं हालात बदल सकता हूँ।"
छत पर हुई मुलाकात के बाद सागर और साई अपने-अपने घर चले गए। मलार सब्ज़ी खरीदने नीचे गई और हर्ष भी उसके साथ चला गया। दोनों ने ज़्यादा बात नहीं की, लेकिन सड़क पार करते समय मलार ने हर्ष का हाथ पकड़कर कहा, "
"कृपया आइए। बहुत मज़ा आएगा।"
जब वे सड़क के दूसरी ओर पहुंचे, तब हर्ष ने कहा, "मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा।"

***

हर्ष का दिमाग अपने माता-पिता और खुशबू के परिवार को अपने वश में करने की योजना बनाने के लिए पूरी तरह से सक्रिय था। उसने खूब सोचा और आखिरकार उसे एक विचार सूझा। उसने तुरंत खुशबू को फोन किया। कुछ ही देर में खुशबू ने फोन उठा लिया।
"अरे, सप्ताह के बीच में आपका फोन देखकर अच्छा लगा," खुशबू ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा।
"ओह, हाँ। दरअसल, मुझे आपसे एक काम करवाना था," हर्ष ने जल्दी से कहा। "अच्छा, तो क्या आप तभी फोन करते हैं जब आपको मुझसे कुछ चाहिए होता है? बहुत चालाक!" खुशबू के शब्द एकदम सटीक थे।
"नहीं, ऐसी बात नहीं है। मुझे सच में कुछ बहुत ज़रूरी काम है।" हर्ष ने साफ-साफ कहा।
"ठीक है, ठीक है, बताओ, क्या बात है?"
"तो, जैसा कि आप जानते हैं, हमारे परिवारों ने आने वाले सप्ताहांत में मिलने का प्लान बनाया है। बात यह है कि मेरा एक बहुत करीबी स्कूली दोस्त, सागर, अगले महीने अमेरिका जा रहा है और हमारे समूह ने अगले सप्ताहांत में ही दो दिन की छुट्टी का प्लान बनाया है क्योंकि उस समय सभी लोग खाली रहेंगे। तो..." हर्ष ने मन ही मन सब कुछ पहले से तय कर लिया था।

"ठीक है, तो क्या मैं मुलाकात रद्द कर दूं?" खुशबू ने कहा। "नहीं, मुलाकात रद्द करने से काम नहीं चलेगा। क्योंकि मेरे माता-पिता मुझे गोवा की छुट्टी पर नहीं जाने देंगे। उन्हें लगेगा कि मैं गोवा जाकर शराब पीऊंगा," हर्ष बहुत सोच-समझकर बोल रहा था। "तो मुझे क्या करना चाहिए?" खुशबू ने पूछा।

"परिवारों को मिलने दीजिए। देखिए, क्या आप आने वाले सप्ताहांत में किसी तरह अनुपलब्ध रह सकते हैं? इससे मेरे माता-पिता मुझे जबरदस्ती नहीं लाएंगे और मैं अपने दोस्तों के साथ आनंद ले सकूंगा।"

"तो, तुम चाहते हो कि मैं अपने माता-पिता से झूठ बोलूँ?" खुशबू हैरान और गुस्से में बोली।

"नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। मैं बस आपकी मदद मांग रहा हूँ," हर्ष को डर था कि कहीं उसकी योजना विफल न हो जाए।

"रुको, मैं अपने पापा को बता देती हूं कि तुम मुझे झूठ बोलने के लिए उकसा रही हो," खुशबू अब और भी ज्यादा गुस्से में थी।

"नहीं, नहीं, नहीं! ऐसा मत करो! तुम कुछ मत करो; मैं सब संभाल लूंगा," हर्ष डर से कांप उठा। उसे इसकी उम्मीद नहीं थी। "हाहा। मुझे माफ़ करना। मैं बस तुम्हारे साथ मज़ाक कर रही थी। चिंता मत करो। मैं यहाँ सब संभाल लूंगी। अपने माता-पिता को बता देना कि मैं उपलब्ध नहीं रहूंगी, ताकि वे तुम्हें अपने दोस्तों के साथ जाने की अनुमति दे दें," खुशबू ने हर्ष को दिलासा दिया।

हर्ष खुशबू की इस बचकानी शरारत से बहुत गुस्सा हुआ, लेकिन उसने अपने गुस्से पर काबू रखा। "बहुत-बहुत धन्यवाद," उसने खुशबू को धन्यवाद कहा। "बस एक बात," खुशबू ने कहा।

"क्या?"

"गोवा से वापस आने के बाद आपको सूरत आकर मुझसे मिलना होगा। हम डेट पर जाएंगे।"

"ज़रूर," हर्ष ने इस बारे में ज़्यादा नहीं सोचा क्योंकि उस समय उसके लिए सबसे ज़रूरी बात मलार के साथ हम्पी जाना था।

खुशबू से बात करने के बाद हर्ष ने अपना व्हाट्सएप खोला। उसने सागर द्वारा बनाए गए "टेरेस बडीज़" नाम के ग्रुप पर क्लिक किया। उसने लिखा

दोस्तों, मैं तैयार हूँ, और योजना पर काम शुरू हो गया है! चीयर्स!
सबसे पहले मलार ने जवाब दिया, "वाह।"
इसके बाद सागर ने कहा, "वह तो मेरे दोस्त जैसा है।"
साई ने लिखा, "बहुत बढ़िया। तो अगले सप्ताहांत हम्पी चलते हैं।" इसके बाद मलार ने हर्ष को संदेश भेजा, "आने के लिए धन्यवाद।"

अध्याय 25

चार दिन बाद एक कॉन्फ्रेंस कॉल पर, साई ने सबसे पहले बोलना शुरू किया, "दोस्तों, एक समस्या है। मेरी शुरुआती योजना मुंबई से हम्पी बस से जाने की थी। लेकिन मुझे अभी पता चला है कि सप्ताहांत के लिए उस रूट की सभी बसें भरी हुई हैं और ट्रेन से जाना तो संभव ही नहीं था। इसलिए अब सिर्फ एक ही विकल्प बचा है।" साई के बोलने से पहले ही सागर ने पूछा, "वह क्या है?" साई ने जवाब दिया, "हमें कार से जाना होगा। किसकी कार होगी, यह मुझे नहीं पता क्योंकि टैक्सी किराए पर लेने में बहुत ज़्यादा खर्च आएगा।"

मलार जानती थी कि कार किसकी होगी, इसलिए उसने सीधे मुद्दे पर आते हुए कहा, "सागर, कृपया, मैं नहीं चाहती कि यह यात्रा समाप्त हो।"

हर्ष समझ गया और समूह में शामिल हो गया, "चलो सागर, तुम कर सकते हो।" साई ने कहा, "सागर, क्या तुम्हारे पास कार है?"

सागर ने अंत में उत्तर दिया, "हाँ, मेरे पास एक एर्टिगा है, लेकिन मुझे उसे चलाना नहीं आता। मेरे पिताजी ज्यादातर समय उसका इस्तेमाल करते हैं।"

"तो फिर आपको ड्राइविंग लाइसेंस कैसे मिला?" मलार ने पूछा। "मैंने परीक्षा लेने वाले पुलिसवाले को रिश्वत दी थी। असल में, मैंने कभी गाड़ी नहीं चलाई है।"

"मैं गाड़ी चला सकता हूँ," हर्ष ने कहा। हीरो बनने का उसका मौका यहीं था। वह पहले से ही कल्पना कर रहा था कि गाड़ी चलाते समय मलार उसके बगल में बैठी होगी।

"हर्ष, मुंबई से 750 किलोमीटर दूर है। क्या तुम गाड़ी चला सकते हो?" साई को पूरी तरह से आश्वस्त होना ज़रूरी था।

"मुझे पूरा यकीन है। मैं पहले भी गुजरात तक गाड़ी चला चुका हूँ, इसलिए मैं संभाल लूँगा।" हर्ष गाड़ी चलाने के लिए दृढ़ संकल्पित था।

"सागर, कृपया हां कह दो," मलार सागर को इतनी अच्छी तरह जानती थी कि उसे पता था कि सागर का अगला शब्द क्या होगा।

"ठीक है, मैं तैयार हूँ।" सेगर उस यात्रा पर जाने के लिए बहुत उत्सुक था, और फिर उसने अपने माता-पिता को कार ले जाने के लिए मनाने के तरीके सोचने शुरू कर दिए। तीनों ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर खुशी मनाई। उन्हें पता था कि यह सचमुच होने वाला है।
साईं ने निर्देश दिया, "तो दोस्तों, हमें कल सुबह 5 बजे निकलना है। जल्दी सो जाओ, अपने बैग में ठंडे कपड़े पैक कर लो, और हम्पी के प्यार भरे आलिंगन के लिए तैयार हो जाओ।"

***

उस रात हर्ष अपने पिता से बात करने गया। "पापा, मैंने अभी खुशबू से बात की। वो शनिवार और रविवार को उपलब्ध नहीं होंगी। पता नहीं, शायद उन्हें कुछ काम है। इसलिए मैं अपने दोस्तों के साथ तीन दिन के लिए लोनावला जाने की सोच रहा हूँ।"
"क्या? वह कहाँ जा रही है?" हर्ष के पिता यह जानकारी सुनकर आश्चर्यचकित रह गए।
"मुझे नहीं पता। उसने मुझे बताया था कि जिस समय घूमने का प्लान है, उस समय वह उपलब्ध नहीं होगी," हर्ष ने उसकी बात को संभालने की कोशिश करते हुए कहा। हर्ष के पिता ने अपना मोबाइल निकाला और खुशबू के पिता को फोन करने की कोशिश की। हर्ष ने उन्हें रोक दिया।
"पापा, हमें खुशबू के पिता से शादी से पहले उसके बारे में पूछने का कोई हक नहीं है। इससे लगेगा कि हम उन पर नियंत्रण कर रहे हैं। अमीर और बड़े परिवारों को यह पसंद नहीं आता।" हर्ष जानता था कि उसके पिता की कमजोरी उनका अमीर और बड़ा परिवार होना था, और वह इसका फायदा उठा रहे थे। हर्ष खुद अपने अभिनय कौशल से हैरान था।
हर्ष के पिता अपने बेटे की बात समझ गए। उन्होंने कोई फोन नहीं किया बल्कि हर्ष से ही पूछा।
"तुम हमारे साथ क्यों नहीं आ रहे हो?" हर्ष को इसका अंदाजा था, लेकिन वह तैयार था।
"पापा, खुशबू ने मुझे साफ-साफ कहा था कि पारिवारिक सभा में जाना है या नहीं, यह मेरी मर्जी है। शायद कोई वजह हो, इसलिए बेहतर होगा कि आप और मम्मी चले जाएं। मैं अपने दोस्तों के साथ मजे करूंगी।"
हर्ष के पिता को मामला बेहद संदिग्ध लगा, लेकिन उन्होंने आगे छानबीन नहीं की। उन्होंने हर्ष की बात को बस मान लिया।

उसी क्षण हर्ष ने गहरी सांस ली और मलार को संदेश भेजा, "कल मिलते हैं, शुभ रात्रि।"

अध्याय 26

शुक्रवार सुबह, 5 बजे।
सब तैयार थे। जीवन में एक बार सबको बदलाव का मौका मिलता है। यह यात्रा उनके लिए वही मौका था। मलार के लिए यह प्रेम की खोज की यात्रा थी। हर्ष के लिए यह सच्चाई का सामना करने और उसके लिए खड़े होने की यात्रा थी। साई के लिए यह कुछ ऐसा करने की यात्रा थी जो उसके लिए सबसे ज़्यादा मायने रखता था, और सागर के लिए यह अपनी आवाज़ खोजने की यात्रा थी।
लड़के कार में बैठ गए। हर्ष ड्राइविंग सीट पर बैठा और मलार उसके बगल में। सागर और साई पीछे की सीट पर बैठे थे। हर्ष ने इंजन स्टार्ट किया, लेकिन साई ने उसे रोकते हुए कहा, "एक मिनट रुको।" उसने आगे कहा, "सागर, क्या तुम एक मिनट के लिए नीचे उतर सकते हो? थोड़ा आगे चलो और कार के आगे बढ़ने पर हमारे बगल से होकर निकल जाओ।"
"क्या? क्यों?" सागर यह जानकर हैरान था कि साई उसे ऐसी अजीबोगरीब चीजें करने के लिए क्यों कह रहा था।

"मैं तुम्हें सब कुछ समझा दूँगा। अभी के लिए, कृपया ऐसा करो," साई ने अनुरोध किया। गहरी साँस लेते हुए सागर ने कहा, "ठीक है," और कार से नीचे उतर गया। वह थोड़ा आगे बढ़ा और कार की ओर मुड़ा। हर्ष ने एक्सीलरेटर दबाया और कार चल पड़ी। सागर कार के रास्ते में आ गया। साई ने खिड़की नीचे की और कहा, "धन्यवाद। अब तुम अंदर आ सकते हो।" सागर साई के बगल में बैठ गया, और यहीं से उनकी हम्पी की यात्रा शुरू हुई। सुबह के 7 बजे उन्होंने चाय और गरमा गरम मिसल पाव के लिए पहला पड़ाव लिया। हर्ष और मलार खाना ऑर्डर करने गए क्योंकि यह एक सेल्फ-सर्विस रेस्टोरेंट था। सागर और साई साथ थे। सूरज धीरे-धीरे उग रहा था। सागर ने पूछा,

"तुमने मुझसे वह अजीब काम क्यों करवाया?"

"अरे, ये! ये तो मेरे माता-पिता की एक अजीब आदत है। जब भी हम कहीं घूमने जाते हैं या कोई ज़रूरी काम होता है, तो मेरे माता-पिता मुझसे यही करवाते हैं। उन्हें लगता है कि मैं उनका लकी चार्म हूँ। इसलिए मेरे उनके रास्ते में आने से उन्हें सौभाग्य और समृद्धि मिलती है। मेरे लिए तो तुम लकी चार्म हो। जब से तुम छत पर मुझसे टकराई हो, तब से बहुत सी अच्छी चीज़ें होने लगी हैं। इसलिए मैंने तुमसे ये करवाया, अब हँसो मत," साई ने मुस्कुराते हुए समझाया। "क्या? तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारे लिए लकी हूँ?" सागर मुस्कुराया और उसे अंदर से कुछ महसूस हुआ। पहली बार किसी लड़की ने उसे लकी कहा था। "मुझे लगता है मेरा यही मतलब था," साई इस बार मुस्कुराई। "धन्यवाद," सागर सचमुच भावुक हो गया।

साई और सागर दोनों को अपना-अपना पल मिल गया, और कुछ समय बाद उन्होंने अपनी यात्रा फिर से शुरू कर दी। पुणे में प्रवेश करने से ठीक पहले, गूगल मैप्स ने दो रास्ते दिखाए। पहला, सोलापुर होते हुए और दूसरा, हुबली होते हुए। दूसरा रास्ता 30 मिनट तेज़ था, इसलिए उन्होंने उसी रास्ते से जाने का फैसला किया। पुणे के बाद, मलार और सागर ने अपनी जगह बदल ली। मलार पीछे जाकर बैठ गई, और सागर हर्ष के बगल में बैठ गया।

साई ने गाने बजाने की ज़िम्मेदारी ली। उसने सबसे पहले फिल्म 'हाईवे' का 'पटाखा गुड्डी' बजाया। इससे उन चारों के बीच इस बात पर चर्चा शुरू हो गई कि इम्तियाज़ अली की हर फिल्म यात्रा और सूफीवाद से जुड़ी हुई है।

दूसरा गाना प्रतीक कुहाड़ का "तुम जब पास आती हो" था। साई के अलावा कोई भी गायक के बारे में नहीं जानता था, लेकिन सभी उनकी आवाज़ से मंत्रमुग्ध हो गए। साई ने उन्हें बताया कि प्रतीक कुहाड़ एक स्वतंत्र कलाकार हैं, लेकिन उनके गाने इंटरनेट पर बहुत लोकप्रिय हैं। फिर उन्होंने उनके सभी मशहूर गाने जैसे दिल बेपरवाह, तूने कहा और ये पल बजाए। सागर को उनकी आवाज़ में एक अनूठी शांति महसूस हुई और उन्हें दिल बेपरवाह की एक खास पंक्ति बहुत पसंद आई।

"Iss dil ki aadat yahi hai,

Gir kar sambhalta nahi hai,

Zaalim samajhta nahi hai,

Yeh koi zubaan."

ये पल की एक और पंक्ति

"Labon pe jo bhi ho,

Keh bhi do thehera hoon main,

Yeh Dil ki baato ko

Rok na thahera hoon main."

गाने के बोल मलार के दिल को छू गए। वह हर्ष से कुछ कहना चाहती थी, और हर्ष की स्थिति भी कुछ ऐसी ही थी।

साईं ने फिर हिंदी से मलयालम में गाने बदले। पहला गाना प्रेमम फिल्म का "मलारे" था। भाषा न समझने के बावजूद हर्ष को गाना बहुत अच्छा लगा। वह तुरंत समझ गया कि गायक प्यार के बारे में गा रहा है। उसने एक पल के लिए रियरव्यू मिरर में मलारे को देखा। मलारे गाना सुनने के बाद सागर ने सबको बताया कि उसे प्रेमम फिल्म कितनी पसंद आई और वह फिल्म के नायक जॉर्ज से कितना जुड़ाव महसूस करता है। सागर की बातें सुनकर साईं मुस्कुरा उठे। वे गाने सुनते रहे और मन में आने वाली हर बात पर चर्चा करते रहे। सफर सुखद रहा और दोपहर 12 बजे कोल्हापुर पार करने के बाद वे दोपहर के भोजन के लिए रुके।

शाम करीब 5 बजे वे हुबली पहुँच गए, और अब हम्पी 160 किलोमीटर दूर था। अब तक का सफर सुगम और आनंददायक रहा, लेकिन साई ने गूगल मैप्स पर आँख बंद करके भरोसा

करके बड़ी गलती कर दी। गूगल मैप्स ने एक ज़हरीले, स्त्री-विरोधी प्रेमी की तरह व्यवहार किया और चारों को हुबली जाने वाले एक गलत शॉर्टकट रास्ते पर ले गया, जो बड़ी कार के लिए उपयुक्त नहीं था। उन्होंने किसी तरह स्थानीय लोगों से पूछकर रास्ता ढूँढा, लेकिन खराब सड़कों के कारण उन्हें मुख्य राजमार्ग तक पहुँचने में 30 मिनट लग गए।

उसके बाद से हम्पी का सफर मुसीबतों से भरा रहा और हालात बेहद खराब होते चले गए। शाम छह बजे तक सूरज डूब चुका था और आसमान तेजी से अंधेरा होने लगा था। सबसे बुरी बात यह थी कि सड़क पर कोई बत्ती नहीं थी और जगह-जगह गड्ढे और स्पीड ब्रेकर थे। रही-सही कसर यह थी कि हाईवे एक लेन का था, इसलिए गाड़ियां विपरीत दिशा से आ रही थीं।

हर्ष ने साई से पूछा, "सड़क इतनी खराब क्यों है?"

साई को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। "असल बात यह है कि मैं इस रास्ते पर पहली बार यात्रा कर रहा हूँ।"

“क्या? क्या तुम ये देख रहे हो? पिछले 30 मिनट से मैं 20 की रफ्तार से गाड़ी चला रहा हूँ। सड़क पर बत्ती नहीं है, ऊपर से इतने गड्ढे हैं। अगले 100 किलोमीटर कैसे तय करेंगे?” हर्ष को पहली बार गुस्सा आया। सुबह से गाड़ी चलाते-चलाते वो थक गया था, और अब सामने से आ रही गाड़ियों की तेज रोशनी से उसका सिर दर्द से फट रहा था।

"माफ़ करना दोस्तों। मुझे नहीं पता था कि सड़कें ऐसी होंगी, क्योंकि बैंगलोर से हम्पी तक सड़कें काफ़ी अच्छी हैं," साई दुखी थी क्योंकि उसकी सपनों की यात्रा का पहला कदम एक बुरे सपने में बदल रहा था। वह बेहतर योजना न बनाने के लिए खुद को कोस रही थी। अब सब उसकी वजह से परेशान हो रहे थे।

“दोस्तों, अगर इन गड्ढों की वजह से टायर पंचर हो गया तो क्या होगा? गाड़ी में स्पेयर टायर भी नहीं है, और इस अंधेरे में हमें कोई मैकेनिक भी नहीं मिलेगा।” सागर आग में घी डाल रहा था। उसे खुद भी नहीं पता था कि इतनी मुश्किल स्थिति में वह इतनी नकारात्मक बातें क्यों बोल रहा है।

"सागर, ऐसी बकवास करना बंद करो, और हर्ष, चिंता मत करो, अगले पेट्रोल पंप पर रुक जाओ। वहाँ लोगों को आगे की सड़क की स्थिति के बारे में ज़रूर पता चल जाएगा। और साई, इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है। सिर्फ़ 100 किलोमीटर ही तो है, शांत हो जाओ।" मलार ने

अब कमान संभाली। वे बिल्कुल भी घबराना नहीं चाहते थे। पेट्रोल पंप के मैनेजर ने उन्हें बताया कि अगले कस्बे तक सड़कें खराब हैं। उसके बाद सब ठीक था। यह सुनकर सबने राहत की सांस ली। मैनेजर ने यह भी कहा कि सोलापुर का रास्ता उस रास्ते से बेहतर है। साई ने इस बात पर ध्यान दिया। एक ट्रैवल मैनेजर के तौर पर यह उसका पहला अनुभव था। उन्होंने जल्द ही अपनी यात्रा फिर से शुरू की और ठीक रात 8 बजे होस्पेट पहुँच गए।

अध्याय 27

होटल का नाम मल्लिगी था, और यह जगह सभी के लिए वाकई ताज़गी भरी साबित हुई। दक्षिण भारतीय रेशमी कांजीवरम साड़ियाँ पहने दो महिला रिसेप्शनिस्टों ने गर्मजोशी भरी मुस्कान के साथ उनका स्वागत किया। उनका पंजीकरण किया गया और फिर उन्हें गरमा गरम फ़िल्टर कॉफ़ी परोसी गई। उस गरमा गरम स्वागत पेय की एक घूँट ने चारों की थकान दूर कर दी। कॉफ़ी में कुछ खास बात थी, जिसे समझाना मुश्किल था। सभी लोग होटल की लॉबी में एक घेरे में खड़े हो गए क्योंकि साई को एक घोषणा करनी थी।

“दोस्तों, हमने अपनी यात्रा का पहला भाग सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। तो चलिए सब मिलकर ताली बजाते हैं,” बाकी तीनों ने एक-दूसरे को देखा और मुस्कुराते हुए ताली बजाई। साई ने आगे कहा, “अब हर्ष के लिए ताली बजाते हैं, जिसने हमें बहुत सुरक्षित तरीके से गाड़ी चलाई। उसी की वजह से हम होस्पेट में खड़े हैं, और मुझे खेद है कि मैंने सड़कों के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं जुटाई।” सबने फिर से ताली बजाई, लेकिन मलार की ताली सबसे तेज़ थी। हर्ष ने यह देखा और मुस्कुराया।

“तो चलिए आज का दिन यहीं समाप्त करते हैं और कमरे में ही खाना ऑर्डर करते हैं। मलार और मैं ऑर्डर करेंगे। आप लोग भी हमारे साथ आ जाइए।” साई ने अपनी बात समाप्त की और जल्द ही लड़के-लड़कियां अपने-अपने कमरों में पहुंच गए।

वे चारों अपने-अपने कमरों में जाकर आराम से बैठ गए।

अगले घंटे में, सभी लोग तरोताज़ा होकर लड़कियों के कमरे में रात के खाने के लिए इकट्ठा हुए। उन सभी की भूख इतनी तीव्र थी कि उनके पेट में गुड़गुड़ाहट हो रही थी और खाने के बारे में सोचते ही उनके मुंह में पानी आ रहा था।

उन्होंने पिज्जा, हक्का नूडल्स, दाल तड़का और चावल मंगवाए थे। लेकिन होटल के कर्मचारियों ने सिर्फ तीन प्लेटें ही परोसीं, और हर्ष को कुछ नहीं मिला। सागर ने कहा, "रुको, मैं फोन करके एक और प्लेट मंगवा लेता हूँ।" मलार ने उसे रोक दिया।

“कोई बात नहीं। हर्ष और मैं साथ में खाना खा सकते हैं। मतलब, हम एक ही थाली में से खाना बाँट सकते हैं क्योंकि थाली आने तक खाना ठंडा हो जाएगा। तो, कोई दिक्कत नहीं है।”

सागर ने बस इतना कहा, "ठीक है।"
हर्ष उठकर मलार के बगल में खाने के लिए बैठ गया और सबने मिलकर खाना शुरू कर दिया। कमरे का माहौल उनकी हंसी और चुटकुलों से खुशनुमा हो गया।
सागर हर्ष और मलार को ध्यान से देख रहा था, और फिर उसने साई को भी उन्हें देखने का इशारा किया। साई और सागर दोनों को एक ही बात समझ आ गई।
खाना जल्दी खत्म हो गया, लेकिन वे बिस्तर पर बैठे-बैठे रात 11 बजे तक बातें करते रहे। आखिर में साई ने सबको सोने के लिए कहा क्योंकि अगला दिन काफी लंबा होने वाला था।
लड़के अपने कमरे में चले गए। तभी साई को सागर का संदेश मिला। उसमें लिखा था, “अरे, मलार से उसकी प्रेम कहानी के बारे में पूछ कर देखो? मैंने उससे यह सवाल बहुत पहले पूछा था। ☺☺” साई हँसी और बोली, “मेरा सुझाव है कि तुम यही सवाल अपने रूममेट से पूछो। शुभ रात्रि।”
दोनों कमरों में लड़के-लड़कियां सो नहीं पा रहे थे। कोई महत्वपूर्ण चर्चा चल रही थी।
सागर ने हर्ष से अप्रत्यक्ष रूप से तब पूछा जब वह अपने मोबाइल फोन पर मलार से चैट करने में व्यस्त था।
“तो भाई, आपकी शादी कब हो रही है?” शादी की बात सुनते ही हर्ष का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। “ओह! क्या सागर को मेरी सगाई के बारे में पता चल गया?”
“नहीं। ऐसा संभव नहीं है। वह यूं ही पूछ रहा होगा,” हर्ष ने मन ही मन कहा और फिर सागर को जवाब दिया, जो उसके बगल में सो रहा था और अश्विन सांघी का उपन्यास पढ़ रहा था।
“मुझे नहीं पता। पिताजी मुझे लगातार मजबूर करते रहते हैं, लेकिन मुझे अपने समाज का कोई भी व्यक्ति पसंद नहीं है।”

***

लड़कियों के कमरे में, साई और मलार एक ही बिस्तर पर लेटी थीं और अपने स्कूल और कॉलेज के दिनों की बातें कर रही थीं। साई ने देखा कि मलार किसी को मैसेज करते हुए शर्मा रही थी। उसने बात बदलते हुए मलार से पूछा, "तो, तुम्हारी निजी ज़िंदगी कैसी है? क्या तुम कभी किसी रिश्ते में रही हो?" रिश्ते शब्द सुनते ही मलार को निमित के साथ बिताए वो दिन याद आ गए। वो समय अच्छा भी था और बुरा भी।

उसने जवाब दिया, “हां, मैं काफी समय तक रिलेशनशिप में थी, लेकिन बात नहीं बनी, इसलिए हम अलग हो गए। आप बताइए आपके बारे में क्या?”
“मैं कभी किसी गंभीर रिश्ते में नहीं रही। अभी क्या स्थिति है? क्या तुम किसी को पसंद करती हो?” साई ने पूछा।
इसी दौरान सागर ने हर्ष से भी ऐसा ही सवाल पूछा, "ठीक है, लेकिन क्या तुम्हें अपने समाज से बाहर का कोई व्यक्ति पसंद है?"
मलार और हर्ष दोनों ने सोचने के लिए कुछ सेकंड का समय लिया। पहले, उन्होंने मन ही मन स्वीकार किया कि वे एक-दूसरे से प्यार करते हैं और फिर साई और सागर से भी यही बात कही।
"हां, मैं किसी से प्यार करता हूँ।"
साई और सागर का अगला सवाल भी वही था, "तो वह खास इंसान कौन है?"
अगले ही पल, जब दुनिया थम सी गई, तो मालार ने जवाब दिया, "हर्ष।"
हर्ष ने उत्तर दिया, "मलार।"
उस रात कोई नहीं सोया। इसके बजाय, साई और सागर ने मलार और हर्ष की प्रेम कहानी सुनी।
फिर वह महत्वपूर्ण प्रश्न आया जो साई और सागर ने एक ही समय पर पूछा।
क्या आपने हर्ष के साथ अपनी भावनाएं साझा की हैं?
क्या मलार को तुम्हारी भावनाओं के बारे में पता है?
मलार और हर्ष दोनों का एक ही जवाब था "नहीं"।
लगभग 3:30 बजे, चारों ने सोने का फैसला किया, लेकिन उससे ठीक पहले, साई ने सागर को संदेश भेजा।
आपका सबसे अच्छा दोस्त आपके सबसे अच्छे दोस्त से प्यार करता है।
सागर मुस्कुराया और बोला, “हाँ, मुझे अभी पता चला,” उसने टाइप करना जारी रखा, “लेकिन उन्होंने अभी तक एक-दूसरे से अपने दिल की बात नहीं कही है। कल कुछ करते हैं। शुभ रात्रि।” साई ने जवाब में संदेश भेजा, “ठीक है, शुभ रात्रि।”

अध्याय 28

अगली सुबह होस्पेट के होटल मल्लिगी में चारों के लिए बहुत ताजगी भरी रही। मलार और साईं सुबह करीब 8 बजे सबसे पहले उठीं। फ्रेश होने के बाद वे लड़कों को जगाने गईं। साईं ने उनके घर की घंटी बजाई। मलार उनके साथ थीं।

हर्ष उठ खड़ा हुआ। दरवाजा खोलते ही उसने टी-शर्ट नहीं पहनी हुई थी। हर्ष के सुगठित शरीर और सिक्स-पैक देखकर साई हैरान रह गई। एक पल के लिए वह कुछ बोल नहीं पाई। तभी मलार मुस्कुराते हुए बोली, “हम नाश्ते के लिए जा रहे हैं। तुम लोग जल्दी आओ।”

हर्ष अभी भी अपनी आँखें मल रहा था। उसने मलार की ओर देखकर मुस्कुराते हुए कहा, "ठीक है, हम 10 मिनट में आ जाएँगे।"

दस मिनट बाद, चारों लोग होटल के रेस्तरां में स्विमिंग पूल के सामने बैठे थे। वहाँ नाश्ते का बुफे लगा हुआ था और सभी लोग भोजन का आनंद ले रहे थे। आखिर, अच्छा खाना खुशी लाता है।

साई ने चीज़ ऑमलेट और तरबूज़ के साथ गरमा गरम कॉफ़ी ली। मलार और हर्ष ने गरमा गरम इडली और डोसा खाए, जो उस होटल की खासियत थी। सागर का मूड बिल्कुल अलग था। उसने कपकेक और चॉकलेट डोनट्स ऑर्डर किए।

***

नाश्ते के बाद, साई ने होटल की लॉबी में योजना के अगले भाग के बारे में बताया, जो चेक आउट करने वाले पर्यटकों और चेक इन करने वाले नए मेहमानों से भरी हुई थी। चमेली के फूलों की खुशबू ने होटल के वातावरण को शांति से भर दिया था।

साई ने कहा, “हमारी कैब अगले 30 से 40 मिनट में आ जाएगी। यह हमें हम्पी ले जाएगी, जो हमारे होटल से 20 किलोमीटर दूर है। तो तैयार हो जाइए, दोस्तों, और ढीले-ढाले और आरामदायक कपड़े पहनिए।”

साई और मलार अपने कमरे में चले गए। हर्ष अकेला चला गया, क्योंकि सागर ने उसे बताया था कि उसे फोन करना है।

सागर ने साई का नंबर डायल किया। उसने तुरंत फोन उठा लिया। सागर ने पूछा, "क्या मलार यहीं कहीं है?"
“नहीं, वह नहा रही है,” साई ने जवाब दिया।
"तो, क्या उसने आगे कुछ और कहा?"
"नहीं, उसने बस इतना कहा कि अगर वह हर्ष को शादी का प्रस्ताव देती है तो हर्ष उसके बारे में क्या सोचेगा, यह उसे नहीं पता।"
"हर्ष ने भी कुछ इसी तरह की बात कही।"
“ठीक है, आज हम एक काम करते हैं। हम उन्हें यथासंभव एक साथ रखने की कोशिश करेंगे, और हम दोनों अपने-अपने काम से काम रखेंगे। उनके बीच की निकटता से निश्चित रूप से मदद मिलेगी।”
“ठीक है, हो गया,” साई ने जवाब दिया।
सागर ने फोन काट दिया और नहाने के लिए दौड़ पड़ा।
टैक्सी आ गई और वे चारों तैयार थे। साई ड्राइवर के बगल में बैठ गया और बाकी लोग पीछे की सीट पर बैठ गए। मलार और हर्ष एक दूसरे के बगल में बैठे थे।
साई ने ड्राइवर का नाम पूछा। वह लगभग 30 वर्ष का लग रहा था। ड्राइवर ने बड़े ही स्नेह से बताया, “मेरा नाम सी. रामचंद्रन है। आप मुझे राम कह सकते हैं।”
सागर ने एक घिसा-पिटा सवाल पूछा, “क्या आपको हिंदी समझ आती है, साहब?” श्री राम हँस पड़े। “मैं साफ़-साफ़ हिंदी नहीं बोल सकता, लेकिन आप सब जो बोल रहे हैं, समझ जाता हूँ।” सब लोग हँस पड़े। साई ने उनसे गाड़ी स्टार्ट करने को कहा और उनकी यात्रा शुरू हो गई।
वे होस्पेत कस्बे की सड़कों से गुज़रे। सागर, मलार और हर्ष के लिए दक्षिण भारतीय घर, लोग, बैलगाड़ियाँ और मंदिर बिल्कुल नए थे। एक अनोखी जगह का यही असर होता है।
जिज्ञासा जन्म लेती है और आपकी नज़रें मुंबई जैसे शहर में महत्वहीन लगने वाली साधारण चीज़ों को भी तलाशने लगती हैं। हर्ष ने सड़क के दूसरी ओर एक कॉफी शॉप देखी।
दुकानदार गरमागरम कॉफी बना रहा था और हर्ष को यह बहुत आकर्षक लगा। वह मलार की ओर मुड़ा। उसने मलार की आँखें देखीं, जो काजल लगाने पर उसे किसी पेंटिंग जैसी लग

रही थीं। उसने देखा कि मलार ने सफेद टी-शर्ट और आरामदायक नीली जींस पहनी हुई थी। उसके बगल में बैठकर हर्ष ने सोचा कि मलार उसे हमेशा आकर्षित करती रहेगी।
अब तक वे होस्पेट से बाहर निकल चुके थे, और मलार दूर-दूर तक फैले हरे-भरे धान के खेतों को निहार रही थी। उसे देखकर उसे जीवंतता का अहसास हो रहा था। उसने हर्ष की ओर मुड़कर देखा और महसूस किया कि हर्ष भी उसे ही देख रहा था।
वे हम्पी के करीब पहुंच रहे थे, और सागर ने सड़क के दोनों ओर सबसे पहले इसे देखा।
“साई, यहाँ के पत्थर कितने बड़े हैं! ये सभी अलग-अलग आकृतियों के हैं! मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा,” साई मुस्कुराई, यह महसूस करते हुए कि आखिरकार वह वह ट्रैवल गाइड बन सकती है जो वह हमेशा से बनना चाहती थी।
“हाँ। हम्पी में ये बहुत सारे हैं, और इन्हें चट्टानें कहते हैं। ये यहाँ हर आकार और प्रकार में पाई जाती हैं। बड़ी, छोटी, और हम्पी में इनके होने के पीछे वैज्ञानिक और पौराणिक दोनों कारण हैं,” साई ने समझाया। सभी ने हम्पी के बारे में मिली जानकारी को समझते हुए सिर हिलाया।
उन्होंने तुंगभद्रा नदी के पास हम्पी में अपना पहला पड़ाव डाला। वे चारों कार से बाहर निकल गए।
साई ने कमान संभाली। “तो दोस्तों, अब हम आधिकारिक तौर पर हम्पी में प्रवेश कर चुके हैं। सबसे पहले हम कोराकल नाव की सवारी का आनंद लेंगे, लेकिन उससे पहले, मैं आपको इस पौराणिक स्थान का थोड़ा इतिहास बता दूं।” सागर, मलार और हर्ष ध्यान से सुन रहे थे।
साईं ने पूरे उत्साह से उस जगह का वर्णन करना जारी रखा। “हम्पी वर्तमान में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है। इसका इतिहास रामायण काल तक जाता है। इसे 'किष्किंदा' के नाम से जाना जाता था, और इसका प्रमाण यह है कि हम्पी में भगवान हनुमान का जन्मस्थान है।
14 वीं शताब्दी के दौरान, हम्पी विजयनगर साम्राज्य का केंद्र बन गया। दुनिया के विभिन्न हिस्सों के लोग हम्पी को महलों, मंदिरों और विशाल स्मारकों से भरा सबसे समृद्ध शहर बताते थे। और अब आप जो देख रहे हैं, वे उन सभी महलों, मंदिरों और स्मारकों के खंडहर हैं। मुझे लगता है कि समय का यही हाल होता है। तो चलिए, अब नाव की सवारी शुरू करते हैं।”
वे सभी तुंगभद्रा नदी की ओर चल पड़े। नदी ऐसे बह रही थी मानो समय थम गया हो। नदी के दोनों किनारों पर विशाल चट्टानें और मंदिरों के खंडहर थे। यह किसी पौराणिक कॉमिक के

लिए एकदम उपयुक्त दृश्य था। मलार ने अपना फोन निकाला और जो चीजें उसे आकर्षक लगीं, उनकी तस्वीरें खींचने लगी। उसने हर्ष को एक विशाल चट्टान के नीचे खड़े होने के लिए कहा और उसकी भी तस्वीर खींची।

सागर साईं के साथ था। उस दिन साईं ने नीली कुर्ती और काली लेगिंग पहनी हुई थी। उसके माथे पर एक छोटी सी बिंदी थी। सागर को वह बेहद खूबसूरत लगी, खासकर जब उसने उसे साफ नीली नदी को निहारते हुए देखा।

वे नदी पर पहुँचे जहाँ कई छोटी नावें कतार में खड़ी थीं। वे सभी गोल आकार की और वज़न में बहुत हल्की थीं। साई ने एक लड़के से चार लोगों के लिए 1000 रुपये का किराया तय करने के लिए बातचीत की। लड़का मान गया। उसका नाम स्वामी था, और वह मुस्कुराया, यह समझते हुए कि उसे दिन का पहला बड़ा सौदा मिल गया है।

वे सभी छोटी नाव में बैठ गए। मलार और हर्ष एक-दूसरे के बगल में बैठे थे और एक-दूसरे के स्पर्श को महसूस कर रहे थे। वहीं सागर ने अपना फोन साई को तस्वीरें खींचने के लिए दे दिया। सागर ने हुडी, मिलिट्री प्रिंट वाली टोपी और ग्रे जींस पहनी हुई थी। साई को उसकी तस्वीरें खींचते समय सागर प्यारा लगा।

स्वामी ने लकड़ी के चप्पूओं की सहायता से हल्की गोल नाव को चलाना शुरू किया। कुछ ही मिनटों में, उन्हें ऐसा लगा मानो सब कुछ रुक गया हो। यह शांत और स्थिर तुंगभद्रा नदी के कारण था।

नाव चल रही थी, लेकिन उन्हें महसूस नहीं हो रहा था कि वह चल रही है। शांत नदी के साथ बहने वाली ठंडी हवा का ऐसा प्रभाव था कि उन्हें लग रहा था कि उस पल ही उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण है। हर्ष ने अपनी आँखें बंद कर लीं। लंबे समय बाद वह छुट्टी पर था और उसे मानसिक उलझनों से मुक्ति का एहसास हो रहा था। मलार उसे देखती रही और उसकी तस्वीरें खींचती रही। 15 मिनट बीत गए और स्वामी ने चारों के बीच की चुप्पी तोड़ी। “तो अब हम एक विशाल चट्टान के नीचे से गुजरेंगे। इसलिए जब हम चट्टान के पास पहुँचें, तो कृपया ठीक से झुक जाएँ।” सभी ने एक साथ सिर हिलाया। स्वामी ने नाव को धीरे-धीरे नदी को छूती हुई विशाल चट्टान के पास ले गए। स्वामी के विशाल और भव्य चट्टान के नीचे से नाव गुजारते ही सभी ने खुद को समायोजित किया और झुक गए। वहाँ अँधेरा और ठंडक थी, और उस

क्षण मलार ने संतुलन बनाए रखने के लिए हर्ष का हाथ कसकर पकड़ लिया। स्वामी ने अपना फोन निकाला, फ्लैशलाइट चालू की और किसी चीज़ की ओर इशारा किया। “वहाँ देखो!” उन्होंने किसी चीज़ की ओर इशारा करते हुए कहा। चारों ने चट्टान के किनारे पर बना एक घोंसला देखा। घोंसले के अंदर एक नवजात कोयल चिड़िया थी, जिसे उसकी माँ दूध पिला रही थी। वह पल अद्भुत था और उस नन्ही चिड़िया को देखकर सबका दिल पिघल गया। हर्ष ने मलार का हाथ और भी कसकर पकड़ लिया। सागर को हमारे ब्रह्मांड की कोमलता और नाजुकता का एहसास हुआ। साईं कुछ बोल नहीं पा रहे थे। सागर ने स्वामी को चिड़िया और घोंसले की तस्वीर खींचने के लिए अपना फोन दे दिया। नदी किनारे लौटते समय सब चुप थे। हम्पी का जादू आखिरकार अपना असर दिखाने लगा था।

अध्याय 29

यात्रा हमें धीमा कर देती है, और हम्पी यही कर रही थी। उन चारों में कोई जल्दबाजी नहीं थी। वे हर चीज को न सिर्फ अपनी इंद्रियों से, बल्कि अपनी आत्मा से भी खोज रहे थे। नाव की सवारी के बाद, चारों गन्ने का रस और ताज़ा नारियल पानी पीने के लिए रुके। साई ने यात्रा को यथासंभव प्राकृतिक बनाने की कोशिश की। गन्ने के रस का गिलास इतना बड़ा था कि सागर और साई को एक ही गिलास से पीना पड़ा। हर्ष और मलार पहली बार एक घिसी-पिटी बात कर रहे थे; वे अलग-अलग स्ट्रॉ से नारियल पानी पी रहे थे। मलार ने एक सेल्फी भी खींची। जूस की दुकान के ठीक सामने नरसिम्हा मंदिर जाने का रास्ता था। चारों वहां गए और लक्ष्मी नरसिम्हा की विशाल प्रतिमा के साथ ढेर सारी तस्वीरें खींचीं। उसमें इंडोनेशियाई माहौल झलक रहा था।

इसके बाद, साई उन्हें हाथियों के अस्तबल और कमल महल ले गईं। उस स्थान का भ्रमण करते हुए, साई ने उस विशेष स्थान के इतिहास और महत्व के बारे में भी बताया। साई ने एक ऐसी बात कही जिससे सभी को एहसास हुआ कि हम्पी उनके लिए कितना मायने रखता है। उन्होंने कहा, "आप लोग यहाँ जो भी इमारतें देख रहे हैं, चाहे टूटी-फूटी हों या नहीं, उन सबका इतिहास हज़ारों साल पुराना है। ज़रा सोचिए, यह राज्य कैसा रहा होगा। मैंने सुना है कि मशहूर फ़िल्म 'बाहुबली' में महिष्मती राज्य की कहानी भी इसी जगह से प्रेरित है।" हम्पी के खंडहरों की खोज दोपहर 1 बजे तक चलती रही। दोपहर के खाने का समय हो गया था, और साई उन्हें विरुपाक्षा मंदिर के पास स्थित हम्पी बाज़ार के मशहूर 'मैंगो ट्री' रेस्टोरेंट में ले गईं। रेस्टोरेंट का माहौल बहुत ही सहज और आरामदायक था। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से आए लोग रेस्टोरेंट में बैठे थे। उन्हें कहीं जाने की कोई इच्छा नहीं थी। वे जहाँ थे वहीं खुश थे। रेस्टोरेंट के अलग-अलग हिस्सों में यात्रा से जुड़े उद्धरण भी लिखे हुए थे। चारों ने कोने में एक मेज पर जगह ले ली। मेज के दोनों ओर गद्दे बिछे थे; मलार और सागर एक तरफ बैठे और साई और हर्ष दूसरी तरफ।

उन चारों ने सबसे पहले हॉट चॉकलेट ऑर्डर किया क्योंकि सागर ने उन्हें ऐसा करने के लिए कहा था। खाने में, साई और मलार ने साउथ इंडियन थाली मंगवाई। हर्ष ने सैंडविच और

सागर ने एक्स्ट्रा चीज़ वाला पिज़्ज़ा मंगवाया। समय अच्छा था, माहौल शानदार था और खाना स्वादिष्ट था। अचानक बैकग्राउंड में एक गाना बजने लगा। यह क्रिस्टीना पेरी का "अ थाउज़ेंड इयर्स" था। साई बोली, "आप जानते हैं, यह गाना कभी मेरा पसंदीदा था। मुझे इसके बोल आज भी मुंह ज़बानी याद हैं।" यह कहते हुए, वह अपनी सुरीली आवाज़ में गाने लगी, जो सागर को बहुत प्यारी लगी। "मैं तुम्हारे इंतज़ार में हर दिन मरती रही हूँ, डार्लिंग, डरो मत, मैंने तुम्हें हज़ार साल से प्यार किया है, और हज़ार साल और प्यार करूंगी।"
साई ने आगे कहा,
और मुझे हमेशा से यही विश्वास था कि मैं तुम्हें ढूंढ लूंगा।
समय ने तुम्हारा दिल मेरे पास ला दिया है; मैंने तुम्हें हज़ार साल से प्यार किया है, और हज़ार साल और प्यार करता रहूँगा।
गाने की ये पंक्तियाँ सुनकर हर्ष और मलार ने एक-दूसरे की ओर देखा। उनके अंदर की आग भड़क उठी।
दोपहर तीन बजे तक चारों विश्व प्रसिद्ध विट्ठला मंदिर के अंदर पहुँच चुके थे। सबसे पहले उन्होंने विशाल पत्थर का रथ देखा। साई ने उन्हें मंदिर और रथ के पीछे का इतिहास समझाया। उन्होंने यह भी बताया कि नए 50 रुपये के नोट के पीछे रथ की तस्वीर छपी है। मलार ने हर्ष को रथ के पास खड़े होने को कहा और उसकी तस्वीर खींची। सागर और साई ने भी एक सेल्फी ली। इसके बाद मलार और हर्ष को इतिहास में कोई दिलचस्पी नहीं रही। वे बस साथ गए और रथ के बगल में स्थित कल्याण मंडप में बैठ गए।
कल्याण मंडप का फर्श बेहद ठंडा और मनमोहक था। हर्ष और मलार दोनों के मन में बहुत कुछ कहने को था, लेकिन दोनों ने चुप रहना ही बेहतर समझा। ठंडी हवा ने दोनों को छू लिया और वे एक-दूसरे का हाथ थामने लगे। वहीं, साईं सागर को संगीत स्तंभों के पास ले गईं। उन्होंने सागर को बताया कि कैसे अलग-अलग स्तंभों को पीटने पर अलग-अलग वाद्ययंत्रों की ध्वनि गूंजती है। सागर को यह सब बहुत अच्छा लगा। बीस मिनट से अधिक समय बीत गया। हर्ष ने मलार का हाथ छोड़ा और उनसे अपने साथ घूमने को कहा। मलार मान गईं।

वे दोनों विट्ठला मंदिर के चारों ओर ऐसे घूम रहे थे मानो वे दुनिया के आखिरी दो लोग हों। उनके लिए किसी का कोई महत्व नहीं था। सभी विशाल स्मारक, मंदिर और चट्टानें उनके बीच के बंधन के आगे छोटी लग रही थीं।

अब वे एक विशाल वृक्ष के नीचे थे। हर्ष ने ज़मीन पर एक सफ़ेद फूल देखा। उसने चुपचाप उसे उठाया और मलार को दे दिया। फिर से दोनों के बीच कोई बातचीत नहीं हुई। फिर दोनों ने वृक्ष की ओर देखा; उस पर पत्ते नहीं थे, केवल सफ़ेद फूल खिले हुए थे।

साईं और सागर पीछे से आए और चिल्लाए, "तुम दोनों मूर्ति बन जाओ!" साईं ने कहा, "यह पेड़ 300 साल पुराना है। ज़रा सोचो हमारी प्रकृति कितनी निस्वार्थ है। 300 साल तक खड़ा रहा और सिर्फ़ फूल देता रहा।" सागर ने आगे कहा, "यह तो देखने का बहुत ही बढ़िया तरीका है।" साईं ने सागर की ओर देखा और मुस्कुराए।

फिर उसने 300 साल पुराने पेड़ के नीचे खड़े हर्ष और मलार की एक तस्वीर खींची। उस समय मलार और हर्ष के मन में विचारों का बवंडर चल रहा था, ऐसे विचार जो उन्होंने एक-दूसरे से साझा नहीं किए। चारों लगभग 4:30 बजे दिन के अंतिम पड़ाव पर पहुँचे। यह बेहद खूबसूरत मलयावनथन पर्वत पर सूर्यास्त स्थल था। ऊपर जाते समय साई ने कहा,

“यह स्थान पौराणिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान राम और भगवान लक्ष्मण लंका जाते समय वर्षा ऋतु में यहाँ रुके थे।” सागर ने कहा, “वाह! आपको यह सब कैसे पता?” साई हँस पड़े। “हाहाहा, बिल्कुल गूगल से और कुछ स्थानीय शोध से।”

मलार और हर्ष उनके पीछे धीरे-धीरे ऊपर आ रहे थे। सागर साई के पास गया और उसके कान में फुसफुसाया, "जब हम चोटी पर पहुँच जाएँ, तो इन दोनों से थोड़ा दूर बैठ जाना। इन्हें एक साथ कुछ समय और एकांत चाहिए।" साई ने पीछे मुड़कर मलार और हर्ष को देखा। उसे वे दोनों एक ही शक्ति की तरह लग रहे थे। उसने कहा, "ठीक है, और मैं प्रार्थना करती हूँ कि वे एक-दूसरे से जो चाहें कह लें।"

अगले 10 मिनट में वे माल्यवंता पहाड़ी की चोटी पर थे। वहाँ बहुत कम पर्यटक थे और कई बंदर आपस में खेल रहे थे। उस स्थान के पास एक छोटा सा मंदिर था।

मलार और हर्ष को ऊपर जाकर शांति का अनुभव हुआ, और तभी उन्हें अपने अंतर्मन की आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने हम्पी के मनमोहक दृश्य को निहारने वाले एक विशाल पत्थर के

पीछे बैठने का फैसला किया - धान के खेत, नारियल के पेड़ और विभिन्न आकृतियों व आकारों के कई पत्थर। ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति ने इस दृश्य को बनाने के लिए विशेष रूप से समय निकाला हो।
मलार और हर्ष शून्यता की ओर देख रहे थे क्योंकि वे अपने मन में बातें कर रहे थे।
"चलो, मलार, बोलो तो सही।"
"चलो हर्ष, कर ही दो। यही तो बात है।"
मलार जीत गई। उसने कहा, "हर्ष, मैं तुम्हें कुछ बताना चाहती हूँ।" हर्ष बोलने लगा, "मैं...."
मलार ने उसे रोक दिया। "कृपया मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए। क्या मैं बोलते समय आपका हाथ पकड़ सकती हूँ?"
हर्ष ने अपना हाथ बढ़ाया। मलार ने उसका हाथ थाम लिया और बोली, "हर्ष, सबसे पहले तो मेरे जीवन में आने के लिए धन्यवाद। जब मेरे जीवन में सिर्फ़ अंधेरा था, तब तुम सूरज की तरह मेरे जीवन में आए। और आज, तुम्हारे साथ पूरा दिन बिताने के बाद, मैं सोच भी नहीं सकती कि तुम्हारे बिना मेरा जीवन कितना अर्थहीन होता। तो, मुद्दे की बात पर आते हैं, हर्ष, मैं तुमसे प्यार करती हूँ और मैं अपना पूरा जीवन तुम्हारे साथ बिताना चाहती हूँ।"
उनकी हाथों की पकड़ और भी मजबूत हो गई।
हर्ष ने सपने में भी नहीं सोचा था कि मलार उसे शादी का प्रस्ताव देगी। उसने कभी नहीं सोचा था कि कोई लड़की उसे शादी के लिए प्रपोज़ करेगी। उसने सूरज की ओर देखा, जो बादलों से घिरा होने के कारण साफ दिखाई नहीं दे रहा था।
उसका दिल बहुत तेज़ी से धड़क रहा था। उसे पता था कि क्या कहना है, लेकिन उसके पिता, माता और खुशबू की छवि उसकी आँखों के सामने आ गई, मानो उसे चेतावनी दे रही हो। लेकिन प्यार ने सब कुछ पर काबू पा लिया।
हर्ष ने कहा, "क्या मैं तुम्हें चूम सकता हूँ?"
मलार मुस्कुराई, हर्ष का हाथ थामे हुए आगे झुकी और उसे चूम लिया। होंठ मिलते ही दोनों ने अपनी आँखें बंद कर लीं। सूरज के अलावा किसी ने भी उन्हें चूमते और एक होते हुए नहीं देखा।

वह एक पल ही सब कुछ का आरंभ, मध्य और अंत था। मलार और हर्ष के चुंबन के दौरान ही ब्रह्मांड का पुनर्निर्माण हो गया। दूसरी ओर, हर्ष और मलार को देखकर सूर्य इतना प्रसन्न हुआ कि उसने आकाश को अपने प्रकाश से गहरा नारंगी रंग दिया। चुंबन समाप्त हुआ। हर्ष और मलार ने अपनी आँखें खोलीं और एक-दूसरे की आँखों में अपना ब्रह्मांड देखा। हर्ष ने अपना सिर मलार के कंधे पर रखा और दोनों ने सूर्य को विदाई दी।

कुछ मिनट बाद, मलार ने हर्ष के कान में फुसफुसाते हुए कहा, "चलो अपने होटल के कमरे में चलते हैं। मैं तुम्हारी बाहों में सोना चाहती हूँ, हर्ष।"

हर्ष ने उसकी आँखों में देखा और कहा, "चलो चलते हैं।" वे दोनों उठे, एक सेल्फी ली और फिर साई और सागर को सूचित करने के लिए उनके पास गए।

मलार ने कहा, "हम दोनों होटल जा रहे हैं।"

सागर स्थिति समझ गया। "ठीक है, आप दोनों अपना ख्याल रखना। हम दोनों को थोड़ी देर हो जाएगी।"

मलार ने कहा, "ठीक है, हो गया। फिर मिलते हैं।"

हर्ष और मलार के चले जाने के बाद, साई और सागर ने एक-दूसरे से हाथ मिलाया क्योंकि वे जानते थे कि आखिरकार प्यार परवान चढ़ गया है। आसमान और हम्पी का रंग गहरा नीला हो गया था, जिसमें नारंगी रंग की हल्की झलक थी। सूरज कुछ देर पहले ही डूब चुका था। मलार और हर्ष कार की पिछली सीट पर हाथ पकड़े बैठे थे और एक-दूसरे के बेहद करीब थे। उनके बीच किसी भी चीज के लिए कोई जगह नहीं थी। खिड़कियां खुली हुई थीं और ठंडी हवा जोड़े और उनके प्यार को और भी सुकून दे रही थी। हवा के कारण मलार के बाल हर्ष के चेहरे पर आ गए थे। उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और मलार को अपने बाल कानों के पीछे नहीं करने दिए।

होटल पहुँचते ही मलार और हर्ष कार से बाहर निकले। उन्होंने फिर से एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और मलार के कमरे की ओर चल पड़े। होटल की लॉबी में अगरबत्तियों की ताज़ा खुशबू ने उनका स्वागत किया। कमरे में पहुँचते ही वे दोनों ऐसे गले मिले मानो दो दुनियाएँ एक हो रही हों। वे एक-दूसरे को इतनी कसकर पकड़ रहे थे मानो ब्रह्मांड की कोई भी शक्ति उन्हें और उनके इस एकत्व को अलग नहीं कर सकती। गले मिलते समय शुरुआत में उनके

बीच एक बेचैनी थी, लेकिन तीन मिनट बाद वे शांत हो गए और गले मिलना किसी ध्यान की तरह लगने लगा।

मलार ने धीरे से हर्ष के कान में फुसफुसाया, "हर चीज़ के लिए धन्यवाद। जिम में व्यायाम करने से लेकर मुझे अपने शरीर को वैसे ही स्वीकार करने में मदद करने तक, आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि आपने मेरे जीवन पर कितना गहरा प्रभाव डाला है। मैं आपसे प्यार करती हूँ, हर्ष, और चाहे यह कितना भी घिसा-पिटा लगे, मैं चिल्लाकर पूरी दुनिया को यह बताना चाहती हूँ।"

हर्ष ने गले लगना तोड़ दिया; उसकी आँखें नम थीं। मलार ने अपने हाथ से उसकी आँखें पोंछीं।

"तुम क्यों रो रहे हो?" मलार ने कोमल स्वर में पूछा। हर्ष ने मलार का हाथ पकड़ा और दोनों बिस्तर पर बैठ गए। उसने कहा, "मुझे तुम्हें धन्यवाद कहना चाहिए क्योंकि तुमसे मिलने से पहले मेरा कोई अस्तित्व नहीं था। मैं कोई नहीं था। मैं किसी को पसंद करता था, और वह किसी और से शादी कर लेता था सिर्फ इसलिए कि उसके परिवार के पास मेरे परिवार से ज़्यादा पैसा था। मैं लोगों को प्रभावित करने के लिए कसरत करता था, लेकिन कुछ भी काम नहीं आया क्योंकि मुझमें आत्मसम्मान नहीं था। फिर तुम आई। सागर की वजह से सब कुछ बदल गया। मलार, तुम्हारी वजह से ही मुझे एहसास हुआ कि मैं भी किसी की मदद कर सकता हूँ। तुमने मुझे जीवन का उद्देश्य और आत्मसम्मान दिया। मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मलार, और मैं चाहता हूँ कि जीवन के हर मोड़ पर तुम मेरा हाथ थामे रहो।"

अब तक दोनों की आंखों में आंसू आ चुके थे। जब प्यार में डूबे दो लोग एक-दूसरे से अपने सारे दिल की बात कह देते हैं, तभी एक होने का सफर शुरू होता है।

इस ब्रह्मांड की अनिश्चितता ने दो ऐसे लोगों को मिला दिया जिन्होंने कभी एक साथ होने की कल्पना भी नहीं की थी।

मलार हर्ष के पास गई। उसकी आँखें हर्ष की आँखों में ऐसे देख रही थीं मानो तारे एक-दूसरे को निहार रहे हों। उसने कहा, "मैं तुम्हारा हाथ कभी नहीं छोड़ूंगी। बस मेरी पकड़ मज़बूत रहने दो।"

और फिर उसने उसे चूमा। उनके होंठ ऐसे मिले जैसे सुबह की धूप पौधों से मिलती है, जैसे बारिश मिट्टी से मिलती है, जैसे कोई किताब अपने सच्चे पाठक से मिलती है। अपने होठों के ज़रिए, वे एक-दूसरे को समझने लगे। वे एक-दूसरे के कपड़े उतारने लगे। हर्ष ने मलार को चूमा, उसके सारे स्ट्रेच मार्क्स, काले धब्बे और स्तनों को भी, जिससे मलार को लगा जैसे वह इस दुनिया की सबसे खूबसूरत लड़की हो।

मलार ने हर्ष को हर जगह चूमा, जिससे उसे एहसास हुआ कि वह कितना खास है। वह उसका प्यार था। फिर, जैसे कोई रसोइया अपने पसंदीदा पकवान को बड़े प्यार, लगन, कोमलता और स्नेह से बनाता है, वैसे ही मलार और हर्ष ने प्रेम किया। उनका प्रेम कोमल और सौम्य था। ऐसा लगा मानो ब्रह्मांड फिर से सृजन की प्रक्रिया में है। प्रेम करने के बाद, मलार और हर्ष एक-दूसरे को थामे सो गए। एक-दूसरे को थामे हुए उन्हें इतना सुरक्षित कभी महसूस नहीं हुआ था। वे जानते थे कि अगर वे एक-दूसरे को कसकर थामे रहेंगे, तो कोई भी उनके इस छोटे से संसार को नुकसान नहीं पहुंचा सकता। लेकिन कौन जानता था कि इस दुनिया ने उनके लिए क्या रखा है?

अध्याय 30

सूरज पूरी तरह डूब जाने और आसमान में घना अंधेरा छा जाने के बाद साई और सागर मलयवंथ पर्वत से नीचे उतरे। शाम के करीब सात बज रहे थे। साई बोल रही थी और सागर सुन रहा था। उसने सागर को हम्पी के बारे में बताया, हम्पी की अपनी पिछली यात्राओं के बारे में, हम्पी में मिले दुनिया भर के लोगों के बारे में और उनकी कहानियों के बारे में बताया। सागर ने उसकी आँखों में देखा और समझ गया कि कैसे एक जगह किसी इंसान को बदल सकती है और उसे उससे प्यार हो सकता है। साई को हम्पी से बेहद प्यार था और वह चाहती थी कि दूसरे भी इससे प्यार करें। सच्चा प्यार ऐसा ही होता है; यह फैलता है। उन्होंने इस यात्रा के लिए विशेष रूप से चुने गए गीतों को सुनते हुए सूर्यास्त का आनंद लिया।

इस लिस्ट में शामिल गानों में 'जाने तू या जाने ना' फिल्म का "कहीं तो होगी वो" और 'हाईवे' फिल्म का "माही वे" शामिल थे। उन्होंने एक-दूसरे की कई तस्वीरें और कुछ सेल्फी भी खींचीं।

जब वे दोनों उतरे तो चारों तरफ घना अंधेरा था। उनकी टैक्सी वहां नहीं थी।

सागर ने पूछा, "तो अब हमें कहाँ जाना चाहिए?"

साई ने उसकी ओर देखा। "क्या तुम मेरे साथ कॉफी पीने चलना चाहोगे क्योंकि मुझे कॉफी पीने की बहुत इच्छा हो रही है?"

सागर ने चारों ओर देखा। "हाँ, लेकिन हम आवागमन कैसे करेंगे? यहाँ आसपास कुछ भी नहीं है।"

"सागर, मुझे बताओ कि जब परिवहन का आविष्कार नहीं हुआ था तब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा कैसे करते थे?"

सागर को यह सवाल बेतुका लगा। उसने जवाब पर विचार करते हुए कहा, "मैं घोड़ों और बैलगाड़ियों के ज़रिए सोचता हूँ।"

सागर का जवाब सुनकर साई जोर-जोर से हंसने लगी। हंसते-हंसते उसने कहा, "अरे बेवकूफ! लोग तो एक जगह से दूसरी जगह पैदल चलकर जाते थे।"

सागर ने चतुराई से जवाब दिया, "ओह, अच्छा! आपने उस अर्थ में पूछा था।" साई अब भी हंस रहा था। "चलो अब! चलते हैं।" वे पेड़ों और विशाल चट्टानों से घिरी सुनसान सड़क पर चलने लगे।

साई ने फिर से बातचीत शुरू की। "तो हर्ष और मलार की मुलाकात की वजह आप ही थे, और बाकी सब तो इतिहास है।"

"हाहा, सच कहूँ तो साई, मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरे दो सबसे अच्छे दोस्त एक-दूसरे के प्यार में पड़ जाएँगे। मैंने हर्ष को मलार से बस इसलिए मिलवाया था क्योंकि उसे फिटनेस में मदद की ज़रूरत थी, और हर्ष सबसे अच्छा विकल्प था। मुझे सच में पता ही नहीं चला कि ये सब कब हो गया। मैं उनके लिए खुश हूँ, लेकिन मलार मुझसे कभी कुछ नहीं छिपाती, इसलिए यह बात मेरे लिए एक झटका थी।" सागर ने साई से अपने दिल की बात कही।

साई ने सागर की पीठ पर हाथ रखा, मानो उसे थपथपा रही हो। उसने कहा, "अरे, कोई बात नहीं। दोस्ती अनकही बातों का ही तो सार है, जिन्हें दोस्त अंततः समझ जाते हैं।"

"हां, आप सही कह रहे हैं। मुझे बस एक बात की चिंता है," सागर ने कहा। "क्या?"

"साई, अगर वे दोनों शादी को लेकर गंभीर हैं, तो हर्ष के परिवार वाले अच्छे नहीं हैं। वे अंतरजातीय विवाह को स्वीकार नहीं करेंगे। हर्ष ने मुझे ये सब बहुत पहले ही बता दिया था," सागर ने अपनी चिंता व्यक्त की। वह जानता था कि मलार पहले ही बहुत कुछ झेल चुकी है, और अब धर्म का यह मुद्दा उन दोनों के लिए और भी पेचीदा हो जाएगा।

"हम्म, चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा। वे दोनों काफी समझदार हैं, और हम भी उनकी मदद के लिए मौजूद हैं। तुम बस अपनी यात्रा का आनंद लो," साई ने अपनी जोशीली आवाज़ और ऊर्जा से सागर को आश्वस्त किया।

इस बार सागर ने पूछा, "क्या आपको अपनी यात्रा का रिकॉर्ड रखना पसंद है? मेरा मतलब है डायरी में लिखकर या अपने फोन पर रिकॉर्ड करके?"

“उम्म, जब मुझे कुछ बहुत खास लगता है तो मैं उसे अपने फोन में लिख लेती हूँ; वरना सब कुछ मेरे दिमाग और दिल में ही रहता है,” साई ने ईमानदारी से कहा। “अच्छा है। मुझे भी डायरी लिखना अच्छा लगता है। मुझे पता है ये सबसे घिसा-पिटा काम है, लेकिन मुझे अपने

अनुभवों के बारे में लिखना पसंद है, और ये किसी उपन्यास के लिए अच्छी कहानी बन सकती है," सागर ने अपनी रुचि साझा की। "वाह! बढ़िया। क्या आपको भी पढ़ना पसंद है?" साई ने पूछा। उन्हें कला प्रेमी लोग अच्छे लगते थे।
"मुझे किताबें पढ़ना बहुत पसंद है। मेरे घर में 400 से ज़्यादा किताबें हैं। आपके पास कितनी हैं?" सागर अब उत्साहित था क्योंकि उसके पसंदीदा विषय पर चर्चा हो रही थी।
"बिल्कुल आपकी तरह। मुझे किताबें बहुत पसंद हैं, लेकिन विडंबना यह है कि पाठ्यपुस्तकों के अलावा मैंने महीनों से कोई किताब नहीं पढ़ी है।"
दोनों के पास बात करने के लिए एक विषय था। इसलिए चलते-चलते वे किताबों के बारे में बातें करने लगे। सागर ने बताया कि उसे रोमांस और मर्डर मिस्ट्री वाली किताबें ज़्यादा पसंद हैं। वहीं, साई ने डैन ब्राउन की थ्रिलर और हैरी पॉटर सीरीज़ के प्रति अपने प्यार के बारे में बताया। उन्हें पता भी नहीं चला कि कब वे अपनी मंज़िल पर पहुँच गए। वे उसी मैंगो ट्री रेस्टोरेंट में पहुँचे जहाँ उन्होंने दोपहर का खाना खाया था।
शाम के समय वह जगह जगमगा रही थी। चारों ओर संगीत, रोशनी और हंसी की गूंज थी। एक कोने में कुछ भारतीय और पर्यटक गिटार, ढोल और बांसुरी के साथ मिलकर गाने गा रहे थे। साईं के लिए, खासकर सागर के लिए, यह एक अद्भुत अनुभव था, क्योंकि सागर ने पहली बार इस तरह के आनंद का अनुभव किया था। उसे लगा कि पहली बार दुनिया किसी लक्ष्य को पाने के लिए भाग-दौड़ नहीं कर रही है, बल्कि अपनी मौजूदगी का जश्न मना रही है।
सागर और साई ने चाय और कॉफी के साथ फिंगर चिप्स मंगवाए। खाना आ गया और चाय-कॉफी पीते हुए सागर और साई ने खाने के बारे में और खाने के प्रति अपने आपसी प्रेम के बारे में बातें कीं। सागर ने कहा कि उसे मोमोज बहुत पसंद हैं, वहीं साई ने डोनट्स और पेस्ट्री के प्रति अपने अटूट लगाव के बारे में बताया। खाने की खूबसूरती यही है कि यह लोगों को पल भर में करीब ला देता है।
खाना खाने के बाद, वे दोनों स्थानीय बस स्टैंड की ओर चल पड़े। बस आई और वे उसमें चढ़ गए। उन्होंने कोने की आखिरी पंक्ति में जगह ले ली। युवती कंडक्टर ने मुस्कुराते हुए उनसे उनकी मंज़िल पूछी; साई ने जवाब दिया, "होस्पेट बाज़ार।" उसने साई को दो टिकट दिए और बदले में 20 रुपये ले लिए। बस चल पड़ी और वह अपेक्षाकृत खाली थी। ठंडी हवा चल रही थी

और दोनों को लगा कि बस की गति धीमी कर देनी चाहिए। सागर ने अपना सिर खिड़की पर टिका दिया। साई बाहर देख रही थी।
"मुझे याद नहीं आता कि मैंने आखिरी बार बस में कब सफर किया था, और वो भी महिला कंडक्टर वाली बस में। यहाँ का अनुभव कितना सुखद है! इस अनुभव के लिए धन्यवाद, साई।"
"स्वागत है सागर। चीजों को देखने का तुम्हारा नजरिया भी ताजगी भरा है," साई ने सागर की पीठ थपथपाते हुए कहा।
तीस मिनट बाद, वे दोनों होस्पेट मार्केट में उतरे, जहाँ से मल्लिगी होटल पैदल दस मिनट की दूरी पर था। साई और सागर ने होस्पेट मार्केट घूमते हुए होटल तक पैदल जाने का फैसला किया। सागर को एक दुकान दिखी और उसने कहा, "इधर देखो। यह मशहूर बैंगलोर अयंगर बेकरी है। चलो तुम्हारा पसंदीदा केक लेते हैं। क्या कहते हो?" सागर को देखकर साई मुस्कुराई और बोली, "चलो चलते हैं।" वे दोनों सड़क पार करके बेकरी में दाखिल हुए। ताज़ी बनी कुकीज़ की खुशबू ने उनका स्वागत किया और उन्हें पूरी तरह से अपने आगोश में ले लिया। फ्रिज में कई तरह की पेस्ट्री और केक रखे थे। साई ने उन सभी को देखा और उनके नाम भी पढ़े। लेकिन उसके कोमल मन ने गरमा गरम मावा केक को चुना।
उसने दो टुकड़े खरीदे। उसने एक सागर को दिया और एक अपने लिए रख लिया। उसने कहा, "जल्दी से इसे चख लो।"
"नहीं, पहले आप लीजिए; आप केक के शौकीन हैं," सागर ने मुस्कुराते हुए कहा। "ठीक है।" साई खुद को रोक नहीं पाई। उसने मावा कपकेक में चम्मच डाला और पहला निवाला लिया। मावा, केसर और इलायची के अलग-अलग स्वाद उसके मुंह में घुलते ही उसने अपनी आंखें बंद कर लीं।
"कैसा है?" सागर ने पूछा।
"वाह! आज मैंने जो कुछ भी खाया है, उसमें यह सबसे बढ़िया है!" मावा केक खाने के बाद साई सचमुच तृप्त और प्रसन्न महसूस कर रही थी। सागर और साई ने केक खाकर अपने होटल की ओर प्रस्थान किया। साई बोली, "कुछ बताओ, कुछ भी?"

सागर ने जवाब दिया, "उम्म, यह सुनने में दार्शनिक लग सकता है, लेकिन मैंने केक खाते समय आपको देखा। आप बहुत खुश लग रही थीं। आप सचमुच छोटी-छोटी चीजों में खुशी ढूंढती हैं। मुझे नहीं पता कि यह कहना मुझे अच्छा क्यों लग रहा है।" साई मुस्कुराई और सागर की ओर देखा। उसे एहसास हुआ कि वह वाकई चीजों को बारीकी से देखता है। उसने कहा, "धन्यवाद, बात यह है कि खुशी तो खुशी होती है। जिनके पास सब कुछ होता है वे भी दुखी होते हैं, और कुछ लोगों के पास बहुत कम होता है और फिर भी वे हर दिन मुस्कुराते हैं। मेरे लिए, यह सरल है। मैं खुशी को टालती नहीं हूं।" इसके बाद, वे चुपचाप अपने होटल पहुंच गए।

होटल की लॉबी में पहुँचते ही सागर और साई को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। क्योंकि रात के 10 बज चुके थे और उनके दोस्तों मलार और हर्ष की तरफ से कोई कॉल या मैसेज नहीं आया था।

"क्या तुमने उन्हें फोन करने की कोशिश की?" साई ने पूछा।

"हां, उनके फोन बंद हैं," सागर ने कहा। साई रिसेप्शन पर गई और अपने कमरे का नंबर बताया। रिसेप्शनिस्ट ने उन्हें बताया कि कुछ समय पहले मलार और साई के कमरे से खाना मंगवाया गया था।

"तो वे तुम्हारे कमरे में हैं," सागर ने कहा जब वे हल्के भोजन के लिए होटल के खुले रेस्तरां की ओर चल रहे थे। "हाँ, और हमें उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए। इसलिए मुझे तुम्हारे कमरे में सोना पड़ेगा," साई ने बेफिक्री से कहा जैसे सब कुछ सामान्य हो, लेकिन सागर बुरी तरह डरा हुआ था।

उन्होंने दो मैसूर चीज़ डोसे मंगवाए। सागर ने हिम्मत जुटाकर साई से पूछा, "क्या आप मेरे कमरे में आराम से रह पाएँगी?"

साईं ने सागर की आँखों में डर देखा। वह सांभर चख रहा था। साईं अपनी हंसी नहीं रोक पाईं। "तुम्हारे सिवा किसी और के साथ मुझे आराम नहीं मिलेगा। मैं ठीक हूँ; मुझे पता है तुम कुछ नहीं करोगे, हा हा हा।" साईं की बात सुनकर सागर के मुँह से सांभर टपक गया। साईं और भी ज़ोर से हंस पड़ीं।

सागर के कमरे के अंदर

रात करीब 11 बजे वे दोनों कमरे में दाखिल हुए।
सागर ने उसे आगाह करने की कोशिश करते हुए कहा, "सावधान रहना, मेरा कमरा थोड़ा गंदा हो सकता है," और साथ ही उसने लाइट जला दी।
साई ने कमरे में चारों ओर देखा, और कुछ कपड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे। उसने कहा, "मैंने इससे भी बुरी चीजें देखी हैं। तुम भूल गए कि मैं हॉस्टल में रहती थी।" सागर ने जूते उतारते हुए जवाब दिया, "हाँ। तुम जाकर फ्रेश हो जाओ।"
"हम्म, मैं क्या पहनूँ?" साई ने पूछा।
साईं की बातें सुनकर सागर का संतुलन बिगड़ने ही वाला था। उसने कहा, "मुझे आपकी बात समझ नहीं आई?" वह घबराया हुआ था और उसने अपने चेहरे पर इसे छिपाने की कोशिश की। साईं सागर की घबराहट समझ गई। मुस्कुराते हुए उसने कहा, "मेरा मतलब है, मैंने सुबह से यह कुर्ती और लेगिंग पहनी हुई है, इसलिए मैं इन्हें पहनकर सो नहीं सकती। मैं दंपति को परेशान नहीं करना चाहती, इसलिए अगर आपके पास कुछ है, तो कृपया मुझे दे दीजिए।"
"अरे, रुको!" सागर गया और अपना बैग खोला। उसने एक काली टी-शर्ट और नीले सूती ट्रैक शॉर्ट्स निकाले और साई को दे दिए।
उसने कहा, "मुझे उम्मीद है कि यह काम करेगा।" वह अपने जीवन में पहली बार किसी लड़की को अपने कपड़े दे रहा था।
साई हंस पड़ी। उसने कहा, "मुझे लगता है कि यह रात भर के लिए ठीक रहेगा," और नहाने के लिए अंदर चली गई।
सागर को समझ नहीं आ रहा था कि कमरे में खाली समय में क्या करे। वह उस लड़की के साथ कमरा साझा कर रहा था जो इस समय नहा रही थी। यह सब उसके साथ पहली बार हो रहा था। वह सोच रहा था, "कोई लड़की मुझ पर भरोसा कैसे कर सकती है?" या "क्या मैं वाकई भरोसेमंद हूँ?"
उसने सारे सवालों के जवाब दिए और अपना फोन चार्जिंग पर लगा दिया। थोड़ी देर बाद साई काली टी-शर्ट और नीले शॉर्ट्स पहने बाहर आई और सागर को वह बहुत प्यारी लगी। सागर के कुछ बोलने से पहले ही साई ने कहा...
"यह बिल्कुल सही आकार है, धन्यवाद।"

सागर ने झूठ बोलने की कोशिश की और कहा, "मुझे पता था कि ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी, इसलिए मैंने आपके लिए एक जोड़ी कपड़े पैक कर दिए थे।"
साई ने मुंह बनाकर जवाब दिया, "चुप रहो और नहा लो। तुमसे बदबू आ रही है।"
सागर ने कुछ नहीं कहा। वह उठा और सीधे बाथरूम के अंदर चला गया। वह अपने कपड़े भी साथ ले गया क्योंकि वह साई के सामने बिना शर्ट के बाहर नहीं आ सकता था। 10 मिनट बाद, सागर मार्वल एवेंजर टी-शर्ट और काले ट्रैक पैंट पहने बाहर आया।
साई ने पूछा, "तो, क्या आप तरोताजा महसूस कर रहे हैं?"
"हां। गर्म पानी से आराम मिला। मुझे याद भी नहीं कि मैंने आखिरी बार इतना अच्छा स्नान कब किया था," सागर ने कहा।
साई बिस्तर पर बैठी अपना फोन चला रही थी। उसने फोन को मेज पर एक तरफ रख दिया। उसने कहा, "आओ बैठो।"
सागर साई के सामने किनारे पर बैठ गया। दोनों कुछ पल चुप रहे, फिर अचानक सागर हँसते हुए बोला, "जानती हो, नहाते समय मैं सोच रहा था कि मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मेरे दो सबसे अच्छे दोस्त प्यार में पड़ जाएँगे और एक ही कमरे में रहेंगे। यह बहुत ही अद्भुत है।" साई मुस्कुराई। उसने कहा, "प्यार जादुई होता है, सागर। यह बस हो जाता है। बताओ, क्या तुमने कभी किसी से सच्चा प्यार किया है?"
सागर ने कुछ पल सोचा। उसका ध्यान पहले प्रिया पर गया और फिर देवकी पर। लेकिन उसे कोई जवाब नहीं मिला।
उसने बस इतना कहा, "मुझे कुछ अनुभव तो हैं, लेकिन मुझे नहीं पता कि सच्चे प्यार से आपका क्या मतलब है?"
"जब आप उस व्यक्ति के साथ होते हैं और समय रुक जाता है, तब आपको इसका एहसास होता है। आप सब कुछ भूल जाते हैं। बस आप और वह व्यक्ति ही होते हैं।"
"मुझे नहीं लगता कि मैंने कभी ऐसा कुछ अनुभव किया है," सागर ने ईमानदारी से जवाब दिया।
"जब तुम किसी सच्चे इंसान से मिलोगे, तब तुम्हें पता चल जाएगा," साई ने कहा। उसे सागर की आँखों में थोड़ी उदासी महसूस हुई।

"तुम्हारा क्या? क्या तुमने कभी सच्चा प्यार किया है?" सागर ने इस बार पूछा। साई हंस पड़ी। "मुझे पता था कि ये सवाल आएगा। मेरे कुछ बहुत ही कम समय के बॉयफ्रेंड रहे। बैंगलोर जाने के बाद, मुझे कोई पसंद नहीं आया। कुछ लड़कों ने मुझे प्रपोज़ किया, लेकिन मेरे लिए वो इंसान चाहिए था जो वाकई लायक हो। इसलिए कुछ भी बात नहीं बनी। लेकिन मैं कह सकती हूं कि मुझे हम्पी से सच्चा प्यार हो गया। इस जगह ने मुझे बदल दिया, और अब मैं इससे उबर नहीं पा रही हूं। ऐसा लगता है कि तुम मुझे हम्पी से दूर कर सकते हो, लेकिन हम्पी को मुझसे नहीं।"

सागर उसकी आखिरी बातों से दंग रह गया, "ये तो बहुत गहरी बात थी। वाकई, हम्पी के बारे में बात करते समय तुम्हारी आँखों में प्यार झलक रहा था।" साई का दिल उसकी कही बातों से भर गया, "मुझे लगता है तुम्हें लेट जाना चाहिए क्योंकि तुम्हारे पास पीठ को सहारा देने के लिए कुछ नहीं है, और तुम थके हुए भी होगे। तो चलो, सोने की कोशिश करते हैं क्योंकि काफी देर हो चुकी है और हमें सुबह पाँच बजे उठना है।"

घबराहट फिर लौट आई। सागर ने कहा, "कोई बात नहीं। मैं सोफे पर सो सकता हूँ। तुम बिस्तर पर सो जाओ।"

"सागर, कोई बात नहीं। हम साथ सो सकते हैं। तुम मेरे दोस्त हो और मुझे तुम पर भरोसा है," साई ने सागर को आश्वस्त किया।

सागर जाकर साई के बगल में बैठ गया। दोनों बातें करते-करते लेट गए। रात के 12 बजे तक उन्होंने लाइट बंद कर दी, लेकिन उनकी बातचीत जारी रही। सागर ने कबूल किया कि वह पहली बार किसी लड़की के साथ सो रहा था। साई हंस पड़ी और बोली कि कमरे में आते ही उसके चेहरे पर यह बात साफ दिख रही थी। साई सबसे पहले सो गई। सागर ने उसका चेहरा देखा; वह मुंह खोलकर सो रही थी। यह बहुत प्यारा और मजेदार था। कुछ मिनट बाद सागर भी सो गया, दोनों एक ही कंबल में साई के साथ लिपटे हुए थे।

अध्याय 31

"जब आप अपने 'जीवनसाथी' से मिलते हैं, तो आपको एहसास होता है कि आप पहली बार अपने ही प्रतिबिंब से मिल रहे हैं।"

साईं सुबह सबसे पहले उठीं, लगभग 4:15 बजे। उन्होंने मुस्कुराते हुए आलस से अपनी बाहें फैलाईं। फिर उनकी नज़र सागर पर पड़ी, जो थोड़ा मुंह खोलकर सो रहा था। साईं को यह मज़ेदार और प्यारा लगा। उन्होंने उसे जगाने के लिए उसके कंधे पर थपथपाया। कुछ सेकंड बाद, सागर ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं। सबसे पहले उन्होंने साईं का मुस्कुराता हुआ चेहरा देखा। साईं ने कहा, "सुप्रभात! जल्दी तैयार हो जाओ। हमें 10 मिनट में निकलना है।" सागर आँखें खोलने की कोशिश करते हुए साईं को देखता रहा और फिर बोला, "सुप्रभात, साईं।" सागर को साईं के बगल में जागना अच्छा लगा। सब कुछ एकदम सही लग रहा था। साईं उठीं, अपने बाल बाँधे और बोलीं, "मैं दंपत्ति को जगाने जा रही हूँ। तुम जल्दी तैयार हो जाओ।"

साईं हर्ष और मलार के कमरे के बाहर पहुँचे और घंटी बजाई। दो बार घंटी बजने पर हर्ष जागा। उसने मलार को गहरी नींद में सोते देखा। वह मुस्कुराया, कपड़े पहनने के लिए उठा और दरवाजा खोलने गया। साईं ने कहा, "हे, सुप्रभात। हमें अगले 10 मिनट में सूर्योदय देखने के लिए मतंगा पहाड़ी जाना है। कैब इंतज़ार कर रही है।" हर्ष ने कहा, "ओह! हम 10 मिनट में तैयार हो जाते हैं," वह अभी भी आधी नींद में था। "दरअसल, मेरे कपड़े इसी कमरे में हैं, और मुझे भी कपड़े बदलने हैं," साईं ने झिझकते हुए कहा।

"ओह, माफ कीजिए! मैं बिल्कुल भूल गया था। बस एक मिनट दीजिए; मैं वापस आता हूँ," हर्ष ने कहा और दरवाजा बंद कर दिया।

वह मलार के पास गया और उसके दाहिने गाल पर हल्के से हाथ फेरते हुए उसे जगाया। मलार मुस्कुराई और बोली, "सुप्रभात, बेबी।" हर्ष ने उसके माथे पर चुंबन किया, "सुप्रभात की धूप। अब जल्दी उठो, हमें सूर्योदय देखने जाना है। मैं अपने कमरे में जा रहा हूँ क्योंकि साई बाहर इंतज़ार कर रही है।"

तब तक मलार भी उठ गई और अपने कपड़े पहन लिए। उसने कहा, "ठीक है, 10 मिनट में मिलते हैं।" हर्ष कमरे से बाहर चला गया और साई अंदर आ गई।
दस मिनट बाद, वे चारों नीचे उतरकर तैयार हो गए। सागर और साई ने हर्ष और मलार से कुछ नहीं पूछा क्योंकि इससे स्थिति बहुत अजीब हो जाती। वे सभी टैक्सी में बैठ गए, और ठीक सुबह 5:05 बजे वे सभी हम्पी के लिए निकल पड़े। रास्ते में, उन्होंने कॉफी और इडली के स्टॉल लगते देखे, और इडली बनाने वाली मशीनों से भाप निकल रही थी।
जैसे ही कार की खिड़कियाँ खोली गईं, हम्पी की ठंडी हवा ने उन्हें घेर लिया। सुबह 5:40 बजे वे मतंगा पहाड़ी की तलहटी पर पहुँचे। चारों ओर घना अंधेरा था। न कोई इंसान, न कोई रोशनी, कुछ भी नहीं, बस चमकीले तारे और सफेद चाँद।
साई ने समझाया, "तो दोस्तों, हमें चढ़ाई करके मतंगा पहाड़ी की चोटी पर पहुंचना है। वहां कोई रोशनी नहीं है, लेकिन रास्ते में हमें चट्टानों पर दिशा-निर्देश दिखाई देंगे। हम दो-दो के जोड़े में हाथ पकड़कर चलेंगे। एक टॉर्च पकड़ेगा और दूसरा धीरे-धीरे चलेगा। चलो चलें।"
साई और मलार ने अपने फोन की फ्लैशलाइट चालू की और वे सब चलने लगे। साई ने पहले भी ऐसा किया था, इसलिए वह समूह का नेतृत्व कर रही थी। सागर उसका हाथ पकड़े उसके पीछे-पीछे चल रहा था। हर्ष और मलार भी हाथ पकड़कर उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।
साई चलते-चलते बोला, "रास्ते में पत्थर ऊबड़-खाबड़ हैं। ध्यान रखना कि कहीं टखने में मोच न आ जाए, क्योंकि पिछली बार जब मेरे टखने में मोच आई थी, तब बहुत दर्द हुआ था।"
सागर ने बीच में टोकते हुए कहा, "यह सब ठीक है, लेकिन अगर रास्ते में कोई सांप आ जाए तो? अगर कोई भूत हमारा पीछा कर रहा हो तो? मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा।" मलार हंस पड़ी। "सांपों के बारे में तो मुझे नहीं पता, लेकिन वह भूत तुम्हें कुछ नहीं करेगा। चिंता मत करो।"
सब लोग हंस पड़े। सागर ने मुंह बनाया और मलार की तरफ देखकर कहा, "चुप रहो और मुझसे बात मत करो।" मलार सोचने लगी कि सागर ने इस तरह क्यों कहा।
साई ने उनकी सोच को तोड़ते हुए कहा, "दोस्तों, चलो अपनी गति बढ़ाएं। सूर्योदय होने में केवल 20 मिनट बचे हैं। हम बस पहुंचने ही वाले हैं।"

धीरे-धीरे चलते हुए और संभलकर कदम बढ़ाते हुए वे सभी मतंगा पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गए। वहाँ उन्होंने दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आए कुछ लोगों को सूर्योदय की प्रतीक्षा करते देखा, ताकि सूर्योदय की रोशनी उन पर और इस दुनिया पर फैले। साईं ने सागर को जल दिया, और फिर सागर ने उसे मलार और हर्ष को दे दिया।

अब तक, अंधेरा धीरे-धीरे प्रकाश के आगे फीका पड़ रहा था, और सभी पक्षी, पेड़, जानवर और जीव दिन का स्वागत करने के लिए गा रहे थे और नाच रहे थे। उनके लिए, यह एक बार फिर अंधेरे पर प्रकाश की विजय थी। वे चारों मतंगा पहाड़ी के किनारे पर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे थे।

साई ने कहा, "दोस्तों, यह पल हमारे दिलों में हमेशा के लिए अंकित हो जाएगा। तो चलिए हाथ पकड़कर सूरज का स्वागत करते हैं।"

साई, सागर, मलार और हर्ष ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और देखा कि एक साधारण सूर्योदय कितना सुंदर हो सकता है।

धीरे-धीरे सारे पेड़, चट्टानें, खंडहर और तुंगभद्रा नदी दिखाई देने लगे। पक्षी उड़ रहे थे और गा रहे थे, मानो धरती अपनी कला का प्रदर्शन कर रही हो। आकाश कैनवास था। ठीक सुबह 6:45 बजे सूर्योदय हुआ और ऐसा लगा जैसे समय रुक गया हो। उस पल कुछ भी मायने नहीं रखता था। मायने रखता था सुंदरता और उसे देखने वाला। उन चारों ने जिस सुंदरता का अनुभव किया, उसे शब्दों में बयान करना असंभव था। और सूर्य के लिए, जो मायने रखता था वह था उसे देखने वाली आँखें।

साईं की आँखों में आँसू थे। हम्पी की सुंदरता का अनुभव दूसरों को कराने का उनका सपना पूरा हो गया था। सागर ने उन्हें और सूर्योदय को देखा। यह उनके जीवन का सबसे खूबसूरत पल था।

हर्ष और मलार के लिए इसके बाद हासिल करने के लिए कुछ भी नहीं बचा था। सूर्योदय ने उन्हें पूर्ण कर दिया था। अब वे एक हो चुके थे।

कुछ समय के लिए, सूर्य की रोशनी ने चारों ओर व्याप्त अकेलेपन को मिटा दिया था। सृजन और नई शुरुआत के उस क्षण में, दुनिया की सारी समस्याएं महत्वहीन प्रतीत हो रही थीं।

तीस मिनट बाद सब उठ गए। तब तक सूरज अपने चरम पर पहुँच चुका था। सबने कुछ तस्वीरें खींचीं और साई ने कुछ वीडियो भी रिकॉर्ड किए। ऊपर एक छोटा लड़का चाय बेच रहा था। सबने चाय पी। यहाँ तक कि साई, जो मूल रूप से कॉफी प्रेमी थे, उन्होंने भी चाय पी ली। भारत में चाय की यही खासियत है। लगभग सभी ने चाय पीते हुए अपने खास पलों को साझा किया होगा।

सागर जाकर कोने में अकेला खड़ा होकर चाय पीने लगा। मलार जाकर उसके बगल में खड़ी हो गई।

सागर ने कुछ नहीं कहा। इसके बजाय, मलार ने कहा, "मुझे खेद है।"

"तुम्हें खेद क्यों है?" सागर ने पूछा।

"मुझे हर्ष और मेरे बारे में तुम्हें बता देना चाहिए था। सच कहूँ तो, सागर, मुझे भी नहीं पता कि यह सब कब हुआ। हर्ष को मेरी ज़िंदगी में लाने के लिए धन्यवाद।"

सागर ने मलार की आँखों में देखते हुए कहा, "तुम्हें माफ़ी मांगने की ज़रूरत नहीं है। तुम्हें खुश देखकर ही मुझे सबसे ज़्यादा खुशी होती है। अब मुझे गले लगा लो।" दोनों दोस्तों ने प्यार से एक-दूसरे को गले लगाया।

तब सागर ने कहा, "कुछ बातें हैं जो मैं तुम्हें मुंबई वापस आने के बाद बताऊंगा।"

मलर ने कहा, "ठीक है।"

वे दोनों साई और हर्ष की ओर बढ़ रहे थे। सागर ने आँख मारते हुए कहा, "वैसे, तुम लोगों ने कल रात क्या किया?" मलार शरमा गई और उसने सागर को एक मुक्का मार दिया...

दिन की शुरुआत हो चुकी थी और असली संघर्ष अब शुरू होने वाला था। चारों सुबह करीब 7:45 बजे मतंगा पहाड़ी से नीचे उतरे और अपनी टैक्सी में बैठ गए। कुछ देर में वे अपने होटल पहुँच गए। उन्होंने नाश्ता किया और कुछ देर आराम करने के लिए अपने-अपने कमरों में चले गए।

***

हर्ष ने अपना फोन चार्जिंग पर लगा दिया क्योंकि उसने उसे एक दिन से बंद रखा था। फिर वह नहाने चला गया और 10 मिनट बाद वापस आया। सागर अपनी डायरी में कुछ लिख रहा

था; हर्ष ने उसे परेशान नहीं किया और इसके बजाय अपना मोबाइल चालू कर लिया। कई नोटिफिकेशन थे लेकिन सबसे ज्यादा ध्यान खुशबू के एक मैसेज पर गया।
"हर्ष, तुम कहाँ हो? मैं कल से तुम्हें फोन करने की कोशिश कर रही हूँ। मुझे जल्द से जल्द फोन करो। तुम्हारे पापा को सब पता चल गया है। मुझे जल्दी फोन करो। ☹"
संदेश पढ़ते ही हर्ष का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसके हाथ काँप रहे थे और मानो उसकी दुनिया बिखर गई हो। उसने जैसे-तैसे खुशबू का नंबर डायल किया और उसे कॉल किया।
"अरे! आखिरकार तुमने कॉल किया ही?" खुशबू ने कहा। "क्या हुआ?" हर्ष ने गंभीर स्वर में पूछा। "कुछ नहीं। तुम्हारे पापा को सब पता चल गया और वो बहुत गुस्से में थे। पता नहीं कैसे, लेकिन मैंने उन्हें शांत करने की कोशिश की। वो बहुत गुस्से में लग रहे थे और मुंबई के लिए निकल गए।" इस बार खुशबू ने गंभीर स्वर में कहा। हर्ष कुछ बोल नहीं पा रहा था। "ओह शिट, खुशबू! अब क्या होगा पता नहीं। सब कुछ खत्म हो गया," वह बहुत घबराया हुआ था। वह दुनिया से भाग जाना चाहता था।
खुशबू कुछ सेकंड तक चुप रही, और फिर अचानक हंसने लगी।
उसने कहा, "अरे हर्ष! तुम्हें बेवकूफ बनाना कितना आसान है। शांत हो जाओ; कुछ नहीं हुआ। मैंने तो बस इसलिए मैसेज किया था क्योंकि मैं चाहती थी कि तुम मुझे कॉल करो।" उस पल हर्ष उसे जान से मार देना चाहता था। वह उसका चेहरा दीवार पर पटकना चाहता था और अपना फोन फेंक देना चाहता था। वह गुस्से से भरा हुआ था और उसे गालियां देना चाहता था। लेकिन इसके बजाय उसने बस इतना कहा, "ठीक है।"
"मुझे माफ़ करना, लेकिन एक अच्छी खबर है," खुशबू अब उत्साहित होकर बोली। "क्या?" खुशबू ने जो कहा, उससे हर्ष की दुनिया मानो बिखर गई। उसने कहा, "बधाई हो! हमारी शादी आज से ठीक 45 दिन बाद तय हो गई है। हमारे पिताओं ने आपसी सहमति से यह फैसला लिया है। जितनी जल्दी हो, उतना अच्छा।"
उसके शब्द सुनने के बाद हर्ष के जीवन में अंधेरा छाने लगा।
सच को टालने से झूठ की उम्मीदें पैदा होती हैं। चारों हम्पी घूमने के अपने दूसरे दिन के लिए निकल पड़े। वे विरुपाक्षा मंदिर गए और हिप्पी द्वीप का भ्रमण किया। उन्होंने 'द गुड लक

कैफे' नामक एक प्यारे से छोटे कैफे में दोपहर का भोजन किया। उसके बाद, वे सभी अंजनेय पहाड़ी देखने गए, जो भगवान हनुमान का जन्मस्थान है।
इस पूरे समय हर्ष एक रोबोट की तरह व्यवहार कर रहा था। वह बातें कर रहा था, मुस्कुरा रहा था, खा रहा था, तस्वीरें खींच रहा था, लेकिन यह सब बनावटी था। उसका शरीर बेजान सा लग रहा था। उसके दिमाग में उथल-पुथल मची हुई थी। भविष्य अंधकारमय दिख रहा था, और मलार से अलग होने का ख्याल ही इतना दर्दनाक था कि वह इसके बारे में सोचने से भी डरता था।
पूरी ज़िंदगी उसने कभी अपने मन की बात खुलकर नहीं मानी थी। और अब जब समय आ गया था, तो उसमें हिम्मत नहीं थी। सबसे बुरी बात यह थी कि उसने मलार को अपने परिवार या खुशबू के बारे में कुछ नहीं बताया था। उसे लगा था कि सब ठीक हो जाएगा, लेकिन अब सब गड़बड़ हो गया था। पहली बार, सब कुछ उसके खिलाफ जा रहा था। वह खुशबू से शादी नहीं करना चाहता था। वह मलार से दूर नहीं रहना चाहता था। वह अपने माता-पिता को निराश नहीं करना चाहता था।
उसके माता-पिता उससे बस यही चाहते थे कि वह उस लड़की से शादी कर ले जिससे वे शादी करना चाहते थे।
पसंद तो किया, लेकिन हर्ष ने उस नियम को तोड़ दिया था।

***

शाम करीब 5:45 बजे वे सभी हम्पी में अपना आखिरी सूर्यास्त देखने के लिए विरुपाक्षा मंदिर के पास हेमकुटा पहाड़ी पर पहुंचे।
साई और सागर आपस में मस्ती कर रहे थे, एक-दूसरे की खराब तस्वीरें खींच रहे थे और कुछ विदेशियों से बातें कर रहे थे।
हर्ष और मलार समुद्र तट पर जाकर बैठ गए। वहाँ से सूर्यास्त साफ़ दिखाई दे रहा था। मलार को एहसास हुआ कि हर्ष के साथ कुछ गड़बड़ है, लेकिन वह चुप रही और अपना दायाँ हाथ उसके बाएँ हाथ पर रख दिया। उस स्पर्श से हर्ष को लगा कि उसके बुरे सपने सच होने वाले हैं।

अगर मलार को उस सच्चाई के बारे में पता चल जाए जो उसने उससे छिपा रखी थी तो क्या होगा? क्या होगा अगर वह हमेशा के लिए चली जाए?
उसे पता था कि उसने जो किया वो गलत था। उसने उससे यह बताए बिना भी उसके साथ संबंध बनाए कि उसकी पहले से ही सगाई हो चुकी है। नहीं। चाहे कुछ भी हो जाए, मलार को सच जानने का हक था।
हर्ष ने कहा, "मलर, मैं 45 दिन बाद खुशबू नाम की लड़की से शादी कर रहा हूँ।"
मलार ने उसकी तरफ देखा और कहा, "हाहा, ठीक है! तुम्हें अपने चुटकुलों पर काम करना चाहिए।"
इस बार हर्ष ने मलार की आँखों में देखकर सब कुछ कह दिया।
जो बातें उसने अब तक छुपा रखी थीं। उसने उसे अपने समाज के बारे में बताया, जहाँ दूसरी जाति के लोगों से प्रेम विवाह की अनुमति नहीं थी। उसने आयुषी से अपने ब्रेकअप के बारे में भी बताया और यह भी बताया कि कैसे उसने पैसों के लिए किसी और से शादी कर ली। साथ ही, उसने खुशबू से अपनी सगाई के बारे में, हम्पी आने के लिए अपने माता-पिता से झूठ बोलने के बारे में और उस सुबह के बारे में भी बताया जब खुशबू ने उसे बताया कि अगले 45 दिनों में उनकी शादी होने वाली है।
जब कोई ऐसी दुर्घटना घटित होती है जिसकी हमने सपने में भी कल्पना नहीं की होती, तो हम कुछ पलों के लिए स्तब्ध रह जाते हैं। मलार के साथ भी ऐसा ही हुआ। उसका शरीर मानो उस बेंच पर चिपक गया था। वह डूबते सूरज को देखती रही। उसने अपना हाथ हटा लिया, जो हर्ष के हाथ पर था।
उसने कहा, "तुमने मुझे यह पहले क्यों नहीं बताया? कम से कम कल रात साथ सोने से पहले तो बता देते?" मलार की आवाज़ और आँखों में बहुत दर्द और विश्वासघात झलक रहा था।
हर्ष के पास अपनी गलती का कोई जवाब नहीं था। वह चुप रहा, और इससे मलार का दिल टूट गया।
उसने एक बार फिर कोशिश करते हुए पूछा, "क्या तुम अपने परिवार के साथ हमारे लिए लड़ोगे?" इस बार हर्ष चुप रहा। उसने नीचे देखा, मानो उसने अपनी जिंदगी और प्यार से उम्मीद छोड़ दी हो।

इससे मलार का दिल पूरी तरह टूट गया। उसकी आँखों से एक आँसू बह निकला, और उसे लगा जैसे उसके साथ धोखा हुआ हो और वह बेइज्जत हो गई हो। वह उठी और सागर और साई की ओर गई। उसने सागर से कहा, "मैं अभी होटल वापस जाना चाहती हूँ! मैं तुरंत मुंबई लौटना चाहती हूँ!"
सागर ने उसकी आँखों में आंसू देखे। कुछ तो बहुत गलत हुआ था। उसने पूछा, "क्या हुआ? तुम क्यों रो रही हो?"
"तुम लोग आ रहे हो या मुझे अकेले जाना चाहिए?" मलार रोते हुए चिल्लाई। वह पार्किंग की ओर चलने लगी। सागर और साई उसकी ओर दौड़े।
सागर ने उसे रोकने के लिए उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, "मलर, मुझे बताओ क्या हुआ? क्या हर्ष ने कुछ कहा? रोना मत। मैं तुम्हारे साथ हूँ!"
मलार अपना आपा खो बैठी। उसने पूरी ताकत से सागर को थप्पड़ मारा और कहा, "मुझे कभी भी इस तरह की दया मत दिखाना," और इतना कहकर वह टैक्सी की ओर चली गई। सागर ने कभी नहीं सोचा था कि उसका सबसे अच्छा दोस्त उसे थप्पड़ मारेगा। साई ने सागर को गले लगाया। उसने भी कभी कल्पना नहीं की थी कि उसकी सपनों की यात्रा का अंत इस तरह होगा। सूरज पूरी तरह डूब चुका था। अंधेरा छाने लगा था।
अगले दिन मुंबई
किराए पर लिए गए ड्राइवर ने बिना रुके गाड़ी चलाई और अगले दिन दोपहर को मुंबई पहुँच गया। साई और सागर, मलार के इस व्यवहार से स्तब्ध रह गए।
हम्पी के सनसेट पॉइंट से वह टैक्सी में बैठकर होटल चली गई। सागर, साई और हर्ष को होटल पहुँचने के लिए लोकल बस लेनी पड़ी। रास्ते में सागर ने हर्ष से पूछा कि क्या हुआ था। थोड़ी झिझक के बाद हर्ष ने सागर को सब कुछ बता दिया। यह सुनकर सागर बहुत क्रोधित हुआ। उसने गुस्से में बस की खिड़की पर हाथ पटका।
वह जोर से चिल्लाया, "अरे कायर! तुम्हारी सगाई तो पहले ही हो चुकी थी! तुमने उसे पहले क्यों नहीं बताया? क्या तुम्हें पता भी है कि मलार ने अपने पूर्व प्रेमी के साथ क्या झेला? हर्ष, अगर उसे कुछ हुआ तो मैं तुम्हें जान से मार दूंगा, और फिर हमारी दोस्ती भी खत्म हो जाएगी।"

"सागर, मेरी मदद करो। मैं मलार से दूर नहीं रह सकता। मैं उससे प्यार करता हूँ," हर्ष सचमुच रो रहा था।
"अरे बेवकूफ! हिम्मत मत करना उससे प्यार करने की। प्यार के लिए हिम्मत चाहिए, और तुममें वो बिल्कुल नहीं है!" सागर हर्ष का चेहरा तोड़ने ही वाला था, लेकिन साई ने उसे रोक दिया।
उसने कहा, "क्या आप भगवान के लिए रुक सकते हैं? होटल पहुँचने के बाद हम बात कर लेंगे।"

***

होटल के कमरे में पहुँचते ही मलार ने अपना सारा सामान पैक करना शुरू कर दिया। साई उससे बात करने के लिए अकेले अंदर चली गई।
इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, मलार चिल्लाई, "मैं अभी मुंबई जाना चाहती हूँ। अगर तुम आना चाहो तो ठीक है; वरना मैं अपना रास्ता खुद ढूंढ लूंगी।"
साईं उसकी ओर बढ़ा और बोला, "मलर, बहुत देर हो चुकी है। हम कल सुबह निकलेंगे। शांत हो जाओ।"
"मुझे शांत करने की कोशिश मत करो! मैं अगले 10 मिनट में अकेले ही चली जाऊंगी। मुझे तुम्हारे जैसे किसी भी कमीने की मदद नहीं चाहिए।" मलार बहुत परेशान थी और अपना आपा खो रही थी।
साई ने मलार को पहले कभी इस हालत में नहीं देखा था। उसने कहा, "ठीक है, अब हम चलते हैं। मैं लड़कों से कह देती हूँ कि वे अपना सामान पैक कर लें।" यह सुनकर मलार और भी ज़ोर से चिल्लाने लगी।
"कौन से लड़के? सिर्फ मैं, तुम और सागर ही जाएंगे। मैं उस घटिया आदमी को अपने साथ नहीं ले जाना चाहता।"
"लेकिन मलार, फिर गाड़ी कौन चलाएगा?"
"हम रिसेप्शन पर ट्रैवल डेस्क से एक ड्राइवर किराए पर लेंगे। मैं भुगतान कर दूंगी। मैं उसे एक पल के लिए भी नहीं देखना चाहती। समझ गई?" साई ने कुछ नहीं कहा। वह बस कमरे से चली गई।

हर्ष और सागर बाहर खड़े सब कुछ सुन रहे थे। साई ने कहा, "वह चाहती है कि हम अभी चले जाएं और हर्ष को अपने साथ नहीं आने देना चाहती।" हर्ष ने कहा, "ठीक है। मैं यहाँ से बस ले लूंगा, लेकिन सागर, मेरी मदद करो। मेरी बात सुनो।" वह अब रो भी रहा था। "तुम्हें अपनी सच्चाई बताए बिना उसके साथ कमरे में रहने से पहले इन सब बातों के बारे में सोचना चाहिए था।" सागर गुस्से में था, लेकिन उसकी आवाज़ नरम थी। "सागर, मुझे पता है मैंने गलतियाँ की हैं, लेकिन तुम मेरे समाज को, मेरे माता-पिता को जानते हो। उनके सामने मैं बेबस हो जाता हूँ। लेकिन मैं मलार से प्यार करता हूँ। मेरी मदद करो। मेरी आँखों में देखो। मैं मलार से प्यार करता हूँ, और यही मेरे जीवन की एकमात्र सच्चाई है। कृपया।" हर्ष गिड़गिड़ा रहा था और साथ ही रो भी रहा था। सागर ने हर्ष के कंधे पर हाथ रखा। उन्होंने कहा, "देखो हर्ष, तुमने जो किया वो गलत था, इसलिए मैं अभी कुछ नहीं कर सकता। चलो मुंबई चलते हैं, फिर मैं देखूंगा। अगर तुम सच में मलार से प्यार करते हो तो जाओ और अपने माता-पिता को सब कुछ बता दो। फिर हम देखेंगे।"

"ठीक है," हर्ष ने किसी तरह इतना ही कहा क्योंकि उसके जीवन का सबसे बड़ा डर अपने माता-पिता को सच बताना था।

अगले घंटे में, मलार, सागर और साई ने मुंबई से एक ड्राइवर किराए पर लेकर प्रस्थान किया। यात्रा के दौरान किसी ने कुछ नहीं बोला। केवल दो बार आराम किया गया और मलार ने कुछ नहीं खाया। वह लगातार खिड़की से बाहर अंधेरे की ओर देखती रही।

मुंबई स्थित अपने भवन में पहुँचते ही, मलार ने ड्राइवर को किराया दिया, अपना सामान खुद उठाया और कहा, "कृपया कुछ समय के लिए मुझसे संपर्क करने की कोशिश न करें। अगर मुझे कुछ चाहिए होगा, तो मैं आपको बता दूँगी।" इतना कहकर वह अपने घर की ओर चल पड़ी।

अध्याय 32

हर्ष भी अगले दिन होस्पेट से बस लेकर मुंबई पहुँच गया। पूरी यात्रा के दौरान वह खुद से पूछता रहा कि उसने खुद को इतना कायर कैसे बनने दिया। दूसरी ओर, उसे मलार से शादी करने पर होने वाले परिणामों की कल्पना सता रही थी। उसके माता-पिता रोएंगे और समाज से निकाल दिए जाएंगे। चारों ओर अफरा-तफरी मच जाएगी, और हर्ष एक गहरे अंधकार में डूबता चला गया।

घर पहुँचते ही उसके माता-पिता ने उसकी शादी तय होने पर उसे बधाई दी। हर्ष ने मुस्कुराने का नाटक किया, लेकिन उसे एहसास हुआ कि उसके माता-पिता कितने खुश थे।

हर्ष के पिता ने पूछा, "तो तुम्हारी यात्रा कैसी रही?"

"यह अच्छा था," हर्ष ने संक्षेप में कहा।

"यहाँ बैठो।"

हर्ष अपने पिता के सामने बैठा था, तभी उसकी माँ ने उसे पानी दिया। हर्ष के पिता ने समझाया, “शादी सूरत के सबसे बड़े बैंक्वेट हॉल में होगी। हमें खुशबू के लिए मंगलसूत्र खरीदना है। जब समय मिले, तो खुशबू को मुंबई ले आओ ताकि वह अपनी पसंद और नाप के अनुसार मंगलसूत्र चुन सके।” हर्ष ने एक पल सोचा और बोला, “ठीक है। मैं कल ही चला जाऊंगा। उससे मिले हुए काफी समय हो गया है।” हर्ष के मन में कुछ और ही योजनाएँ थीं। उसके पिता ने कहा, “ठीक है। हर्ष, अगले 45 दिनों में तुम दोनों पति-पत्नी बनने वाले हो। इसलिए तुम्हें उसके साथ ज़्यादा समय बिताना होगा। उसने प्री-वेडिंग फोटोशूट और प्री-वेडिंग ट्रेलर की योजना बनाई है। जब मैं गया था तब वह इन सब बातों के बारे में बता रही थी। इसलिए उसकी हर बात में खुशी-खुशी हिस्सा लेना।”

हर्ष ने बस सिर हिलाया। वह खुशबू के साथ फोटोशूट करवाने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। अब वह और बर्दाश्त नहीं कर सकता था। इससे पहले, वह बस फिल्मों की तरह किसी से प्यार करना चाहता था। लेकिन फिर आयुषी ने पैसे के लिए उसे छोड़ दिया, और जब तक उसे प्यार मिला, तब तक वह और भी बड़ी मुसीबत में फंस चुका था। उसे एहसास हुआ कि इससे निकलने का सिर्फ एक ही रास्ता है। सिर्फ खुशबू ही शादी रद्द कर सकती थी।

अगले दिन हर्ष खुशबू से मिलने सूरत के लिए रवाना हो गया। खुशबू ने उसे अपने घर आने के लिए कहा, लेकिन हर्ष ने बाहर मिलने पर जोर दिया, इसलिए वे एक स्थानीय कैफे के अंदर मिले।

खुशबू ने हर्ष से हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया और कहा, "शादी की बहुत-बहुत बधाई हो। मुझे कुछ महसूस नहीं हो रहा। आप जानते ही हैं कि मेरी शादी होने वाली है। मुझे खुश होना चाहिए, है ना?"

हर्ष ने उसका हाथ मिलाते हुए कहा, "खुशबू, मुझे तुमसे बहुत महत्वपूर्ण बात करनी है।"

खुशबू ने उसकी तरफ देखा और मुस्कुराई। "मुझे पता है तुम किस बारे में बात करना चाहते हो। तो आराम करो।"

हर्ष चौंक गया। उसे कैसे पता चला? उसने पूछा, "तो बताओ, बात क्या है?"

खुशबू ने कहा, "उस दिन जब तुम गोवा में थे, मैंने तुम्हारे पिताजी से कहा था कि हर्ष और मैं हनीमून के लिए न्यूजीलैंड जाना चाहते हैं। उस समय तुम्हारे पिताजी ने मना कर दिया था क्योंकि वहाँ सब लोग मौजूद थे। लेकिन मैं समझती हूँ कि यह खर्चीला है। चिंता मत करो, मेरे पिताजी खर्च उठा लेंगे।" हर्ष को पहली बार अपने अंदर गुस्सा उमड़ता महसूस हुआ। वह अब और बकवास बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

उसने मेज पर जोर से हाथ पटका और बोला, "खुशबू, तुम्हें बात करने का कोई अंदाजा नहीं है क्या? कम से कम थोड़ी तो समझदारी दिखाओ!"

वहाँ बैठे सभी लोग, वेटर समेत, उनकी मेज को घूर रहे थे। खुशबू को बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। उसने अपनी पूरी जिंदगी में कभी किसी लड़के से इस तरह बात नहीं की थी। वह उठी और जाने लगी। "धत् तेरे की!" हर्ष चिल्लाया। उसे एहसास हुआ कि यही उसका आखिरी मौका है, और वह इसे गंवा नहीं सकता था। वह खड़ा हुआ और उसे रोकने के लिए उसके पीछे भागा। "खुशबू, मुझे बहुत अफ़सोस है। कृपया मेरी बात सुनो।" खुशबू मुड़ी और हर्ष की आँखों में सीधे देखते हुए बोली, "हिम्मत मत करना मुझसे इस तरह बात करने की! यह पहली और आखिरी बार होना चाहिए।"

"ठीक है, मुझे खेद है। कृपया मेरी बात सुनिए।"

दोनों एक ही कैफे में गए और एक ही टेबल पर बैठ गए। हर्ष ने भारी मन से कहा, "खुशबू, मैं किसी और से प्यार करता हूँ!" "मुझे पता है तुम आयुषी से प्यार करते थे, लेकिन उसने पैसे के लिए किसी और से शादी कर ली। अब तुम्हारी बारी?"
इसके बाद हर्ष ने अपने और मलार के बारे में सब कुछ बताया और यह भी बताया कि वह मलार से बहुत प्यार करता है।
खुशबू ने एक पल सोचा और जवाब दिया, "हर्ष, तुम तो जानते ही हो कि हमारी जाति में प्यार की कोई जगह नहीं है, और बचपन से ही हमारे अंदर नफरत के बीज बो दिए जाते हैं। मैं भी कभी किसी से प्यार करती थी, लेकिन देखो, अब मैं तुम्हारे साथ हूँ। आगे बढ़ो, और अगर चाहो तो शादी के बाद भी उससे रिश्ता जारी रख सकते हो। मुझे कोई आपत्ति नहीं है क्योंकि हमारे बीच प्यार हो ही नहीं सकता। और कुछ सालों बाद जब परिवार वाले हमसे बच्चा पैदा करने का दबाव डालेंगे, तो हम शारीरिक संबंध बनाकर उन्हें बच्चा दे देंगे।"
हर्ष को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। इक्कीसवीं सदी में कोई लड़की इतनी दकियानूसी कैसे हो सकती है? लेकिन फिर उसे याद आया कि वह खुद भी ऐसी ही दकियानूसी सोच का हिस्सा था। नहीं, वह इतना नीचे नहीं गिर सकता था। उसने साफ-साफ कहा, "खुशबू, मैं तुमसे शादी नहीं कर सकता। कृपया शादी रद्द कर दो।"
"मैं शादी क्यों रद्द करूँ? अगर तुम किसी और से प्यार करते हो, तो हिम्मत करके सबके सामने शादी रद्द कर दो। लेकिन मुझे पता है तुम ऐसा नहीं करोगे क्योंकि तुम डरपोक हो।"
खुशबू अब और भी परेशान हो गई थी। "खुशबू, ये डरपोक होने की बात नहीं है। तुम जानती हो हमारे परिवार कैसे हैं; इसीलिए मैं तुमसे ये विनती कर रहा हूँ।"
"नहीं, हर्ष। मुझे माफ़ करना। मैं इसे रद्द नहीं कर सकती क्योंकि उसके बाद कोई मुझसे शादी करने के लिए आगे नहीं आएगा। तुम अपने माता-पिता को बताओ, इसे रद्द करो और खुलकर कह दो कि तुम मुझसे शादी नहीं करना चाहते क्योंकि तुम किसी और से प्यार करते हो," खुशबू ने सब कुछ बहुत स्पष्ट रूप से कहा।
हर्ष चुप रहा क्योंकि उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। उसकी योजनाएँ पहले ही विफल होने लगी थीं। वह शादी रद्द नहीं कर सकता था क्योंकि उसके माता-पिता को उसके समाज और समाज के प्रकोप का सामना करना पड़ता।

कुछ देर बाद खुशबू बोली, "देखो हर्ष, मुझे पता है तुम मुझे पसंद नहीं करते, लेकिन हमारे समाज में सब लोग सिर्फ दिखावा कर रहे हैं। असल में, हमारे माता-पिता दिखावा करते हैं कि वे हमारा भला चाहते हैं, लेकिन उन्हें सिर्फ अपनी इज्जत की फ़िक्र है। इसलिए सबके सामने दिखावा करो, और अगर दिखावा नहीं कर सकते, तो सच बोलने की हिम्मत रखो।"
हर्ष ने पूछा, "क्या तुममें अपने माता-पिता को सच बताने की हिम्मत नहीं है?" खुशबू मुस्कुराई। "एक बार मुझमें हिम्मत आई और मैंने सच बोल दिया, लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि मेरे पिता के पास इतना पैसा और इतने संपर्क हैं कि जिस लड़के से मैं प्यार करती थी, उसे यह शहर छोड़कर कहीं और जाना पड़ा, जहाँ वह मुझे कभी नहीं ढूंढ पाएगा। तब से मैंने अभिनय को ही अपना पेशा बना लिया है।"
हर्ष और खुशबू फिर मुंबई गए, और हर्ष के माता-पिता के साथ खुशबू के लिए मंगलसूत्र चुनने गए। हर्ष ने खुशबू को ऐसे मुस्कुराते और हंसते देखा जैसे कुछ हुआ ही न हो, और उसे देखकर उसे एहसास हुआ कि वह नाटक नहीं कर सकता। पूरी जिंदगी दिखावा करने से बेहतर यही था कि वह इस रिश्ते को खत्म कर दे।

अगले दिन वह खुशबू को सूरत छोड़ने वापस गया।

खुशबू ने कहा, "पांच दिन बाद हमारा फोटोशूट है, इसलिए समय पर यहां पहुंचना सुनिश्चित करें।"

अध्याय 33

जब मलार ने अपनी आँखें बंद कीं, तो उसके दिमाग में बस वही था। जब उसने आँखें खोलीं, तो वह खुद को संभाल नहीं पाई। हम्पी में उस दिन के बाद जब मलार घर पहुँची, तो उसने खुद को अपने कमरे में बंद कर लिया और घंटों रोती रही। उसका रोना उसके अंदर के दर्द का एक छोटा सा शारीरिक रूप मात्र था।

उसकी माँ ने उससे उसकी यात्रा और उसके साथ क्या हुआ, इसके बारे में पूछा। मलार रो पड़ी और उसने अपनी माँ को हर्ष के बारे में सब कुछ बता दिया। मलार ने अपनी माँ से यह भी पूछा, "जीवन में हमेशा मुझे ही क्यों दुख झेलना पड़ता है?" उसकी माँ ने उसे गले लगाया और कहा, "बेटी, तुम्हारे सवाल का मेरे पास कोई जवाब नहीं है। लेकिन जब तुम्हारे पिता हमें छोड़कर चले गए थे, तब मुझे भी ऐसा ही महसूस हुआ था।" मलार अपनी माँ की गोद में लेट गई और रोने लगी।

उस रात और उसके बाद कई रातों तक मलार सो नहीं पाई। उसके मन में कई सवाल थे। सबसे बड़ा सवाल था, "हर्ष ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?"

जब भी वह उसकी आँखों में देखती, सब कुछ वास्तविक और सच्चा लगता। जब वे प्रेम करते, तो ऐसा लगता मानो पूरा ब्रह्मांड जीवंत हो उठा हो। लेकिन अब सब कुछ बनावटी और रहस्यमय सा लगता था।

मलार आईने में खुद को देखकर घबरा गई क्योंकि उसे यकीन नहीं हो रहा था कि वह कितनी आसानी से मूर्ख बन गई थी। उसने लोगों को इतनी आसानी से अपने करीब आने दिया था। उसके पूर्व प्रेमी निमित के साथ तो रिश्ता आपसी सहमति से खत्म हुआ था, लेकिन यहां सब कुछ एकतरफा था। हर्ष ने रिश्ता तोड़ा, और उसने सपने में भी ऐसा नहीं सोचा था।

मलार ने नोटिस पीरियड पूरा किए बिना ही नौकरी से इस्तीफा दे दिया। उनकी सेहत बिगड़ गई और कसरत करते हुए जो वजन उन्होंने घटाया था, वह धीरे-धीरे वापस बढ़ने लगा।

सागर और साई ने उसे फोन करने की कोशिश की, लेकिन जब उसने उनका फोन देखा, तो उसने अपना फोन बंद कर दिया, सिम कार्ड निकाला और उसे शौचालय में बहा दिया। वह अब किसी को भी अपने करीब नहीं आने देना चाहती थी।

वह अपनी मां से भी दूरी बनाए रखती थी और उनकी हर बात का बस "ठीक है" कहकर जवाब देती थी।
उसके लिए सही से सोचना भी एक निरंतर संघर्ष था। समस्याएँ अंधेरा देखने से शुरू नहीं होतीं, बल्कि तब शुरू होती हैं जब आसपास रोशनी होने के बावजूद आपको अंधेरा दिखाई देने लगता है।
उसका दिन इस सोच से शुरू हुआ कि काश वो समय के प्रवाह को बदल पाती और हर्ष के साथ बिताए अपने पुराने दिनों में लौट पाती, जहाँ सब कुछ जादुई लगता था। धीरे-धीरे उसके मन में हर्ष से जुड़े सारे विचार और भावनाएँ उमड़ने लगीं। कुछ पलों के लिए तो उसका मन करता कि वो सब कुछ भूल जाए, हर्ष को माफ़ कर दे और अपना रिश्ता फिर से शुरू कर दे, लेकिन तभी एक और विरोधाभासी विचार उसके मन में आता, जो कहता, "जो लड़का अपने प्यार के लिए खड़ा नहीं हो सकता, वो समय और प्यार के लायक नहीं है।"
दिन ढलते-ढलते उसका शरीर और मन चिंता से भर जाता था, और उसकी धड़कन इतनी तेज़ हो जाती थी कि वह उसे रोकना चाहती थी। उसके पेट में एक अजीब सा खालीपन सा रहता था, और उसका मन लगातार बेचैन रहता था। रातों को वह अपने दांत पीसती और अपना दाहिना पैर हिलाती रहती थी।
एक दिन उसने बाल कटवाने का फैसला किया। दोपहर के करीब, वह लगभग 15 दिनों बाद घर से निकली। जैसे ही वह नीचे उतरी, यातायात, शोर और प्रदूषण उसे परेशान करने लगे। सड़क पार करने की कोशिश करते हुए उसे हर्ष का हाथ थामे हुए सड़क पार करने की याद सताने लगी। उसने अनजाने में अपना दाहिना हाथ बढ़ाया और बगल में खड़े व्यक्ति का हाथ पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। यह एहसास उसे बुरी तरह से झकझोर गया। हर्ष उसके आसपास नहीं था। वह दौड़कर अपने घर वापस गई, कैंची ली और बाथरूम के शीशे के सामने खड़े होकर खुद ही अपने बाल काट लिए। बालों के साथ-साथ उसकी आँखों से आंसू भी बहने लगे।
मलार के साथ-साथ उसका सबसे अच्छा दोस्त सागर भी उतना ही प्रभावित था। वह और साई बैठे रहते और सागर मलार द्वारा उसे मारे जाने पर अपनी भावनाओं के बारे में बताता। वह असहाय महसूस कर रहा था कि वह उसकी मदद नहीं कर सका। हर्ष ने कई बार उसे फोन

करके मलार के बारे में पूछा, लेकिन सागर का जवाब हमेशा एक ही होता था। "हर्ष, वह मुझसे बात तक नहीं कर रही है। मैं कुछ नहीं कर सकता। तुम्हें शादी रोकनी होगी।" हर्ष रोता और कभी-कभी गिड़गिड़ाता, "सागर, मेरी मदद करो। मैं शादी रद्द नहीं कर सकता। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं यहाँ पिंजरे में कैद हूँ। कृपया, मेरी मदद करो!" यह सुनकर सागर फोन काट देता। वह पहले से कहीं ज़्यादा बेबस महसूस कर रहा था। आगे सिर्फ़ अंधेरा ही अंधेरा था।

अध्याय 34

एक महीना बीत गया। हर्ष ने हर संभव कोशिश की, लेकिन उसकी शादी रोकने में कुछ भी कारगर नहीं हुआ।

प्री-वेडिंग फोटोशूट हुए और प्री-वेडिंग वीडियो भी रिकॉर्ड किया गया। हर बार जब फोटोग्राफर उसे मुस्कुराने के लिए कहता, तो हर्ष को बनावटी मुस्कान दिखानी पड़ती थी, जिससे उसे बहुत बुरा लगता था। उसने खुशबू से गुजारिश की कि वह तस्वीरें सोशल मीडिया पर अपलोड न करे, लेकिन उसने उसकी बात नहीं मानी और फेसबुक और इंस्टाग्राम पर उसकी तस्वीरें अपलोड कर दीं और उसे भी टैग कर दिया। उसी दिन उसने अपने सभी सोशल मीडिया अकाउंट डिलीट कर दिए। उसके पास आखिरी और एकमात्र विकल्प यही बचा था कि वह अपने माता-पिता को सब कुछ बता दे।

शादी में सिर्फ 15 दिन बचे थे और सभी को शादी के कार्ड बांटे जा चुके थे। हर्ष को अपने माता-पिता को सच बताने में सबसे ज्यादा डर लग रहा था।

उसने खुद से कहा, "नहीं, हर्ष! तुम ऐसा नहीं होने दे सकते। पिछले 30 दिनों से तुम एक रोबोट की तरह जी रहे हो; तुम्हारे अंदर का इंसान मर चुका है। सच बोलो!"

उसके मन में डर की एक और आवाज गूंजती, "हर्ष, समाज में अपने माता-पिता की इज्जत के बारे में सोचो। तुम इतने स्वार्थी नहीं हो सकते। एक अच्छे बेटे बनो और खुशबू से शादी करो।"

हर्ष जैसे सुन्न पड़ गया था। उसका शरीर हिल नहीं रहा था और जैसे कहीं अटक गया हो। ऐसा लग रहा था जैसे सब कुछ उसके नियंत्रण से बाहर हो गया हो। तभी उसका फोन बज उठा। खुशबू का फोन था। हर्ष ने कॉल काट दिया; उसने दोबारा कॉल किया। इस बार कुछ रिंग बजने के बाद उसने फोन उठा लिया।

खुशबू ने अधिकारपूर्वक कहा, "मेरी कॉल कभी मत काटना।" हर्ष ने बहस करने की कोशिश की लेकिन जवाब दिया, "ठीक है।"

"अब सुनो। सब कुछ छोड़कर तुरंत सूरत आ जाओ। मुझे तुमसे बहुत महत्वपूर्ण बात करनी है।"

"मुझे फोन पर बताओ," हर्ष ने कहा।

"हर्ष, तुम बहस करने की स्थिति में नहीं हो। बस आ जाओ। तुम्हें निराशा नहीं होगी।"
हर्ष और बहस नहीं कर सका। वह अगली सुबह सूरत के लिए रवाना हो गया और दोपहर करीब 3 बजे वहाँ पहुँचा। हर्ष और खुशबू उसी कैफे में मिले जहाँ वे पिछली बार मिले थे। बैठने के बाद खुशबू बोलने लगी, "हर्ष, मुझे पता है कि तुम मुझसे शादी नहीं करना चाहते क्योंकि तुम किसी और से प्यार करते हो। सबसे पहले, मैं तुम्हारे साथ किए गए बर्ताव के लिए बहुत माफी मांगती हूं।" हर्ष चौंक गया। उसने इस तरह के अचानक बदलाव की उम्मीद नहीं की थी। उसने कहा, "कोई बात नहीं, खुशबू।"
खुशबू ने आगे कहा, "अब मेरी बात ध्यान से सुनो। कल मुझे तुम्हारी पूर्व प्रेमिका आयुषी का फोन आया था। उसने कहा कि आज अमेरिका जाने से पहले वह मुझसे मिलना चाहती है। मैं मान गई और उससे मिली। हर्ष, मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है, लेकिन तुम्हें शुरू से ही बेवकूफ बनाया गया है।" हर्ष को समझ नहीं आया कि क्या कहे। उसका दिमाग पहले से ही इतने सारे विचारों में उलझा हुआ था कि उसके पास एक और समस्या को अपने जीवन में आने देने की हिम्मत नहीं थी।
उसने पूछा, "तुम्हारा क्या मतलब है?"
खुशबू ने गहरी सांस ली, हर्ष के हाथ पर अपना हाथ रखा और उसे थामे रखा। उसने कहा "हर्ष, आयुषी ने तुम्हें पैसों के लिए नहीं छोड़ा। यह सब तुम्हारे पिता की साजिश थी। उन्होंने आयुषी के पिता को फोन किया और कहा कि तुम आयुषी से शादी नहीं कर सकते क्योंकि तुम और तुम्हारा परिवार सिर्फ अमीर परिवार में शादी करना चाहते हो। तुम्हारे पिता ने आयुषी के पिता का अपमान करते हुए कहा कि तुम उनके गरीब घर में भी नहीं घुसोगे। उन्होंने आगे उनका अपमान करते हुए कहा कि पहले वे अमीर बनो और फिर अपनी बेटी की शादी तुमसे करवाने का सपना देखो। नहीं तो, किसी अमीर परिवार में जाकर उनकी बेटी की शादी करवा दो। उन्होंने उनसे कहा कि वे तुम्हारा जीवन बर्बाद न करें; नहीं तो वे समाज में उनकी इज्जत मिट्टी में मिला देंगे और आरोप लगाएंगे कि उन्होंने अपनी बेटी को लालची बनाया था; इसीलिए उसने तुम्हारे जैसे भोले-भाले लड़के को फंसा लिया।"
"आयुषी के पिता तुम्हारे पिता के अपमान को सहन नहीं कर सके। वे आयुषी की शादी तुमसे करवाने को तैयार थे, लेकिन तुम्हारे पिता ने उनके अहंकार को ठेस पहुँचाई, और इसीलिए

उन्होंने आयुषी की शादी ऐसे व्यक्ति से करवाई जो उनका और आयुषी का बहुत सम्मान करता था। कल आयुषी को जब पता चला कि तुम्हारे पिता ने तुमसे झूठ बोला है, तो वह बहुत रोई। यह सब तुम्हारे पिता की योजना थी। वे चाहते थे कि तुम्हारी शादी मुझसे हो क्योंकि मेरे पिता बहुत अमीर हैं। जब मुझे यह सब पता चला, तो मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकी, और इसीलिए मैं चाहती हूँ कि तुम मलार के लिए लड़ो।"

हर्ष की आँखों से आँसू बह रहे थे। वह गुस्से में था और साथ ही ठगा हुआ भी महसूस कर रहा था। उसके पिता ने उसे और उसके प्यार को पैसों के लिए बेच दिया था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी ऐसे व्यक्ति से भी बदतर है जो पैसों के लिए अपना शरीर बेचता है। उसका सिर चकरा रहा था। वह चाहता था कि मलार उसे गले लगा ले ताकि वह रो सके। खुशबू भी चुप रही। उसने हर्ष को अकेला छोड़ दिया। थोड़ी देर बाद हर्ष ने पूछा।

"आयुषी ने मेरे बारे में क्या कहा?"

मैंने उसे बताया कि अब तुम किसी और से प्यार करते हो और मुझसे शादी नहीं करना चाहते। उसने मुझसे तुम्हें सब कुछ बताने और तुम्हारी मदद करने का अनुरोध किया।

"मुझे नहीं पता। अब मैं क्या करूँ, खुशबू?" हर्ष को कुछ समझ नहीं आ रहा था। "जाओ और अपने पिता से बात करो। अब सब कुछ तुम्हारे हाथ में है। उन्हें पूरे विश्वास के साथ बताओ कि तुम किसी और से प्यार करती हो और मुझसे शादी नहीं कर सकती। अब लड़ने का समय है हर्ष।" खुशबू ने उसकी आँखों में सीधे देखते हुए कहा। उसकी आवाज़ में एक ज़बरदस्त ताकत थी, जो विनाश का संकेत दे रही थी।

हर्ष को एहसास हुआ कि अब खुद के लिए खड़े होने का समय आ गया है। वह मलार के बिना नहीं रह सकता था। उसने अपना फोन निकाला और सागर को कॉल किया। कॉल का कोई जवाब नहीं मिला। हर्ष ने दो बार और कॉल किया, लेकिन नतीजा वही रहा। उसने खुशबू से कहा, "क्या तुम मेरे लिए एक आखिरी काम कर सकती हो, खुशबू?"

"हाँ यकीनन।"

“ये नंबर ले लो। ये मेरे दोस्त सागर का है। उसे फोन करके सब कुछ बता देना। वो मलार की बिल्डिंग में रहता है, और उसी की वजह से मैं मलार से मिला था। वो मेरा फोन नहीं उठाएगा और मुझसे बात भी नहीं करेगा। इसलिए उससे कहना कि अगर आज के बाद मेरा फोन

कभी बंद हो जाए, तो वो मेरे घर आकर मेरा हालचाल पूछ ले। वो समझ जाएगा," हर्ष ने समझाया। वो जाने के लिए उठा। लेकिन उससे पहले उसने खुशबू को गले लगाया। खुशबू ही वो पहली इंसान थी जिसने उस पर भरोसा किया था।

वह गुस्से से आग बबूला था। वह कार में बैठा और उसे तेज़ी से भगाकर अपने पिता का सामना करने निकल पड़ा, जिसने सचमुच उसे पैसों और उसकी बेकार समाज के लिए बेच दिया था।

अध्याय 35

हर्ष और मलार उसके बेडरूम में दाखिल हुए। उन्होंने एक-दूसरे की आँखों में देखा और एक-दूसरे के कपड़े उतारने लगे। उन्होंने ऐसे प्रेम किया मानो कल की कोई चिंता ही न हो। प्रेम करने के बाद हर्ष ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा। हर्ष ने अपने कपड़े पहन लिए, लेकिन मलार अभी भी नग्न थी। उसके कपड़े कहीं नज़र नहीं आ रहे थे।

उसने हर्ष से पूछा, "तुम क्यों हंस रहे हो?"

हर्ष हंसता रहा। "खुद को देखो, मोटी कुतिया। तुम्हारा पहला प्रेमी तुम्हें इसलिए छोड़कर चला गया क्योंकि तुम इतनी बदसूरत हो गई थीं कि तुम्हें देखकर उसका लिंग खड़ा ही नहीं होता था। और अब मैं तुम्हें चोदने के बाद छोड़ दूंगा क्योंकि तुम एकदम निकम्मी और बेकार हो," यह कहकर हर्ष चला गया, और मलार को हमेशा के लिए अंधेरे में छोड़ गया।

मलार रात करीब 12 बजे एक भयानक सपने के बाद अचानक उठ गई। पिछले एक हफ्ते से उसे फिर से बुरे सपने आ रहे थे, और इसी वजह से अब उसे सोने से डर लगता था। एक महीने से ज़्यादा समय बीत चुका था, और हर्ष की मदद से मलार का जो वज़न कम हुआ था, वह फिर से बढ़ गया था। बुरे सपने की वजह से उसे उल्टी हुई और उसका शरीर पसीने से भीग गया। वह तुरंत बाथरूम में भागी और उल्टी की। उल्टी करने के बाद उसे चक्कर आने लगे और ऐसा लगा जैसे वह किसी भी पल बेहोश हो जाएगी।

उसने वॉशबेसिन के शीशे में देखा और अपने चेहरे पर थोड़ा पानी छिड़का। उसने अपनी आँखों में देखा। उसकी आँखों के नीचे काले घेरे थे, और उसके बिखरे हुए बाल देखकर ऐसा लग रहा था मानो उसे डॉक्टर की मदद की ज़रूरत हो।

वह खुद को देखती रही और बुरे सपने के पल उसके दिमाग में घूमने लगे। उसे हम्पी वाला दिन याद आ गया, जब उसने और हर्ष ने शारीरिक संबंध बनाए थे। वह इतनी मूर्ख कैसे हो सकती थी? उसे लगा जैसे वह एक बेकार वेश्या हो। उसने फिर से अपनी आँखों में देखा और खुद को ज़ोर से थप्पड़ मारने लगी। लगभग 15 बार थप्पड़ मारने के बाद, मलार रोने लगी। वह अपने कमरे में वापस गई और बिस्तर पर बेहोश हो गई।

दुनिया की किसी भी बीमारी से बदतर वो स्थिति होती है जब आप खुद से सहमत नहीं रह पाते। मलार एक ऐसे दौर से गुज़र रही थी जहाँ उसे अपनी त्वचा, अपना शरीर और अपने बारे में सब कुछ से नफ़रत थी। वह लगातार अपने ही विचारों में डूबी रहती थी, जहाँ उसे अपनी अहमियत का और भी ज़्यादा एहसास नहीं होता था।

एक घंटे बेहोश रहने के बाद जब वह उठी, तो उसने सोचा, काश वह हमेशा के लिए बेहोश हो जाती ताकि उसे फिर कभी दर्द न सहना पड़े। उसे बुरे सपने सिर्फ सोते समय ही आते थे, और जब वह जागती थी, तो वह खुद ही अपने लिए सबसे बड़ा बुरा सपना होती थी। पिछले सात दिनों में जब वह दस बार बेहोश हुई थी, तभी उसे बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हुआ था। दो घंटे और बीत गए, और उसने खुद को यकीन दिला दिया कि हमेशा के लिए बेहोश होना ही एकमात्र विकल्प है क्योंकि वह अब और दर्द सहन नहीं कर सकती थी। वह जानती थी कि उसे सब कुछ उसी जगह खत्म करना होगा जहाँ से सब कुछ शुरू हुआ था। वह हॉल में गई, चाबी स्टैंड से चाबियाँ लीं और शाम 4 बजे इमारत की छत की ओर चल पड़ी।

***

दोपहर 3:45 बजे, मलार के छत पर जाने से 15 मिनट पहले, सागर को एक अनजान नंबर से फोन आया। वह और साई मलाड ईस्ट के एक कैफे में बैठकर हॉट चॉकलेट पी रहे थे। सागर ने पहली बार में फोन नहीं उठाया। फिर उसी नंबर से दोबारा फोन आया। साई ने फोन देखा और कहा, "उठा लो। ज़रूर कोई ज़रूरी बात होगी।"

आखिरकार सागर ने फोन उठा लिया।

"नमस्ते।"

"हेलो, सागर?" एक महिला की आवाज ने पूछा।

"जी हां, बताइए," सागर उस आवाज को पहचान नहीं पाया। "मैं खुशबू हूं, हर्ष की मंगेतर। हर्ष ने मुझे आपको फोन करने के लिए कहा था।" सागर ने खुशबू की बात काटते हुए कहा, "दरअसल, मैं कहीं व्यस्त हूं। क्या मैं आपको बाद में कॉल कर सकता हूं?"

"सागर, हर्ष ने मुझे बताया कि तुम उसके सबसे अच्छे दोस्त हो, इसलिए मेरी बात अनसुनी करना बंद करो और ध्यान से सुनो।" खुशबू में किसी भी समय, कहीं भी स्थिति को अपने नियंत्रण में लेने की क्षमता थी। वह दिखावा न करते हुए भी एक सच्ची नारीवादी थी।

सागर चौंक गया। उसने जैसे-तैसे कहा, "ठीक है।" खुशबू ने उसे सब कुछ बताया और यह भी बताया कि हर्ष शादी रोकने के लिए अपने पिता से मिलने गया था।
उसने कहा, "वह थोड़ी देर में तुम्हें फोन करेगा, लेकिन अगर ऐसा नहीं होता है, तो उसके घर जाओ। अब समय आ गया है कि तुम उसकी मदद करो, और कृपया मेरा नंबर सेव कर लो। संपर्क में रहना। हमें प्यार करने वाले जोड़े को फिर से मिलाने में मदद करनी है।" खुशबू की बातें सुनकर सागर बहुत खुश हुआ। "बहुत-बहुत धन्यवाद, खुशबू।"
फोन रखने से पहले खुशबू ने कहा, "और कृपया जाकर मलार को बता देना कि उसका प्रेमी कायर नहीं है। उसे बस मदद की जरूरत है।"
फोन के बाद सागर ने साई को सब कुछ बताया और वे शाम करीब 4 बजे इमारत पर पहुँचे। वह मलार को यह बताने के लिए उत्साहित था कि अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। उसकी प्रेम कहानी अभी खत्म नहीं हुई थी।
वह और साईं मलार के घर के बाहर पहुँचे और घंटी बजाई। किसी ने दरवाजा नहीं खोला। संयोगवश, उत्साह में सागर ने अनजाने में दरवाजे का हैंडल पकड़ा और उसे खींच दिया। दरवाजा अचानक खुल गया।
सागर और साई ने एक-दूसरे को देखा, यह समझने की कोशिश करते हुए कि दरवाजा खुला क्यों है। वे दोनों अंदर गए और मलार को आवाज़ दी, लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। सागर जाँच करने के लिए बेडरूम में गया और पाया कि कमरा अस्त-व्यस्त था।
इसके बाद सागर ने बाथरूम के अंदर से साई की आवाज सुनी।
सागर भागा और उसने जो देखा उससे उसकी हालत खराब हो गई। फर्श पर उल्टी पड़ी थी, और उसकी तीखी गंध से साई और सागर ने तुरंत बाथरूम का दरवाजा बंद कर दिया।
साई ने सागर की ओर देखा और कहा, "कुछ तो गड़बड़ है।" सागर ने अपना फोन निकाला और मलार की मां को फोन किया। उन्होंने तुरंत फोन उठाया और पूछा, "हेलो आंटी! क्या मलार आपके साथ है?" साई ने जवाब दिया, "नहीं बेटा। मैं ऑफिस में हूं। वह घर पर ही होगी।"
"ठीक है, आंटी। धन्यवाद," सागर ने तुरंत फोन काट दिया।

कुछ तो बहुत ही गड़बड़ थी। सागर और साईं हॉल में गए और चारों ओर देखने लगे। मलार कहाँ गई होगी? दोनों के मन में यही सवाल घूम रहा था। दो मिनट बाद सागर की नज़र घर के प्रवेश द्वार के पास रखे चाबी स्टैंड पर पड़ी। स्टैंड में चार हुक थे, और उनमें से सिर्फ़ एक खाली था। वह पास गया और उसे कुछ समझ आया। "अरे यार, छत की चाबी गायब है!" सागर चिल्लाया।

साई और सागर ने एक-दूसरे की आँखों में देखा और उन्हें डर सताने लगा कि कहीं उनके सबसे बुरे डर सच न हो जाएँ। वे दोनों शाम 4:10 बजे चौथी मंजिल की ओर भागे।

***

मलार छत पर दाखिल हुई और सूरज की रोशनी सीधे उस पर पड़ी। छत के खालीपन ने उसे और भी खालीपन का एहसास कराया। वह छत की दीवार की ओर बढ़ी और दीवार का सहारा लेकर रुक गई। दीवार उसकी छाती तक पहुँच रही थी। उसने नीचे देखा तो ऑटो-रिक्शा, कारें, बाइक और लोग सड़क पर आते-जाते नज़र आ रहे थे।

उसे याद आया कि वह हर्ष से पहली बार छत पर मिली थी। उसे एहसास हुआ कि उसके जीवन की कितनी महत्वपूर्ण बातें और घटनाएँ उसी छत पर घटी थीं और कैसे सब कुछ उसी जगह पर समाप्त होने वाला था। उसने आसमान की ओर देखा और सोचा, "क्या सब कुछ खत्म होने के बाद मैं भी वहीं जाऊंगी?"

"मुझे उम्मीद है कि मेरी मां और सागर सब कुछ स्वीकार कर लेंगे और जीवन में आगे बढ़ेंगे।" उसने सोचा।

उसकी आँखों से आंसू बहने लगे। "मैं और जीना चाहती थी, लेकिन दर्द असहनीय है, और मैं अपने आसपास के लोगों को और बर्बाद नहीं कर सकती।"

वह उठी और छत की दीवार के किनारे पर खड़ी हो गई। वहाँ से उसने नीचे देखा। "बस चार मंजिलें और उड़ना बाकी है, उम्मीद है सब कुछ बेहतर हो जाएगा।"

"मुझे लगता है कि आखिरकार मैं ऊपर अपने पिता से मिलूंगी। मैं उन्हें बहुत कसकर गले लगाऊंगी और उनसे शिकायत करूंगी कि जब मुझे उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी, तब वे मेरे साथ नहीं थे।"

उसने आखिरी बार ऊपर देखा, "पापा, मैं आ रही हूँ," उसने खुद से कहा और अपनी आँखें बंद कर लीं।

***

सागर और साईं छत पर पहुँचे। सागर ने देखा कि मलार दीवार के किनारे खड़ी होकर आकाश की ओर देख रही थी।

उसने उसे यह कहते हुए सुना, "पापा, मैं आ रही हूँ।"

सागर उसकी ओर दौड़ा और इससे पहले कि वह उछल पाती, उसने अकल्पनीय बल से उसका हाथ खींच लिया। मलार का संतुलन बिगड़ गया और वह गिर पड़ी।

सड़क की तरफ नहीं, बल्कि सौभाग्य से वहीं जहाँ सागर खड़ा था। साई दौड़ी और उसे उठने में मदद की। मलार रो रही थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अभी क्या हुआ है। ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उसे बुरे सपने से जगा दिया हो।

सागर ने उसे ज़ोर से थप्पड़ मारा। उसने उसके प्रति अपने सारे गुस्से और दर्द को उस थप्पड़ में बदल दिया। अब तक वह और साई भी रो रहे थे। सागर रोते हुए चिल्लाया, "बहनचोद, तू क्या कर रही थी?"

अब तक मलार अपना आपा खो चुकी थी। वह सागर और साई को पहचान भी नहीं पा रही थी। उसका सिर चकराने लगा। उसके पेट में मरोड़ उठने लगी और उसने फिर से उल्टी कर दी, इस बार सागर पर, और फिर संतुलन खोकर वह बेहोश हो गई।

अध्याय 36

हर्ष गुस्से से लबालब मुंबई पहुंचा। उसने अपने पिता से ऐसे धोखे की कभी उम्मीद नहीं की थी। वो भी सिर्फ पैसों के लिए। उसे यह भी एहसास हुआ कि उसके पिता ने शुरू से ही भावनात्मक रूप से उसका शोषण किया था।

वह अपने घर पहुंचा। उसके पिता ने मुस्कुराते हुए दरवाजा खोला और कहा, "स्वागत है बेटा।" हर्ष ने देखा कि उनकी मुस्कान कितनी बनावटी थी और अब तक उन्होंने कितनी अच्छी तरह से अभिनय किया था।

हर्ष को एहसास हुआ कि उसकी माँ घर में नहीं है। अपने पिता का सामना करने का यही सही मौका था।

"हर्ष, ये देखो। तुम्हारे ससुर ने मुझे उन खाने की चीज़ों की सूची भेजी है जो तुम्हारी शादी की दावत में रखी जाएंगी।" हर्ष चिल्लाया, "आपने आयुषी के बारे में मुझसे झूठ क्यों बोला?" हर्ष के पिता समझ गए कि अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था। उन्हें अपना तुरुप का पत्ता खेलना ही था। उन्होंने कहा, "हर्ष, ये देखो। तुम्हारे ससुर ने मुझे उन खाने की चीज़ों की सूची भेजी है जो तुम्हारी शादी की दावत में रखी जाएंगी।"

"क्योंकि मुझे तुम्हारी और तुम्हारे भविष्य की चिंता थी।"

“मुझे ये सब बकवास मत सुनाओ! तुमने मुझसे झूठ बोला और मुझे खुशबू के परिवार को सिर्फ पैसों के लिए बेच दिया।” हर्ष फिर चिल्लाया। गुस्सा उस पर हावी हो गया था। “आयुषी से शादी करके तुम क्या करते? उसके पिता के पास तो अपना घर भी नहीं था। उससे शादी करके तुम्हें पूरी जिंदगी संघर्ष करना पड़ता। मुझे देखो। मैंने भी तुम्हारी माँ से शादी करके वही गलती की थी, क्योंकि उसके पिता अमीर नहीं थे। तुम्हें सब कुछ देने के लिए मुझे दिन-रात मेहनत करनी पड़ी। और अब खुशबू के साथ तुम्हारा भविष्य सुरक्षित है। तुम्हें कभी पैसों की चिंता नहीं करनी पड़ेगी।” इस बार हर्ष के पिता भी तेज आवाज में बोले।

हर्ष को अपने पिता की संकीर्ण सोच और स्त्री-द्वेष पर विश्वास नहीं हो रहा था। हर्ष ने पलटवार करते हुए कहा, "प्यार का क्या?" उसके पिता व्यंग्य से हँसे। उन्होंने कहा, "बेटा, तुम्हारी माँ यहाँ नहीं है; इसीलिए मैं ये कह रहा हूँ। तो ध्यान से सुनो। प्यार तभी तक मायने रखता है जब

तक तुम लड़की के साथ सोते हो। उसके बाद, ये सब बस बार-बार करने के बारे में है। और ज़बरदस्त सेक्स के लिए, तुम्हारे पास पैसा होना चाहिए, ढेर सारा। खुशबू के साथ हनीमून पर जाकर तुम्हें ये सब पता चल जाएगा।"

हर्ष का मन कर रहा था कि वह अपने पिता को थप्पड़ मार दे। उसके लिए तो वह हमेशा एक अच्छा इंसान था। उसे कभी एहसास ही नहीं हुआ था कि उसका पिता इतना दुष्ट और धूर्त है। उसे अपने पिता को पिता कहना भी अच्छा नहीं लगता था। वह कोई और ही इंसान बन चुका था। एक ऐसा इंसान जो मुफ्त धन, नाम और सत्ता की लालसा में अंधा हो गया था।

हर्ष ने धीमी आवाज़ में विद्रोह करते हुए कहा, "मैं खुशबू से शादी नहीं कर सकता। मैं नहीं करूँगा! चाहे कुछ भी हो जाए! मैं किसी और से प्यार करता हूँ, और वह हमारे इस मूर्ख, भ्रष्ट और दिमागी रूप से गुमराह समाज की नहीं है। और मैं उससे शादी करूँगा। अगर आप मुझे इजाज़त नहीं देते, तो मैं अभी इस घर को छोड़ दूँगा। मुझे इस समाज में आपकी इज़्ज़त की कोई परवाह नहीं है।"

हर्ष के पिता स्तब्ध रह गए। उनका बेटा अब उनके वश में नहीं था। उनके सारे सपने उनकी आँखों के सामने आ गए। समाज में धन-दौलत, शक्ति, अधिकार और सम्मान पाने का सपना टूटने लगा। वे ऐसा होने नहीं दे सकते थे। बस 15 दिन बचे थे। शादी हो जाने के बाद कुछ नहीं किया जा सकता था। वे अपने बेटे को काबू में रखना जानते थे। उन्होंने गहरी साँस ली और कहा, "ठीक है, जो चाहो करो। माँ को आने दो। फिर हम फैसला करेंगे।"

हर्ष के पिता अपने कमरे की ओर वापस चलने लगे। हर्ष अब भी गुस्से में था। वह चिल्लाया, "और हाँ, मैंने अपनी प्रेमिका के साथ शारीरिक संबंध बना लिए हैं, और तुम कभी नहीं जान पाओगे कि मैं उससे कितना प्यार करता हूँ क्योंकि तुम्हारे इस समाज ने तुम्हारी इंसानियत छीन ली है।"

***

डेढ़ घंटे बाद हर्ष की मां घर लौटी। उसके पिता ने पहले ही फोन करके उन्हें बता दिया था कि उनका बेटा क्या कर रहा है।

हर्ष अपने कमरे में सो रहा था। दिन भर की घटनाओं ने उसे थका दिया था। उसे यह भी याद नहीं था कि उसका फोन कब बंद हो गया।

उसकी मां चाय का प्याला लेकर उसके कमरे में दाखिल हुई। उसने हर्ष के बालों पर हाथ फेरा और धीरे से उसे जगाया; वह उठा और अपनी मां को गले लगा लिया।
"मम्मी, मैं खुशबू से शादी नहीं कर सकता। मैं किसी और से प्यार करता हूँ। प्लीज़, मम्मी।"
"ठीक है, बेटा। हम इसके बारे में कुछ करेंगे। पहले उठो और ये चाय पी लो। मैंने ये तुम्हारे लिए बनाई है।"
माताएं किसी भी क्षण अपने बच्चों को शांत और प्रसन्न कर सकती हैं। हर्ष उठा और चाय का पहला घूंट पिया; चाय स्वादिष्ट थी। उसे अपनी माँ के हाथ का बना हर खाना पसंद था। कुछ घूंट पीने के बाद हर्ष की आँखें भारी होने लगीं। उसकी दृष्टि धुंधली होने लगी। उसका सिर घूमने लगा और वह बेहोश हो गया।
उसकी मां ने उसके हाथ से चाय का प्याला ले लिया। उसकी आंखों में आंसू थे, लेकिन उसे अपने पति का आदेश मानना ही था। हर्ष के पिता कमरे में दाखिल हुए। उन्होंने सबसे पहले हर्ष का फोन लिया और उसे अपनी जेब में रख लिया। फिर उन्होंने अपने पारिवारिक डॉक्टर को फोन किया।
“मैं अपने बेटे को ऐसी हालत में नहीं देख सकती। हम उसके माता-पिता हैं। हम उसके साथ ऐसा कैसे कर सकते हैं?” हर्ष की मां रो पड़ीं।
“यह उसके भले के लिए है। हमें उसे अगले 15 दिनों के लिए बंद रखना होगा। हम उसे चुपके से सूरत ले जाकर उसकी शादी करवा देंगे। मुझे लगता है यही एकमात्र उपाय है। तुम्हें याद नहीं? हमारे विवाह से पहले तुम्हारे पिता ने भी तुम्हें बंद कर दिया था क्योंकि तुम उस कमीने अब्दुल से शादी करना चाहती थी। तुम्हारे बेटे को तुम्हारे सारे गुण विरासत में मिले हैं, कुतिया! मैंने तुमसे शादी करके अपनी जिंदगी बर्बाद कर दी, और मैं इसे दोबारा नहीं होने दे सकती।”
हर्ष के पिता गुस्से में थे। उनकी पत्नी उनके सामने बोलने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी।
कुछ ही देर में डॉक्टर आ गए और उन्होंने हर्ष को दवा का इंजेक्शन लगाया। उन्होंने हर्ष के पिता को भी इंजेक्शन लगाने का तरीका सिखाया और उन्हें लगभग 30 इंजेक्शन दिए। उन्होंने हर्ष को हर 12 घंटे में एक इंजेक्शन लगाने का निर्देश दिया। उन्हें हर्ष को जगाकर केवल खाना और पानी देने के लिए कहा गया था। हर्ष के पिता ने डॉक्टर को 10 हजार रुपये दिए। फिर, डॉक्टर ने बेहोश हर्ष को कार में लिटाया और मुंबई में किसी अज्ञात स्थान पर ले गए।

अध्याय 37

शादी में अब 13 दिन बाकी हैं।
अस्पताल के कमरे के अंदर।
छत पर आत्महत्या के प्रयास के बाद पिछले दो दिनों से मलार निजी वार्ड में आराम कर रही थीं। सागर और साई उन्हें अस्पताल लेकर आए और भर्ती कराया। डॉक्टरों ने उनकी जांच की और पाया कि उनका रक्तचाप और हृदय गति जैसे सभी महत्वपूर्ण संकेतक पूरी तरह से बिगड़ गए थे। उनके थायरॉइड का स्तर भी बहुत अधिक था और उन्हें बुखार भी था। उनके पास उन्हें भर्ती करने और सभी आवश्यक परीक्षण करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। सागर ने मलार की मां को बताया कि वह कैसे बेहोश हो गई थी, लेकिन उसने उन्हें यह नहीं बताया था कि उनकी बेटी ने आत्महत्या करने की कोशिश की थी।
इस पूरे समय इधर-उधर भागते हुए सागर को रोने का मन कर रहा था, और जब भी वह रोता, साई उसे गले लगा लेती। वह हमेशा साई से कहता, "अगर मैं एक सेकंड भी देर से पहुँचता तो क्या होता?" साई बस उसे दिलासा देने के लिए मौजूद रहती। उसने हर्ष को फोन करने की कोशिश की, लेकिन उसका फोन बंद था। उस दिन डॉक्टर मीरा मलार को देखने आईं। सागर उन्हें देखकर बहुत खुश हुआ। उसने उन्हें सारी रिपोर्टें दीं, और दोनों साथ में अस्पताल के कमरे में गए। मलार सो रही थी, और उसकी माँ बिस्तर पर उसके बगल में बैठी थी।
डॉ. मीरा ने धीरे-धीरे मलार को जगाया। उन्होंने सकारात्मक और हंसमुख स्वर में कहा, "अरे, प्यारी! उठो।"
मलार को यह समझने में थोड़ा समय लगा कि यह डॉ. मीरा हैं। उसने बस मुस्कुराकर कहा, "मैं ठीक हूँ।"
“लगता है पिछले कुछ दिनों में आपके शरीर में कुछ विटामिन और मिनरल्स की कमी हो गई है। चिंता मत करो। अब आप ठीक लग रही हैं। मैं चाहूंगी कि वे आपको आज ही डिस्चार्ज कर दें।” डॉ. मीरा ने ऐसे कहा जैसे कोई मोटिवेशनल स्पीच दे रही हों। मालार ने बस इतना ही कहा कि उन्हें धन्यवाद। लेकिन उसने सागर से नज़रें नहीं मिलाईं।

डॉ. मीरा ने जवाब दिया, "लेकिन कल आपको मेरे क्लिनिक आना होगा क्योंकि हमें कुछ बातों पर चर्चा करनी है।" मालार ने सिर हिलाया।
सागर और डॉ. मीरा कमरे से बाहर चले गए। डॉ. मीरा की सलाह पर मलार को उसी शाम अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। साई, सागर और उसकी माँ उसे उसके घर ले आए।
आखिरकार, उसने और सागर ने एक-दूसरे की ओर देखा। सागर अपने आँसू नहीं रोक पाया और दोनों ने एक-दूसरे को गले लगा लिया। यह ऐसा आलिंगन था जो बड़ी से बड़ी समस्या को भी सुलझा सकता था। यह ऐसा आलिंगन था जो मुरझाए हुए पौधे को भी फिर से हरा-भरा कर सकता था।
सागर रोते हुए बोला, "मलर, तुम सोच भी नहीं सकती कि अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो मेरा क्या हाल होता। मुझे माफ़ कर दो कि मैंने तुम्हें थप्पड़ मारा।" उन्हें देखकर साई और मलार की माँ भी रोने लगीं। मलार रोते हुए बोली, "मुझे माफ़ कर दो।"
उसने अपनी माँ की ओर देखा और कहा, "मम्मी, उस दिन मैं छत पर कूदकर सब कुछ खत्म करने गई थी। लेकिन सागर ने मुझे बचा लिया। मुझे पता है उसने आपको इसके बारे में नहीं बताया, लेकिन यही सच्चाई है। उसने मुझे बचाया।"
मलार की माँ को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे और वे सागर और ब्रह्मांड की आभारी थीं कि उन्होंने उनकी बेटी की जान बचाई। मलार ने उन्हें गले लगा लिया।
"माँ, मैं वादा करता हूँ कि मैं फिर कभी ऐसी हरकतें नहीं करूँगा। मुझे माफ़ कर दो। मैं एक व्यक्ति के प्रति इतना आसक्त हो गया था कि मुझे एहसास ही नहीं हुआ कि मुझे प्यार करने वाले इतने सारे लोग हैं।"
इस बार साईं ने नम आँखों से कहा, "उस दिन हम तुम्हें उस व्यक्ति के बारे में बताने आए थे। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, उसी व्यक्ति की वजह से हम तुम्हें बचा पाए।" साईं को विश्वास था कि मलार को सच जानने का हक है। मलार ने उनकी ओर देखते हुए कहा, "साईं, कृपया, मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहती। मैं भले ही टूट गई हूँ, लेकिन मैं लड़ूँगी। पर मैं उस व्यक्ति के बारे में कुछ भी नहीं जानना चाहती।"
सागर ने आंखों के इशारे से साई को संकेत दिया। उसने कहा, "ठीक है।"

उस दिन उन सभी ने एक साथ खाना खाया, और सागर ने मलार को हंसाने के लिए कुछ बेहद घटिया चुटकुले सुनाए।
उन्होंने एक भद्दा मजाक करते हुए कहा, "मुझे बताओ, स्टीव जॉब्स अपने माता-पिता को क्या कहकर बुलाते हैं?"
किसी को जवाब नहीं पता था। सागर ने जवाब दिया, "मैं बाबा," और अपनी ही बात पर ज़ोर से हँस पड़ा। साई और मलार ने एक-दूसरे को देखा और फिर से हँस पड़े। मलार को दोबारा मुस्कुराते देख सागर को लगा जैसे उसने सब कुछ पा लिया हो।
शादी में अब 12 दिन बाकी हैं।
डॉ. मीरा के क्लिनिक के अंदर
सागर और मलार डॉ. मीरा के क्लिनिक में दाखिल हुए। मलार ने नीली कुर्ती और सफेद लेगिंग पहनी हुई थी। सागर सफेद शर्ट और नीली जींस में बेहद आकर्षक लग रहा था; दोनों सागर की एवेंजर बाइक पर आए थे।
डॉ. मीरा ने गर्मजोशी भरी मुस्कान के साथ उनका स्वागत किया। सरसों के रंग की कुर्ती और काले डेनिम में वह बेहद खूबसूरत लग रही थीं।
सागर और मलार डॉ. मीरा के सामने वाली सीटों पर बैठ गए। "तो क्या हाल है? मलार, अब कैसी लग रही हो?"
मैं कल से बेहतर महसूस कर रहा हूँ।
"तो, यह सब कैसे हुआ?" डॉ. मीरा ने पूछा।
मलार को वह सवाल सुनकर असहज महसूस हुआ। उसने सागर की ओर देखा। डॉ. मीरा मलार की असहजता समझ गईं और बोलीं, "कोई बात नहीं। अगर आपको असहज लग रहा है तो जवाब देने की कोई ज़रूरत नहीं है।" मलार ने जैसे-तैसे कहा, "पिछले महीने मेरा ब्रेकअप हो गया। उस लड़के ने मुझे छोड़ दिया, मैं उससे बहुत प्यार करती थी, और इसी वजह से मैंने आत्महत्या करने की सोची।" सागर ने उसे दिलासा देने के लिए उसका हाथ पकड़ लिया।
डॉ. मीरा ने गहरी सांस ली और कहा, "ठीक है, अब मेरी बात ध्यान से सुनो।" मालार ने सिर हिलाया।

डॉ. मीरा ने आगे कहा, "मलर, मैंने तुम्हारी रिपोर्ट देखीं, और तुम्हारे लगातार उल्टी करने का कारण सिर्फ अवसाद या थायरॉइड नहीं था। यह इसलिए था क्योंकि तुम गर्भवती हो।"
डॉक्टर मीरा की बातें सुनकर मलार एकदम सुन्न पड़ गई। सागर को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उस खुलासे के बाद मामला पेचीदा लगने लगा। डॉक्टर मीरा ने मलार को थोड़ा पानी दिया और कहा, "देखो, थायरॉइड की समस्या होने पर गर्भधारण करना मुश्किल होता है। लेकिन अब जब तुम गर्भवती हो, तो अगले नौ महीने तुम्हारे लिए चुनौतीपूर्ण होंगे क्योंकि तुम्हारा थायरॉइड स्तर बहुत ज़्यादा है। तुम्हें अभी फैसला लेना होगा। अगर तुम गर्भपात कराना चाहती हो, तो एक हफ्ते के अंदर मुझे बता सकती हो।"
मलार को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। वह एक ही समय में खुश और चिंतित महसूस कर रही थी। ज्यादा सोचे बिना उसने डॉक्टर मीरा से कहा, "मैं गर्भपात करवा लूंगी," मलार ने कहा और जाने के लिए उठ खड़ी हुई।
सागर उसके पीछे गया। उसने उसे आवाज़ दी और कहा, "मलर रुको, मुझे तुमसे कुछ कहना है। कृपया सुनो।"
मलार रुकी और सागर की ओर मुड़ी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसके भीतर एक जीवन पल रहा है। सागर ने कहा, "उस दिन जब मैं छत पर आया था, तो तुम्हें यह बताने आया था कि मुझे हर्ष की मंगेतर खुशबू का फोन आया था।"
सागर ने खुशबू की सारी बातें मलार को बताईं। उसने कहा, "मलर, हर्ष तुम्हारे प्यार के लिए लड़ने को तैयार है। हमें बस उसकी मदद करनी है। वह कमज़ोर है, लेकिन डरपोक बिल्कुल नहीं है।" उसने अपना फोन निकाला और खुशबू को कॉल किया।
"अरे खुशबू! सागर इधर।"
"हाय! क्या तुमने हर्ष से बात की?"
"नहीं। असल में, मैं चाहती हूँ कि आप मलार से बात करें।" मलार ने फोन ले लिया। खुशबू ने कहा, "हाय मलार। हम्पी में तुम्हारे और हर्ष के बीच जो कुछ हुआ, उसके बाद तुम्हें लग सकता है कि हर्ष कायर है या उसने तुम्हें धोखा दिया है, लेकिन नहीं, वह तुमसे बहुत प्यार करता है। पिछले एक महीने में उसने बहुत दुख झेला है। मैं चाहती हूँ कि तुम उससे शादी करो, और मैं यह सुनिश्चित करूँगी। उसका प्यार तुम्हारे लिए सच्चा है।"

खुशबू की बातें सुनकर मलार की आंखों से आंसू बहने लगे। उसने बड़ी मुश्किल से खुशबू को धन्यवाद कहा।

सागर ने कहा, "मलार, जो हुआ वो नहीं होना चाहिए था, लेकिन हर्ष की परवरिश और उसके समाज ने उसे थोड़ा कमजोर और डरा हुआ बना दिया है। लेकिन अब वो कमान संभालने के लिए तैयार है। फिल्मों में और आसपास जहां भी हम देखते हैं, हमेशा एक लड़का ही लड़की के माता-पिता से लड़ता है, लेकिन इस बार लड़की को लड़ना होगा, और हम सब उसके साथ हैं।"

मलार जानती थी कि उसे क्या करना है। कुछ दिन पहले वह मरने को तैयार थी, लेकिन अब उसके पास जीने का एक कारण था। उसके गर्भ में पल रहे बच्चे ने उसे शक्ति दी थी। उसने सागर को गले लगाया और डॉक्टर मीरा के केबिन की ओर दौड़ पड़ी। अंदर पहुँचकर उसने कहा, "मैं बच्चे को रखूँगी।"

डॉ. मीरा ने उसकी ओर देखकर कहा, "गर्भावस्था कठिन होगी। तुम्हें इसका सामना करना होगा। क्या तुम तैयार हो?"

मलार ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैंने आत्महत्या करने जैसी बुरी चीजें भी देखी हैं। इसलिए अब हर दर्द सहने योग्य लगता है। मैं यह कर लूंगी।"

डॉक्टर मीरा के क्लिनिक से सागर और मलार अपनी बिल्डिंग पहुंचे। मलार ने सबसे पहले अपनी मां को बताया कि वह गर्भवती है। उसकी मां चौंक गई, लेकिन चुप रही। कुछ देर बाद उसने अपनी बेटी को गले लगा लिया। मलार ने उसे हर्ष के बारे में सब कुछ बताया और यह भी बताया कि उसकी मंगेतर उनकी मदद करने के लिए तैयार है।

उसकी माँ ने कहा, "बेटा, हालात और भी मुश्किल हो जाएँगे। कुछ लड़ाइयाँ अकेले ही लड़नी पड़ती हैं। मैं तुम्हें दोबारा उन सब से गुज़रते हुए नहीं देख सकती।" मलार ने पूछा, "माँ, क्या आपको मुझ पर भरोसा है?"

"हां, बीटा, हमेशा।"

"तो मुझ पर भरोसा रखिए। अगले 15 दिनों में सब कुछ सामान्य हो जाएगा।"

प्यार और इंसान कितने नाजुक होते हैं! कुछ दिन पहले अपनी जान देने पर तुली हुई एक शख्सियत सच्चाई जानने के बाद पूरी तरह बदल गई।

प्यार का यही असर होता है। या तो यह हमें पूरी तरह से नष्ट कर देता है या फिर हमें जीवन का एक उद्देश्य दे देता है।

***

सागर ने उसी दिन फिर से खुशबू को फोन किया।

“उस दिन के बाद हर्ष से कोई खबर मिली क्या?” उसने पूछा। खुशबू ने जवाब दिया, “नहीं, उस दिन से उसका फोन बंद है। मुझे यकीन है उसके घर में कुछ गड़बड़ है। उसका बाप बहुत ही दुष्ट आदमी है, सागर। एक काम करो। उसके घर जाओ और उसके बारे में पता करो। देखो उसका बाप क्या कहता है।”

"ठीक है। मैं तुम्हें जल्द ही फोन करूंगा," सागर ने खुशबू से कहा।

फोन आने के बाद सागर और साई हर्ष के घर गए। साई नीचे खड़ी रही और सागर ऊपर हर्ष के घर गया। उसने घंटी बजाई। कुछ सेकंड बाद हर्ष के पिता ने दरवाजा खोला। "हेलो बेटा! बहुत दिनों बाद मिले! कैसे हो?"

सागर ने सामान्य व्यवहार करते हुए कहा

"अंकल, क्या हर्ष यहाँ है? उसका फोन बंद है। मैं उससे हमारे स्कूल में होने वाले पुनर्मिलन के बारे में बात करना चाहता था।"

हर्ष के पिता मुस्कुराए। "जी हाँ, बिल्कुल! उसका फोन बंद है। देखो, ये रहा उसका फोन," उनके पिता ने सागर को फोन दिखाया। सागर उसे देखकर हैरान रह गया। उसने पूछा, "चाचा जी, वो कहाँ हैं?" हर्ष के पिता ने सागर की आँखों में सीधे देखते हुए मुस्कुराते हुए कहा, "बेटा, उसकी शादी अगले 10 दिनों में है। दो दिन पहले वो हमारे समाज के महासाहब के साथ गुजरात गया है। वहाँ वो एक हफ्ते तक साधु की तरह रहेगा और उपवास करेगा। वो बचपन से ही बहुत आध्यात्मिक है, इसलिए वो शादी से पहले साधु की तरह रहना चाहता था क्योंकि शादी के बाद ये मुमकिन नहीं होगा।" सागर समझ गया कि उसके पिता जानबूझकर ऐसी कहानी बना रहे हैं जो इतनी सटीक है कि कोई उन पर सवाल नहीं उठा सकता।

"चाचा जी, वो कब वापस आएगा?"

"ओह। वह अपनी शादी से दो दिन पहले सीधे सूरत पहुंचेंगे।"

सागर घर से निकला और उसे एहसास हुआ कि हालात जितने दिख रहे थे उससे कहीं ज़्यादा चुनौतीपूर्ण थे। वह और साई मलार के घर पहुँचे और खुशबू को फोन किया। उसने फोन को लाउडस्पीकर पर रखा और उसे हर्ष के पिता द्वारा सुनाई गई कहानी बताई।
खुशबू ने कहा, "धत् तेरे की! ये आदमी तो सच में शातिर है! इसने हर्ष को कहीं बंद कर रखा होगा, और कोई इसकी कहानी पर सवाल नहीं उठा सकता क्योंकि इन महासाहबों या साधुओं का कोई निश्चित ठिकाना नहीं होता, और इसीलिए कोई इससे पूछ भी नहीं सकता कि हर्ष आखिर है कहाँ। कमीना!" मलार चिंतित थी। सागर और साई भी। यह एक बेबस और लाचार स्थिति थी। सागर ने सुझाव दिया, "क्या मैं उसके पीछे जाऊँ?" खुशबू ने कहा, "नहीं, यह बहुत जोखिम भरा होगा क्योंकि अगर उसे शक हुआ तो हालात और बिगड़ जाएँगे।"
मलार ने पूछा, "खुशबू, क्या तुम कुछ नहीं कर सकतीं? अपने पिता के माध्यम से या किसी और के माध्यम से?"
खुशबू ने कहा, "वह मेरे पिता को भी यही कहानी सुनाएगा, और मेरे पिता हर्ष के इस आध्यात्मिक पहलू की सराहना करेंगे। मलार, हमारा समाज जितना तुम सोचती हो उससे कहीं ज्यादा उलझा हुआ है।"
खुशबू जानती थी कि अब सिर्फ एक ही रास्ता बचा है। उसने गहरी सांस ली और कहा, "हमें वो करना होगा जो नामुमकिन लगता है। आप लोगों को सीधे शादी से हर्ष को लेने आना होगा।"
सागर ने पूछा, "मतलब?"
Khushboo said, "Matlab uthana padega. Pick him up the way it happens in movies."
मलार ने पूछा, "कैसे?"
खुशबू ने कहा, "मेरी बात बहुत ध्यान से सुनो..."

अध्याय 38

शादी से तीन दिन पहले

पिछले नौ दिन कई चीजों की योजना बनाने में बीत गए। ऐसा लग रहा था जैसे सागर, मलार, साई और खुशबू दुनिया को बचाने के एक गुप्त मिशन पर थे।

सबसे ज्यादा घबराई हुई और डरी हुई मलार थी क्योंकि उसके लिए जो कुछ भी मायने रखता था, वह इन दो दिनों में उनके कार्यों पर निर्भर था।

चरणबद्ध तरीके से योजना बनाई गई और अभ्यास किया गया। मलार ने अपना भाषण सौ से अधिक बार दर्पण के सामने अभ्यास किया क्योंकि उसे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देना था। सागर और साई ने संचार, यात्रा व्यवस्था और कुछ कानूनी मामलों का ध्यान रखा। मलार की माँ को भी उनके कर्तव्यों के बारे में निर्देश दिए गए थे।

खुशबू पूरी योजना की सूत्रधार थी, और मलार को लगता था कि वह उसकी कहानी की गुमनाम नायिका है।

उसने उससे यह भी पूछा, "तुम मेरे लिए इतना सब क्यों कर रही हो?" उसने अपने खास अंदाज में जवाब दिया, "इतना सब कुछ होने के बावजूद, मुझे हमेशा जिंदगी में एक हारी हुई सी महसूस होती थी। मेरी समाज ने बहुत सी लड़कियों के साथ ऐसा ही किया है, लेकिन मुझे पहली बार हीरो बनने का मौका मिला है। मैं इसे हाथ से जाने नहीं दे सकती।"

***

सूरत जाने से ठीक पहले सागर ने खुशबू को फोन किया। “हम सब जाने के लिए तैयार हैं।” खुशबू ने कहा, “रुको। आज मत जाओ। हर्ष के पिता ने फोन करके बताया कि वे और उनका परिवार आज नहीं, कल पहुंचेंगे। उन्होंने कारण यह बताया कि हर्ष सीधे सूरत पहुंचेंगे।” सागर ने कहा, “मुझे लगता है कि वे शादी में कम समय बिताना चाहते हैं और इसे जल्दी से खत्म करना चाहते हैं।”

"मुझे भी ऐसा ही लगता है..."

देरी के बाद घबराहट और डर चरम पर पहुंच गया। सागर और साई ने मलार को सोने की सलाह दी क्योंकि तनाव उसके और बच्चे दोनों के लिए अच्छा नहीं था। लेकिन उस रात कोई नहीं सोया। तीनों मलार के बिस्तर पर लेट गए और अपने भविष्य के बारे में बातें करने लगे।
सागर ने पूछा, “बच्चा मुझे क्या कहकर बुलाएगा? मुझे उम्मीद है कि बड़ा होकर वह मुझे अपशब्द नहीं कहेगा।”
मलार मुस्कुराई और बोली, “वह तुम्हें मामा कहकर बुलाएगा। दुनिया की सबसे अच्छी मामा!”
साई ने पूछा, “लेकिन सागर, बच्चा तुम्हें अपशब्द क्यों बोलेगा? मतलब कुछ भी?”
सागर ने समझाया, “मैं तुम्हारे बच्चे को सबसे गंदी गालियाँ सिखाऊँगा। मुझे डर है कि कहीं बच्चा उन्हीं गालियों का इस्तेमाल मुझ पर न कर दे।”
मलार ने कहा, "अगर तुमने मेरे बच्चे के सामने एक भी अपशब्द का प्रयोग किया तो मैं तुम्हारी जमकर पिटाई करूंगी।"
फिर सागर ने साई की तरफ आँख मारी और मलार से पूछा, "वैसे मलार, तुमने और हर्ष ने किस पोजीशन में प्रेम किया था? मुझे नहीं पता था कि कुछ पोजीशन इतनी सफल होती हैं।"
मलार को शर्म आ गई और उसने सागर को लात मार दी। साई और सागर ज़ोर से हँस पड़े।
लंबे समय बाद, हालात उम्मीद भरे नज़र आने लगे।
शादी से दो दिन पहले
अगली सुबह सागर, मलार और साई सागर की एर्टिगा कार में सूरत के लिए रवाना हो गए। मलार गाड़ी चला रही थी। उसने गाड़ी चलाना तब सीखा था जब वह अठारह साल की हुई थी और उसे ड्राइविंग लाइसेंस मिला था।
लेकिन पिछले 10 दिनों में, उसने अपने ड्राइविंग कौशल का अभ्यास किया और उसमें आत्मविश्वास हासिल कर लिया।
वे दोपहर 12 बजे सूरत पहुँचे और बैंक्वेट हॉल और रिज़ॉर्ट के पास स्थित एक अच्छे तीन सितारा होटल में ठहरे, जहाँ शादी और अन्य समारोह होने वाले थे। उन्होंने योजना पर एक बार फिर से विचार किया और खुशबू के फोन का इंतज़ार करने लगे। दोपहर करीब 2 बजे

खुशबू ने फोन किया, “हर्ष और उसका परिवार अभी-अभी पहुँचे हैं।” सागर, साई और मलार बहुत उत्साहित हो गए। आखिर में मलार ने पूछा, “क्या तुमने उसे देखा?”
खुशबू ने कहा, “दुर्भाग्यवश नहीं। कुछ समारोह चल रहे हैं इसलिए मैं घर पर ही फंसी हुई हूँ। लेकिन मेरे पिताजी ने उसे देखा। उन्होंने कहा कि हर्ष बहुत कमजोर और सुस्त लग रहा था। हर्ष के पिताजी ने बताया कि यह व्रत के कारण है। उन्होंने मेरे पिताजी को बताया कि हर्ष आज पूरे दिन अपने कमरे में आराम करेगा और कल सीधे बाहर आएगा क्योंकि उसकी तबीयत ठीक नहीं है।”
“धत् तेरे की! अगर वो कल भी बाहर नहीं आया तो? उसके बाप कोई और कहानी बनाकर उसे शादी वाले दिन ही बाहर ले आएँगे। हमारी योजना बुरी तरह विफल हो जाएगी।” सागर तनाव में था।
“नहीं, चिंता मत करो। कल संगीत है और मेरा डांस परफॉर्मेंस भी है। तो मैं अपने पापा से कहूँगी कि अगर हर्ष मेरा परफॉर्मेंस नहीं देखेगा तो मेरी शादी नहीं होगी। मैं अपने पापा को जानती हूँ। वो मेरी बात सुन लेंगे।” खुशबू ने वाकई कुछ योजना बना रखी थी। सागर, मलार और साई ने खुशबू का आइडिया मान लिया।
उस रात साईं दूल्हे के परिवार के ठहरने की जगह का जायजा लेने के लिए रिसॉर्ट के अंदर गए। रिसॉर्ट एक विशाल परिसर में फैला हुआ था, और भोज कक्ष और सभी कमरों के बीच की दूरी पैदल चलकर सात से आठ मिनट की थी।
साई ने हर्ष के पिता को सब कुछ देखते हुए और कुछ अन्य रिश्तेदारों को इधर-उधर घूमते हुए देखा। उसने बहुत कोशिश की लेकिन हर्ष या उसके पिता के कमरे का पता लगाने में असफल रही।

***

उस रात उन सबने खुशबू से बात की। उसने समझाया, “ठीक है दोस्तों, आखिरकार वो दिन आ ही गया। कल संगीत समारोह रात 8 बजे शुरू होगा और मेरा कार्यक्रम रात 9 बजे है। तो हमारे पास सब कुछ करने के लिए सिर्फ एक घंटा है। हम सब एक-दूसरे से जुड़े रहने के लिए ईयरपीस पहनेंगे जो मैं कल आपके होटल भेज दूंगी। घबराओ मत। चलो शुरू करते हैं।”

सागर ने जोरदार ताली बजाई और कहा, "मुझे लगता है कि आप कैप्टन अमेरिका के बहुत बड़े प्रशंसक हैं।"
खुशबू हंसते हुए बोली, "नहीं, मुझे लगता है कि मैं खुद कैप्टन मार्वल हूं," और फोन काट दिया।
शादी से एक दिन पहले।
रात 8 बजे साई और मलार अपनी एर्टिगा कार में रिसॉर्ट में दाखिल हुईं। उन्होंने कार पार्क की और पारंपरिक चनिया चोली पहनकर बैंक्वेट हॉल में प्रवेश किया। दोनों बिल्कुल परफेक्ट ब्राइड्समेड लग रही थीं। वे सीधे खुशबू के कमरे में गईं, जहां वह तैयार हो रही थीं। मलार ने खुशबू को गले लगाया और एक बार फिर तहे दिल से उनका शुक्रिया अदा किया।
खुशबू ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा, “अब मुझे इतना धन्यवाद मत दो। हो सकता है मैं अपना मन बदल लूँ और तुम्हारे प्यारे बॉयफ्रेंड से शादी कर लूँ, जो तुम्हारे बच्चे का बाप भी है। वैसे, बधाई हो।” मलार मुस्कुराई। साई ने भी खुशबू से अपना परिचय दिया। शिष्टाचार के बाद मलार ने पूछा, “क्या तुम्हें हर्ष के कमरे का नंबर पता चला?”
खुशबू ने कहा, “नहीं, लेकिन उसकी मां के पास उसके कमरे की चाबियां हैं। कल से वही अलग से नाश्ता, दोपहर का खाना और रात का खाना खा रही है। इसलिए यह तो स्वाभाविक है कि यह हर्ष के लिए ही है। मुझे लगता है उन्होंने उसे नशीली दवा दी है ताकि वह हर समय सोता रहे। कमीने कहीं के।”
“तो अब हमें क्या करना चाहिए?” मलार ने पूछा।
“मेरे प्रदर्शन से ठीक 10 मिनट पहले, मैं हर्ष के पिता से उसे फोन करने के लिए कहूँगी, और उसी समय, तुम जाकर हर्ष के पिता के सामने अपना किरदार निभाओगे, और सागर वहीं अपना खेल खेलेगा...” मलार ने गहरी सांस ली और कहा, “ठीक है।”
खुशबू के प्रदर्शन से 10 मिनट पहले
खुशबू हर्ष के पिता के पास गई और गुस्से से बोली, “पापा, हर्ष कहाँ है? मेरा परफॉर्मेंस शुरू होने वाला है। कृपया उसे जल्दी आने के लिए कहिए।” हर्ष ने जवाब दिया, “बेटा, उसकी तबीयत अभी ठीक नहीं है। उसने मुझे बताया कि वह कल के लिए पूरी तरह फिट होना चाहता है, इसलिए नहीं आ सका।”

“नहीं पापा! मैं उसके बिना नाचूंगी नहीं। प्लीज़ उसे अभी बुला लीजिए; नहीं तो मेरी शादी नहीं होगी। मेरे पापा ने भी शायद सुबह आपको इसके बारे में बताया होगा। मैं चाहती हूं कि मेरा पति मेरे साथ रहे। ये कैसी शादी है? दूल्हा कहां है? आप उसे बुला रहे हैं या मैं अपने पापा को बुलाऊं?” खुशबू ने पूरे दबदबे के साथ बात संभाली। हर्ष के पापा को डर था कि वो असल जिंदगी में शादी रोक देगी। आखिरकार उन्होंने हार मान ली, अपना मोबाइल फोन निकाला और हर्ष की मां को फोन किया, “हर्ष को 10 मिनट में नीचे ले आइए। ध्यान रखिए कि वो ठीक-ठाक दिखे।” हर्ष की मां ने कहा, “आप भी मेरे साथ आइए। मैं सब कुछ अकेले नहीं कर सकती।”
"ठीक है, मैं आ रहा हूँ।"
हर्ष के पिता भोजघर से हर्ष के कमरे की ओर चलने लगे, तभी मलार और साईं प्रकट हुए और उनके सामने खड़े हो गए। मलार ने कहा, "नमस्ते, चाचा जी!"

***

सागर एक शानदार काले टक्सीडो में रिसॉर्ट में दाखिल हुआ। उसका काम हर्ष की माँ को ढूँढ़ना और उसके पीछे जाना था। कुछ मशक्कत के बाद उसने उसे ढूँढ़ लिया और उसके पीछे चल दिया। वह कमरे के बाहर पहुँची और दरवाज़ा खोलने ही वाली थी कि सागर ने कहा, “आंटी, रुकिए! अंकल ने मुझे यहाँ यह बताने के लिए भेजा है कि कोई लड़की आई है और वह कह रही है कि हर्ष उससे प्यार करता है और उससे शादी करना चाहती है। आंटी, वह सबके सामने अंकल की बहुत बेइज्ज़ती कर रही है। जल्दी जाइए, आंटी! अंकल को आपकी ज़रूरत है। चिंता मत कीजिए! मुझे चाबी दीजिए। मैं हर्ष को ले आता हूँ।”
सदमे की स्थिति में, हर्ष की मां ने सागर को चाबी दी और अपने पति की प्रतिष्ठा बचाने के लिए भाग गई।

***

हर्ष के पिता ने कहा, “हेलो बेटा! मैं तुम्हें पहचान नहीं पा रहा हूँ?” मलार ने बोलना शुरू किया, “अंकल, मैं वो लड़की हूँ जिससे हर्ष प्यार करता है। उसने शायद मेरे बारे में आपको बताया होगा।”

हर्ष के पिता को गहरा सदमा लगा और वे भयभीत हो गए। उन्होंने कहा, "मुझे ऐसी कोई बात नहीं पता। कृपया मुझे क्षमा करें।"

“अरे रुकिए, अंकल! मुझे कुछ बताना है,” मलार ने कहा। उसी समय, खुशबू ने डीजे को संगीत बंद करने का इशारा किया। मलार ज़ोर से बोली, “अंकल, मैं हर्ष से प्यार करती हूँ, और वह भी मुझसे बहुत प्यार करता है।” खुशबू के पिता समेत भीड़ में मौजूद कई लोग उनकी तरफ देखने लगे।

“लेकिन तुम हमारी शादी रोकने की कोशिश कर रहे हो। पहले तुमने हर्ष को आयुषी से शादी नहीं करने दी क्योंकि उसके पास तुमसे कम पैसे थे, और अब तुम चाहते हो कि वह खुशबू से शादी करे क्योंकि उसके पिता अमीर हैं, और तुम्हें दहेज में बहुत सारा पैसा और सोना मिलेगा। ओह! मुझे माफ़ करना, यह खुशबू को दिया जाएगा, लेकिन शादी के बाद यह तुम्हारे घर आ जाएगा।”

हर्ष के पिता आपा खो बैठे। उन्होंने कहा, "चुप हो जाओ! मैं तुम्हें हमेशा के लिए बर्बाद कर दूंगा।"

मलार हंस पड़ी। “मैं तो पहले ही बहुत परेशान हो चुकी हूँ, अंकल! सुनो, मैं और आपका बेटा घूमने गए थे। उसने आपको बताया नहीं, पर वो मेरे साथ आया था। और हमने शादी से पहले ही वहाँ हनीमून मनाया। और अब क्या हुआ? मैं आपके बेटे के बच्चे की माँ बनने वाली हूँ। बधाई हो, अंकल! आप दादा बनने वाले हैं।”

हर्ष के पिता अपना आपा खो बैठे। वे चिल्लाए, “तुम्हारे जैसी वेश्याएं पैसों के लिए किसी भी हद तक जा सकती हैं।” वे मलार को थप्पड़ मारने के लिए उसकी ओर बढ़े, तभी खुशबू बीच में आकर उन्हें रोकने लगी। मलार चिल्लाई, “अंकल, आप मुझसे इतना डरते हैं कि मुझे पीटकर रोकना चाहते हैं। लेकिन आप मुझे अपने बेटे से शादी करने से नहीं रोक सकते!” यह कहकर मलार और साईं हत्या करने के आत्मविश्वास के साथ भोजघर से निकल गए। खुशबू और उसके पिता समेत सभी लोग हर्ष के पिता के चारों ओर जमा हो गए। सबके मन में सवाल थे, लेकिन हर्ष के पिता के पास कोई जवाब नहीं था। वे बहरे और गूंगे हो गए थे। उन्हें पता था कि वे लड़ाई हार चुके हैं।

***

सागर ने दरवाजा खोला और हर्ष को दयनीय हालत में पाया। वह कुर्सी से बंधा हुआ था और अधमरा था। सागर ने उसे थप्पड़ मारकर जगाने की कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हुआ। उसने हर्ष को खोला और उसे खड़े होने में मदद की। हर्ष का संतुलन बिगड़ रहा था और वह चल नहीं पा रहा था। सागर के सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि वह जानता था कि वह हर्ष को अकेले पार्किंग तक नहीं ले जा पाएगा।

उसने एक बेलबॉय को पास से गुजरते देखा। उसने उसे पुकारा, “भैया, मेरे दोस्त ने कुछ देर पहले बहुत शराब पी ली थी। मुझे उसे डॉक्टर के पास ले जाना है। क्या आप उसे गाड़ी तक ले जाने में मेरी मदद कर सकते हैं?”

बेलबॉय मान गया; वह और सागर हर्ष को कार की ओर ले गए। मलार और साई पहले से ही कार के अंदर इंतजार कर रही थीं। सागर ने हर्ष को पिछली सीट पर बिठाया और बेलबॉय को 500 रुपये टिप के रूप में दिए। वह खुशी से झूमते हुए चला गया। हर्ष को देखते ही मलार को लगा जैसे उसका दिल वापस मिल गया हो। सागर कार में बैठा और बोला, "चलो चलते हैं।" मलार ने रफ्तार बढ़ा दी और वे सूरत को हमेशा के लिए पीछे छोड़ गए। पांच मिनट बाद, बेलबॉय को एहसास हुआ कि गुजरात में शराब प्रतिबंधित है। उसे समझ आ गया कि सागर ने उसे बेवकूफ बनाया है।

अध्याय 39

शादी का दिन

किसी व्यक्ति में ऐसी क्या बात होती है जो हमें इतना आकर्षित करती है कि हम उसके साथ रहने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हो जाते हैं?

सच कहूं तो इसका कोई निश्चित जवाब नहीं है, लेकिन जब मलार से यह सवाल पूछा गया तो उसने कहा, "हर्ष के साथ रहना जीने लायक था क्योंकि उसके बिना मैं मरने को तैयार थी।"

उस दिन खुशबू और हर्ष की शादी रद्द हो गई। मलार के भोजघर से चले जाने के बाद खुशबू रोने लगी। उसने भीड़ से सहानुभूति पाने के लिए रोना शुरू किया। हालांकि उसका अभिनय खराब था, लेकिन उसकी योजना कामयाब हो गई।

खुशबू के पिता क्रोधित हो गए और उन्होंने शादी तोड़ दी। पूरे समाज ने हर्ष के माता-पिता का अपमान किया, और कोई विकल्प न होने के कारण उन्हें उसी रात रिसॉर्ट छोड़ना पड़ा।

लेकिन हर्ष के पिता को उस समय सबसे बड़ा झटका लगा जब हर्ष अपने कमरे में नहीं मिला। वे क्रोधित हो गए और इधर-उधर चीजें फेंकने लगे। उन्होंने अपनी पत्नी को थप्पड़ भी मारा और उस पर अपने बेटे को भागने देने का आरोप लगाया। दूसरी ओर, साई, सागर और मलार की पूरी टीम हर्ष को बेहोशी की हालत में लेकर सुबह करीब 4 बजे मुंबई में दाखिल हुई।

मलार ने कार चलाई, लेकिन सिर्फ गाड़ी चलाना ही नहीं, बल्कि यह उसके लिए दर्द, बंधन और भय की बेड़ियों से मुक्ति और प्रेम की ओर बढ़ने का एक जरिया था।

वे अपनी इमारत पर पहुँचे और सब लोग हर्ष को उठाकर मलार के घर के अंदर ले गए। मलार की माँ उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुई और इस बात से खुश थी कि उन्होंने अपना मिशन सफलतापूर्वक पूरा कर लिया था।

उन्होंने हर्ष को मलार के कमरे में बिस्तर पर लिटाया और उसकी माँ ने सबके लिए गरमागरम चाय बनाई। अब उनकी योजना का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा शुरू हुआ - शादी।

हर्ष सुबह करीब 8 बजे उठा और होश में आया। सबसे पहले उसने मलार को मुस्कुराते हुए देखा। उसे लगा जैसे वह सपना देख रहा हो। हाँ, यह सपना ही था, लेकिन एक ऐसा सपना जो हकीकत में बदल गया था। हर्ष भी मुस्कुराया और मलार खुद को रोक नहीं पाई। वह बिस्तर

पर चढ़ गई और उसे गले लगा लिया। उस आलिंगन ने हर्ष के पिछले 10 दिनों के सारे दर्द को पिघला दिया। फिर सागर ने उसे समझाया कि कैसे वे उसे उसकी अपनी शादी से लेकर आए थे और उससे पिछले 10 दिनों के बारे में पूछा।
हर्ष ने थोड़ा पानी पिया और बोला, "मेरे पिता ने मुझे कुछ इंजेक्शन दिए और मुझे एक अनजान जगह पर ले गए जहाँ उन्होंने मुझे एक कमरे में बांध दिया। वहाँ वे मुझे खाना देते और फिर से इंजेक्शन लगाते, जिससे मैं बेहोश हो जाता।"
उसने अपने दाहिने कूल्हे के ऊपर का सूजा हुआ हिस्सा दिखाया, जहाँ उसे इंजेक्शन लगाया गया था। वह हिस्सा नीला-काला पड़ गया था। उसे देखकर मलार अपने आँसू नहीं रोक पाई। उसने हर्ष को चूमा और कहा, "मुझे माफ़ कर दो।" हर्ष ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा, "मैं तुम्हारे साथ रहने के लिए मर भी सकता हूँ। मुझे अपनी शादी से भागने के लिए धन्यवाद।"
सागर और साईं उस प्यारे पल को साझा करते हुए जोड़े को देखकर हँस पड़े।
हर्ष ने पूछा, "अब क्या?"
सागर ने मलार और आसपास मौजूद सभी लोगों की ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा, "आज तुम्हारी और मलार की शादी हो रही है।"
"क्या? कहाँ?" हर्ष ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उसके सारे सपने एक ही दिन सच हो जाएँगे।
“आज गोरेगांव के आर्य समाज मंदिर में। यही एक जगह है जहाँ आप लोग आज ही कानूनी तौर पर शादी कर सकते हैं।” सागर ने समझाया। “आर्य समाज क्या है?” हर्ष ने यह नाम पहले कभी नहीं सुना था। “अरे भाई! मैं आपको सब समझा देता हूँ। पहले आप तैयार हो जाइए। हमें जल्दी निकलना है।”
"लेकिन मैं क्या पहनूंगा?" हर्ष ने पूछा।
"देखो ये! हमने ये सुनिश्चित किया है कि हमारा दूल्हा शानदार दिखे," साई ने कहा और उसे वो शेरवानी दिखाई जो उन्होंने अपनी योजना के आखिरी 10 दिनों में खरीदी थी। उन्होंने मलार के लिए एक बहुत भारी मैरून चनिया चोली भी खरीदी थी।
हर्ष, सागर, साई, मलार और उसकी मां शादी के लिए तैयार हो गए।

सभी लोग कार में बैठ गए। मलार गाड़ी चला रही थी और हर्ष उसके बगल में बैठा था। मलार के बगल में बैठकर वह सुरक्षित महसूस कर रहा था। गोरेगांव जाते समय सागर ने हर्ष को समझाया कि उनके लिए उसी दिन शादी करना बहुत ज़रूरी है, इससे पहले कि उसके पिता उसके लिए और ज़्यादा मुश्किलें खड़ी कर दें।

कुछ खोजबीन के बाद सागर को पता चला कि आर्य समाज विवाह के ज़रिए उसी दिन कानूनी विवाह प्रमाण पत्र प्राप्त करने का सबसे तेज़ तरीका है। अगर लड़का 21 साल से ऊपर और लड़की 18 साल से ऊपर की हो, तो आर्य समाज कोई सवाल नहीं पूछता और सीधे विवाह की प्रक्रिया शुरू कर देता है। सागर ने यह भी बताया कि उसने विवाह के लिए पंडित भी बुक कर लिए थे।

हर्ष यह सोचकर हँस पड़ा कि एक तरफ उसका समाज है जहाँ प्रेम करने वालों को शादी करने की अनुमति नहीं है, और दूसरी तरफ आर्य समाज है जो अलग-अलग धर्मों के लोगों को बिना कोई सवाल पूछे शादी करने में मदद करता है।

कुछ ही देर में वे सभी गोरेगांव स्थित आर्य समाज मंदिर पहुँच गए। हर्ष और मलार ने हाथ पकड़कर मंदिर में प्रवेश किया। साई, सागर और मलार की माँ उनके पीछे-पीछे गए।

साईं अपनी दक्षिण भारतीय सफेद रेशमी साड़ी में बेहद खूबसूरत लग रही थीं। सागर अपने गहरे हरे कुर्ते और क्रीम रंग की दक्षिण भारतीय लुंगी में प्यारा लग रहा था; साईं ने उसे लुंगी पहनाने के बारे में सोचा था। मलार की माँ अपनी लाल साड़ी में सुरुचिपूर्ण और भव्य दिख रही थीं।

पंडित जी ने सभी रस्मों की शुरुआत की। सबसे पहले, मलार और हर्ष ने वरमालाओं का आदान-प्रदान किया, फिर उन्होंने मलार की मां द्वारा लाई गई अंगूठियों का आदान-प्रदान किया।

इसके बाद वे पवित्र अग्नि के सामने बैठ गए। पंडित जी ने मंत्रों का जाप शुरू किया। मलार की मां ने हर्ष को मंगलसूत्र दिया।

मलार की आंखों में देखते हुए, जो अब आंसुओं से भरी हुई थीं, हर्ष ने मंगलसूत्र मलार के गले में बांध दिया।

अंततः उन दोनों को एक-दूसरे में अपना संसार मिल गया था। सात फेरे शुरू हुए और उस क्षण, समय और स्थान का अस्तित्व समाप्त हो गया। दो व्यक्ति नहीं थे; सब कुछ एक हो गया था।

ऐसा लगा मानो पूरे ब्रह्मांड के सारे प्रेमी हमेशा के लिए एक हो गए हों। ऐसा लगा मानो रेगिस्तान में आखिरकार बारिश हो गई हो। ऐसा लगा मानो सूरज की रोशनी आखिरकार चांद पर पड़ गई हो। ऐसा लगा मानो जीवन और प्रेम का मिलन हो गया हो।

मलार और हर्ष की अब आधिकारिक तौर पर शादी हो चुकी थी। सागर ने उनकी ढेर सारी तस्वीरें खींचीं। एक तस्वीर में मलार ने हर्ष के गाल पर चुंबन किया और धीरे से उसके कान में कहा, "मैं तुमसे प्यार करने के लिए बेताब हूँ।" हर्ष शरमा गया।

वहां से वे चारों ओबेरॉय मॉल के अंदर स्थित महाराजा भोग में दोपहर का भोजन करने गए।

***

उस शाम, मलार हर्ष को उस जगह ले गई जहाँ से उनकी कहानी शुरू हुई थी।

आकाश नारंगी रंग का हो गया था। सूरज डूबने ही वाला था और सभी पक्षी चहचहा रहे थे। मलार और हर्ष के लिए समय थम सा गया था। उन्हें यकीन नहीं हो रहा था कि वे आखिरकार पति-पत्नी बन गए हैं। नामुमकिन अब हकीकत बन गया था। वे पानी की टंकी पर एक-दूसरे के बगल में हाथ पकड़े बैठे थे। मलार ने आकाश की ओर देखते हुए कहा, "हर्ष, क्या तुम्हें पता है कि मैं इस छत से कूदकर अपनी जान देने वाली थी, लेकिन सागर ने मुझे बचा लिया। मैं कितनी मूर्ख थी! मुझे कभी एहसास ही नहीं हुआ कि तुम्हें मेरी मदद और सहारे की ज़रूरत थी।" हर्ष ने उसकी आँखों में देखा और मलार को गले लगा लिया। उसने कहा, "हम दोनों ने बहुत कुछ सहा है, लेकिन अब जो हमारे पास है, वह इस दुनिया के सारे दर्द से कहीं बड़ा है। मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मेरे जीवन में वापस आने और मुझे सारे दर्द से उबरने में मदद करने के लिए धन्यवाद।"

मलार मुस्कुराई, हर्ष के चेहरे के करीब आई, उसे जोर से चूमा और बोली, "तुम पिता बनने वाले हो।"

सूरज मुस्कुराते हुए डूब गया था।

उपसंहार

पाँच महीने बाद
हर्ष और मलार अपने दस दिन के बेबीमून के लिए बाली रवाना हो गए। तब तक मलार का बेबी बंप साफ दिखने लगा था। डॉ. मीरा ने आखिरकार उन्हें यात्रा की अनुमति दे दी। इन पांच महीनों में मलार ने अपनी नौकरी पर वापसी कर ली।
उन्होंने और हर्ष ने अपने बेडरूम का भी नवीनीकरण कराया। जीवनसाथी के साथ घर बसाना सबसे बेहतरीन अनुभव होता है। शादी के बाद हर्ष एक महीने तक बेरोजगार रहे। वे अपने व्यवसाय में वापस नहीं जा सके क्योंकि यह उनके पिता से जुड़ा हुआ था।
मलर ने सुझाव दिया कि वह एक जिम में ट्रेनर के रूप में काम करे क्योंकि उसे व्यायाम और वर्कआउट का अच्छा ज्ञान था।
कुछ इंटरव्यू के बाद हर्ष को एक पर्सनल ट्रेनर की नौकरी मिल गई।
वह जिम जहां वह और मालार कसरत किया करते थे।
सुरक्षा कारणों से, हर्ष ने अपने पिता के खिलाफ पास के पुलिस स्टेशन में एफ.आई.आर. भी दर्ज कराई, क्योंकि उनके पिता ने उसे 10 दिनों तक फंसाकर रखा था और उसे मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया था।
कई बार हर्ष का दिल टूट जाता था क्योंकि उसके अपने माता-पिता ने उसके साथ खिलौने जैसा व्यवहार किया था। ऐसे समय में, मलार और उसकी माँ ने उसे प्यार दिया और उसे घर जैसा महसूस कराया।
हर्ष के माता-पिता अपने समाज में हुए अपमान को सहन नहीं कर सके। वे दोनों मुंबई छोड़कर बिना किसी को बताए गुजरात चले गए।
दूसरी ओर, कहानी की नायिका खुशबू, जिसने खुद अपनी मेहनत से सफलता हासिल की, अपनी शादी रद्द होने के बाद बेहद खुश थी। कुछ दिनों तक उसने अपने पिता के सामने उदासी का नाटक किया। फिर जब उसके पिता ने उससे पूछा कि वह क्या चाहती है, तो उसने उनका क्रेडिट कार्ड लिया और अकेले ही दुनिया घूमने निकल पड़ी। उसने अपना

इंस्टाग्राम अकाउंट भी शुरू किया, जहाँ वह ट्रैवल और लाइफस्टाइल इन्फ्लुएंसर के रूप में काम करती थी। आखिरकार उसे अपनी मनचाही जिंदगी जीने का मौका मिला।

***

एक आम शुक्रवार को साई और सागर मलाड (पूर्वी मलाड) के एक छोटे से बगीचे में मिले। वे काफी समय से मिलना चाहते थे, लेकिन साई अपनी हम्पी यात्राओं में व्यस्त थीं। आखिरकार, वह बगीचे में टहलने आईं। साई ने पूछा, "तो, क्या बात है?"

सागर ने जवाब दिया, "कुछ खास नहीं। आप बताइए, आपकी पिछली हम्पी यात्रा कैसी रही?" वह थोड़ा घबराया हुआ था।

साई ने जवाब दिया, "अच्छा था। आप कुछ कहना चाहते थे? आपने मुझे मैसेज किया था कि आपको किसी ज़रूरी बात पर चर्चा करनी है।"

"क्या हम बैठकर बात कर सकते हैं?" सागर ने पूछा।

"हाँ यकीनन।"

वे दोनों बगीचे में खाली बेंच पर बैठ गए। शाम का समय था और कई लोग इधर-उधर घूम रहे थे। सागर ने हिम्मत जुटाई और बोलना शुरू किया।

"साई, क्या तुम्हें याद है कि हम्पी में जब हम मेरे कमरे में थे, तब तुमने मुझसे पूछा था कि क्या मैंने कभी सच्चा प्यार किया है? उस समय मेरे पास कोई जवाब नहीं था। लेकिन समय के साथ, यह सवाल मेरे मन में बना रहा, और पिछले पांच महीनों में, मुझे एहसास हुआ कि मैं वास्तव में किसी को पसंद करती हूँ।"

"वाह! वो भाग्यशाली लड़की कौन है?" साई ने खुशी से पूछा। "तुम हो," सागर अब तक बहुत घबरा चुका था।

"हाहा, ये सुनकर मुझे बहुत हैरानी हुई," साई हँसते हुए बोला।

"साई, मुझे नहीं पता कि मैं तुम्हें पसंद करता हूँ या प्यार करता हूँ, लेकिन जो भी हो, जब मैं तुम्हारे साथ होता हूँ, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। हमारी सारी सैर, मूवी नाइट्स और हम्पी की यात्रा मेरे लिए बहुत मायने रखती हैं। तो हाँ, मैं तुम्हें पसंद करता हूँ।" सागर के लहजे से साई समझ गया कि वह जो कह रहा है, वह बिल्कुल सच है। "सागर, सच कहूँ तो, मैंने कभी इस बारे में सोचा ही नहीं। मुझे तुम्हारे साथ समय बिताना अच्छा लगता है, और तुम मेरे सबसे

अच्छे दोस्त हो। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं तुम्हें फ्रेंड-ज़ोन कर रहा हूँ। बस यह सुनकर मुझे झटका लगा।"
सागर चुप हो गया। उसने कहा, "ठीक है।"
साई नहीं चाहती थी कि सागर को बुरा या दोषी महसूस हो। सागर जब उसके दिल की बात कहता था तो साई को बहुत अच्छा लगता था। उसने सागर को समझाया, "देखो सागर, प्यार और रिश्ता दो अलग-अलग चीजें हैं। अगर हम रिश्ते में नहीं आते, तो इसका मतलब यह नहीं कि तुम मुझसे प्यार करना छोड़ दोगे। देखो, तुम्हारे अपने लक्ष्य हैं और मैं अपनी ट्रैवल कंपनी पर काम कर रही हूँ। अगर हम रिश्ते में आ जाते हैं और किसी वजह से मैं तुम्हें समय नहीं दे पाती, तो तुम्हें बुरा लगेगा और इससे हमारे बीच झगड़े होंगे। इसलिए बेहतर यही है कि हम दोस्ती को ही अपना रिश्ता बनाए रखें और प्यार को हावी होने दें।"
सागर को साई की बात समझ नहीं आई। उसने पूछा, "तो तुम्हारा मतलब यह है कि मैं बिना किसी रिश्ते में रहे भी तुमसे प्यार कर सकता हूँ?"
"हाँ, इसमें क्या बुराई है? चीजें जैसी चल रही हैं वैसी ही चलती रहेंगी। हम मिलेंगे, खाना खाएंगे और फिल्में देखेंगे। लेकिन हम बॉयफ्रेंड और गर्लफ्रेंड के नाम पर खुद को बांधेंगे नहीं।"
सागर ने कहा, "ठीक है साई, समझने के लिए धन्यवाद।" दोनों चुप हो गए। थोड़ी देर बाद सागर को कुछ याद आया। उसने अपना बैग खोला और उसमें से दो डायरी निकालीं। "साई, मुझे तुम्हारी मदद चाहिए। मैंने इस डायरी में एक कहानी लिखी है। क्या तुम इसे पढ़कर बता सकते हो कि यह कैसी है?"
"वाह! मैं इन्हें ज़रूर पढ़ूँगी, सागर। बहुत बढ़िया! वैसे, ये किस बारे में हैं?" साई बहुत खुश हुई। उसने तुरंत सागर के हाथ से दोनों डायरियाँ ले लीं।
"जब तुम इन्हें पढ़ोगी, तब तुम्हें पता चल जाएगा।" अगले कुछ दिनों में जब साई ने डायरियाँ पढ़कर खत्म कीं, तो उसे एहसास हुआ कि यह सागर, मलार, हर्ष और उसकी अपनी कहानी थी।
समाप्त।

मेरे सभी पाठकों से एक छोटी सी गुजारिश है...!!!
सबसे पहले, अगर आप इसे पढ़ रहे हैं तो मुझे पूरा यकीन है कि आप सभी ने किताब पढ़ ली है और यह मेरे लिए बहुत मायने रखता है।
लेकिन मुझे आप सभी से बस एक छोटी सी चीज चाहिए।
सबसे पहले, अगर आप सोशल मीडिया पर मुझसे नहीं जुड़े हैं तो कृपया इंस्टाग्राम, फेसबुक और टेलीग्राम पर जुड़ें क्योंकि मैं आपसे बात करना चाहता हूं और यह भी जानना चाहता हूं कि आप लोग किताब के बारे में क्या सोचते हैं।
दूसरा, कृपया इस किताब के बारे में अपनी राय हर जगह साझा करें। मेरी वेबसाइट www.wearethereforeachother.com पर जाएं और अपनी राय साझा करें। अमेज़न पर जाएं और अपनी राय साझा करें। साथ ही, मुझे इंस्टाग्राम पर @sagarkibaatein टैग करें और वहां अपनी राय साझा करें। कृपया अपने सभी दोस्तों को इस किताब के बारे में बताएं और सभी को इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें क्योंकि आप ही मेरी असली ताकत हैं। आपके सहयोग से ही यह किताब अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच सकती है और यही हर कलाकार चाहता है। संक्षेप में, बस इस किताब के बारे में सबको बताएं। शोर मचा दो अपनी किताब का, क्योंकि यह किताब अब सिर्फ मेरी नहीं, आपकी भी है।
अंत में, sagarchudesara@gmail.com पर मुझे व्यक्तिगत रूप से ईमेल करें। कहानी, पात्रों और अंत के बारे में आपके क्या विचार हैं, कृपया मुझे बताएं...?
आपको कौन सा किरदार सबसे ज्यादा पसंद आया...?
और अंत में, आपकी वास्तविक प्रतिक्रिया।
मैं व्यक्तिगत रूप से हर किसी को जवाब दूंगा या कॉल करूंगा। यह मेरा वादा है।
अगली किताब तक,
पढ़ते रहिए, प्यार करते रहिए, संघर्ष करते रहिए।
भवदीय,
Sagar Chudesara

Can Malar Become the Hero of Her Love Story..?

Four People, Their Ultimate Fight for LOVE..!

Sagar and Malar are Childhood Friends who grew up together in the Same Building of Malad East, Mumbai. They share a deep and honest Relationship where there is no Judgement and No one knows them better than EACH OTHER.

Their Life is going good when Malar faces the Biggest and Life Threatening Problem of her Life which could destroy her Self Existence forever. Sagar Supports Malar in such tough times and as they Tackle Life together, Their Circle of Friendship is Widened with the Entry of Two New People - Harsh and Sai.

The Four Embark on a Breathtaking Road Trip to Hampi, Karnataka to find answers to their Problems and also to find Love. This Journey changes the dynamics of their Relationship,Challenges their Love and Friendship, Questions their Choices and Will Change their Life Forever. Will they Survive the Storm..?

"We are There for Each other" is a Raw, Honest and Inspiring Love Story of Human Emotions, Healing, Fighting against Religion, Travel and also about being there for each other in the Toughest of Situations, No Matter What..! The Story will leave you fulfilled when you finish reading the last page.

Paper Publication
Publishing Dreams...
ISBN 978-93-90465-01-9
9 789390 465019
₹390
www.paperpublication.in